गांधी-साहित्य—१०

गांधी-विचार-रत्न

—विविध विषयों पर गांधीजी के चुने हुए विचारों का संग्रह—

संकलनकर्त्ता
माईदयाल जैन

१९६३

सस्ता साहित्य मंडल, प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद की सहमति से

पहली बार : १९६३
मूल्य
साढ़े तीन रुपये

मुद्रक
बी० पी० ठाकुर,
लीडर प्रेस,
इलाहाबाद

प्रकाशकीय

विविध विषयों पर गांधीजी के चुने हुए विचारों का एक संग्रह हमने 'गांधी-विचार-दोहन' के नाम से कई साल पहले निकाला था। वह पाठकों को बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ और अब भी हो रहा है। हमारी इच्छा थी कि एक और संग्रह कराया जाय, जिसमें गांधीजी के अद्यतन विचार आ जायं। प्रस्तुत पुस्तक उसी दिशा में प्रयत्न है।

गांधीजी ने इतने विषयों पर विचार प्रकट किये हैं और इतना लिखा है कि उस सबका अध्ययन करके उसमें से चुने हुए सुभाषितों को छांटना आसान काम नहीं है। फिर उनका सारा साहित्य विचारों की इतनी बड़ी खान है कि उन सबको एक पुस्तक में देना असंभव है।

इन कठिनाइयों के होते हुए भी यह संग्रह तैयार किया गया है। हम जानते हैं, इसमें बहुत-सी कमियां हैं और बहुत-सी महत्त्वपूर्ण सामग्री छूट गई है; फिर भी हमें विश्वास है कि जो भी इसे पढ़ेगा, उसे लाभ होगा। संग्रह के सभी विचार पठनीय तो हैं ही, मननीय भी हैं।

पाठकों की सुविधा की दृष्टि से विषयों में बांटकर सामग्री का वर्गीकरण कर दिया गया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि सभी वर्गों और विश्वासों के पाठक इस पुस्तक का लाभ लेंगे।

—मंत्री

अनुक्रम

खंड १ : दर्शन

१. धर्म ९
२. ईश्वर १५
३. आत्मा २४
४. आत्म-शुद्धि २६
५. अंतरंग की आवाज २८
६. आन्तरिक प्रकाश २९
७. सिद्धांत २९
८. भावना ३०
९. प्रकृति ३१
१०. श्रद्धा ३२
११. साधन और साध्य ३५
१२. सम्यक विचार ३६
१३. कर्मयोग ३८
१४. अनासक्ति ३९
१५. जीवन और मृत्यु ४०
१६. सुख-दुख ४६
१७. पाप-पुण्य ४८
१८. प्रारब्ध और पुरुषार्थ ४९
१९. आदर्श ५०
२०. मोक्ष ५१

खंड २ : धर्म-मार्ग

१. व्रत ५३
२. सत्य ५५
३. अहिंसा ६१
४. ब्रह्मचर्य ७०
५. अस्तेय ७२
६. अपरिग्रह ७४
७. अभय ७५
८. अस्वाद ७७
९. हृदय-शुद्धि ७७
१०. विकार पर विजय ७८
११. संयम ७९
१२. मन पर नियंत्रण ८१
१३. त्याग ८२
१४. तपस्या ८४
१५. क्षमा ८४
१६. दया ८५
१७. परोपकार ८६
१८. सेवा ८६
१९. यज्ञ ९१
२०. सर्व-धर्म-समभाव ९२
२१. राम-नाम ९४
२२. प्रार्थना ९५
२३. भक्त और भक्ति १०३
२४. गुण-पूजा १०५
२५. मूर्ति-पूजा १०६
२६. हिंदू धर्म १०७

खंड ३ : चरित्र

१. नीति और नैतिकता १०८
२. स्वभाव १०८
३. आचरण १०९
४. प्रेम और मित्रता ११७
५. उदारता और सहिष्णुता १२१

६. धैर्य १२२
७. विश्वास १२३
८. कायरता-निर्भीकता १२४
९. भूल मानना १२५
१०. ईमानदारी और प्रतिज्ञा-पालन १२९
११. अनुशासन १३०
१२. गुण-अवगुण १३०
१३. नम्रता और विनय-शीलता १३२
१४. मौन १३३
१५. एकता और स्वावलंबन १३४
१६. प्रायश्चित्त १३५
१७. द्वेष १३५
१८. क्रोध १३६
१९. अहंकार १३७
२०. गुप्तता १३८
२१. बदला १३९
२२. अतिशयोक्ति १३९
२३. कष्ट-सहिष्णुता १४०
२४. प्रयत्न—परिश्रम १४१
२५. बहादुरी : शहादत १४२
२६. कर्तव्य और अधिकार १४३
२७. वर्तमान का महत्त्व १४६
२८. विकास-प्रगति १४६

खंड ४ : समाज

१. व्यक्ति १४८
२. मानव-जाति १४८
३. समाज १४९
४. स्त्री-पुरुष १५०
५. वर्ण-व्यवस्था १५५
६. विवाह १५६
७. माता-पिता १५८
८. संतान १५९
९. पड़ोसी १५९
१०. मानव-समानता १६०
११. अस्पृश्यता-निवारण १६१
१२. सुधार १६५
१३. संस्थाएं १६६

खंड ५ : ज्ञान और संस्कृति

१. ज्ञान १७०
२. बुद्धि १७१
३. धर्म-ग्रंथ १७२
४. शिक्षा १७४
५. भाषा और सुलेख १७९
६. शिक्षक १७९
७. विद्यार्थी १८१
८. समाचार-पत्र १८२
९. कवि और कला १८४
१०. संस्कृति १८७

खंड ६ : राजनीति

१. राजनीति और धर्म १८९
२. राष्ट्र और राष्ट्रीयता १९०
३. स्वतंत्रता १९२
४. स्वराज्य १९५
५. प्रजातंत्र १९७
६. लोकमत २००
७. समालोचना २०१
८. समाजवाद २०३
९. धर्म-निरपेक्ष राज्य २०३
१०. शासन और शासक २०४
११. अपराध और अपराधी २०५
१२. न्याय २०७
१३. जेल २०८
१४. बहुसंख्यक और अल्प-संख्यक २१०

१५. भारत २११

खंड ७ : अर्थशास्त्र

१. अर्थशास्त्र, २१४
२. आर्थिक समानता २१५
३. गांव और किसान २१५
४. गो-पालन २१६
५. श्रम २१७
६. मजदूर २२१
७. पूंजी और पूंजीपति २२३
८. यंत्र २२४
९. हड़ताल २२५
१०. स्वदेशी २२५
११. चरखा और खादी २२७
१२. दरिद्रनारायण २२८
१३. ट्रस्टीशिप (संरक्षकता) २३०
१४. आजीविका-बेरोजगारी २३२

खंड ८ : शरीर और स्वास्थ्य

१. शरीर २३३
२. स्वास्थ्य २३३
३. आहार २३४
४. शुद्धता—स्वच्छता २३५
५. नींद २३६
६. मदिरापान और दुर्व्यसन २३७

खंड ९ : सत्याग्रह

१. सत्याग्रह २४०
२. असहयोग २४५
३. सविनय कानून-भंग २४६
४. बहिष्कार २४७
५. धरना २४८
६. उपवास २४९

खंड १० : शांति और सर्वोदय

१. युद्ध और शांति २५४
२. विश्वबंधुत्व २५६
३. सर्वोदय २५७

खंड ११ : विविध

१. इच्छा-स्वातंत्र्य २६१
२. ध्यान २६१
३. आशा-निराशा २६१
३. सहृदयता २६१
५. निष्कपटता २६१
६. निःस्वार्थता २६२
७. संतति-निरोध २६२
८. तलाक २६२
९. दहेज २६३
१०. परदा २६३
११. विधवा और वैधव्य २६३
१२. गुरु २६४
१३. प्रांतीयता २६४
१४. पंच और पंचायत २६४
१५. राम-राज्य २६५
१६. उद्योगवाद २६५
१७. कर २६६
१८. नियंत्रण (कंट्रोल) २६६
१९. आवश्यकताएँ २६६
२०. शोषण २६७
२१. रोग और रोगी २६७
२२. वेश्यावृत्ति २६७

संदर्भ ग्रंथ-सूची २६९

खंड १ : दर्शन

१—धर्म

१ विधाता ने मनुष्य का लक्ष्य पुरानी आदतों पर विजय पाना, अपनी बुराइयों पर काबू रखना और भलाई को फिर से उसके उचित स्थान पर स्थापित करना बनाया है। अगर धर्म हमें यह विजय प्राप्त करना नहीं सिखाता हो तो वह कुछ भी नहीं सिखाता।

स० ई०, ५२

२. जो लोग यह कहते हैं कि धर्म का राजनीति के साथ कोई संबंध नहीं है, वे नहीं जानते कि धर्म का अर्थ क्या है।

स० ई०, ५

३. सब धर्मों के एक ही स्थान पर पहुंचने के अलग-अलग रास्ते हैं। अगर हम एक ही लक्ष्य पर पहुंच जाते हैं, तो अलग-अलग रास्ते अपनाने में क्या हर्ज है? वास्तव में जितने मनुष्य है, उतने ही धर्म है।

स० ई०, ५७

४. मैं ऐसे किसी समय की कल्पना नहीं कर सकता जब पृथ्वी पर व्यवहार में एक ही धर्म होगा।

स० ई०, ५८

५. तात्कालिक आवश्यकता यह नही है कि एक धर्म हो, बल्कि यह है कि विभिन्न धर्मों के अनुयायियों में परस्पर आदर और सहिष्णुता हो।

स० ई०, ५८

६. धर्मों की आत्मा एक है। परंतु वह अनेक रूपों में प्रगट हुई है। ये रूप अनंत काल तक रहेंगे।

स० ई०, ५८

७. सब धर्म ईश्वर की देन हैं, परंतु उनमें मानव की अपूर्णता की

पुट है, क्योंकि वे मनुष्य की बुद्धि और भाषा के माध्यम से गुजरते हैं।

स० ई०, ६१

८. धर्म का संचार ज्ञान, मत, पंथों के बीच की दीवारों को हटाकर सहिष्णता उत्पन्न करता है।

स० ई०, ६२

९. धर्म की शिक्षा लौकिक विषयों की तरह नहीं दी जाती। वह हृदय की भाषा में दी जाती है।

स० ई०, ६५

१०. आजकल और बातों की तरह धर्म-परिवर्तन ने भी व्यापार का रूप ले लिया है।

स० ई०, ६६

११. धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन की सुगंध गुलाब के फूल से अधिक मधुर और सूक्ष्म होती है।

स० ई०, ६८

१२. जो सत्य पर भी शंका करता है उसके लिए धर्मशास्त्रों का कोई धर्म नहीं है। उससे कोई बहस नहीं कर सकता।

स० ई०, ९

१३. यदि एक आदमी को आध्यात्मिक लाभ होता है तो उसके साथ-साथ सारी दुनिया को भी होता है; और अगर एक मनुष्य गिरता है तो उस हद तक समस्त जगत का भी पतन होता है।

स० इ०, १२९

१४. जो समाज या समूह अपने धर्म के अस्तित्व के लिए राज्य पर थोड़ा या पूरा आधार रखता है, उसका कोई धर्म नहीं होता; या यों कहें कि उसके धर्म को सच्चे अर्थ में धर्म नहीं कहा जा सकता।

स० ई०, १३९

१५. धर्म अत्यंत व्यक्तिगत वस्तु है।

सर्वो०, ३१

१६. मेरा धर्म कैदखाने का धर्म नहीं है।

सर्वो०, १७०

१७. जिस समय जैसा हृदय कहे, वही उस समय का धर्म है ।

बा० प०, २६६

१८. मैं यह मानता हूं कि अपने नाम के योग्य धर्म आचार तथा नैतिकता के मूल सिद्धांतों से विरोधी नहीं होना चाहिए ।

रि० अ०, १८

१९. जाति का धर्म से कोई संबंध नहीं है ।

रि० अ०, ४०

२०. इस युक्तियुग में हर धर्म के हर सिद्धांत को युक्ति और विश्व-मान्यता की कसौटी पर कसा जाना होता है ।

सि० गां०, २७

२१. अगर किसी आदमी में जीता-जागता धर्म है तो उसकी सुगंध गुलाब के फूल की तरह अपने-आप फैलती है ।

मे० स० भा०, २७५

२२. धर्म वह है, जिसे सब धारण करते हैं, यानी सब हिस्से में, सब समय में, जीवन में ओतप्रोत है ।

बा० आ०, १५५

२३. धर्म कुछ जीवन से भिन्न नहीं है; जीवन ही धर्म माना जाय । बगैर धर्म का जीवन मनुष्य-जीवन नहीं है, वह पशु-जीवन है ।

बा० आ०, १५७

२४. धर्म कुछ संकुचित संप्रदाय नहीं है, केवल बाह्याचार नहीं है । धर्म है—ईश्वरत्व के विषय में हमारी अचल श्रद्धा, पुनर्जन्म में अचल श्रद्धा, सत्य और अहिंसा में हमारी संपूर्ण श्रद्धा ।

गां० वा०, १२५

२५. मेरा ऐसा विश्वास है कि दुनिया के समस्त धर्म लगभग सच्चे हैं । 'लगभग' मैं इसलिए कहता हूं कि मेरा ऐसा विश्वास है कि मनुष्य का हाथ जिस किसी वस्तु को छूता है, वह अपूर्ण हो जाती है; इसका कारण यह सत्य है कि मनुष्य स्वयं अपूर्ण है ।

मो० मा०, ३४

२६. जिस प्रकार हमने ईश्वर का साक्षात्कार नहीं किया है, उसी प्रकार

हमने धर्म का भी उसके पूर्ण रूप में साक्षात्कार नहीं किया है।

मो० मा०, ३५

२७. जो धर्म व्यावहारिक बातों का विचार नहीं करता और उसकी समस्याओं का हल करने में सहायक नहीं बनता, वह धर्म नहीं है।

मो० मा०, ३७

२८. धर्म दूसरी सब प्रवृत्तियों को नैतिक आधार प्रदान करता है, जो अन्य किसी प्रकार से उन्हें प्राप्त नहीं होता। और जिन मानव-प्रवृत्तियों के पीछे कोई नैतिक आधार नहीं होता, वे जीवन को निरर्थक शोरगुल और तीव्र भाग-दौड़ की भूलभुलैया बना देती हैं।

मो० मा०, ३७

२९. धार्मिक सुधारक लोगों के मन पर आधिपत्य जमाने की कोशिश नहीं करता; वह तो लोगों को जाग्रत करता है और उन्हें विचार करने तथा काम करने में लगा देता है।

म० डा० २, ८६

३०. यह कितने आनंद की बात होगी कि लोग यह समझ जायं कि धर्म बाहरी कर्मकांड में नहीं है, बल्कि मनुष्य की ऊंची-से-ऊंची वृत्तियों का अधिक-से-अधिक अनुसरण करने में है।

म० डा० २, २३३

३१. जो अहिंसा और सत्य की कसौटी पर खरा उतरे, वही धर्म है।

म० डा० २, २६८

३२. हर व्यक्ति को जो चीज हृदयंगम हो गई है, वह उसके लिए धर्म है। धर्म बुद्धिगम्य वस्तु नहीं, हृदयगम्य है। इसलिए धर्म मूर्ख लोगों के लिए भी है।

म० डा० २, २३३

३३. धर्म के मामले में—मैं तो कहता हूं किसी भी मामले में—जबरदस्ती नहीं की जा सकती।

म० डा० २, २८९

३४. धार्मिक भावना होने की सच्ची कसौटी यह है कि मनुष्य ऐसी

बहुत-सी चीजों में से, जो सभी थोड़ी-बहुत ठीक हैं, जो सबसे ज्यादा ठीक हो, उसे चुन सके।

बा० प० मी०, ५५

३५. धर्म का पालन करते हुए मन को जो शांति रहनी चाहिए, वह न रहे; तो यह माना जा सकता है कि कहीं-न-कहीं हमारी भूल हुई होगी।

बा० प० म०, १०७

३६. जो मनुष्य धर्म को अस्वीकार करता है, वह भी धर्म के बिना न जी सकता है, और न जीता है।

वि०, ६

३७. धर्म का पालन धैर्य से होता है।

बि० कौ० आ०, २९५

३८. धर्म की परीक्षा ही दुख में होती है।

म० डा० २, १३०

३९. नास्तिकता में स्वयं अपने अस्तित्व का ही अस्वीकार है।

गां० ना० सं० २४

४०. शुद्ध धर्म अचल है, रूढ़ि धर्म समयानुसार बदला जा सकता है।

म० डा० १न०, २८८

४१. व्यवहार से धर्म को अलग किया ही नहीं जा सकता या अव्यवहार कर्म जैसी कोई चीज नहीं है।

म० डा० २, २५२

४२. मजहब भाषा और लिपि की सीमा से बाहर है।

प्रा० प्र० १, ३३

४३. मैं धर्म-रक्षा करूंगा, ऐसा कहना भी घमंड है।

प्रा० प्र० १, ५६

४४. धर्म का पालन जोर-जबरदस्ती से नहीं हो सकता। धर्म का पालन करने के लिए मरना होगा। संसार में ऐसा कोई धर्म पैदा नहीं हुआ, जिसमें मरना न पड़ा हो। मरने का रहस्य सीखने के बाद ही धर्म में ताकत पैदा होती है। धर्म के वृक्ष को मरनेवाले ही सींचते हैं। धर्म उन लोगों के

कारण बढ़ता है, जो ईश्वर का नाम लेते हैं, ईश्वर का काम करते हैं, ईश्वर का स्तवन करते हैं, उपवास और व्रत करते हैं और ईश्वर से आरजू करते रहते हैं कि हे भगवान, हमें, रास्ता नहीं दीखता, तू ही दिखा ! तब लोग कहते हैं कि वह तो भक्त है और उसके पीछे चलते हैं। धर्म इसी तरह बनता है। मारकर कोई धर्म नहीं पनपा, मरकर ही धर्म पनपता है। यही धर्म की जड़ है।

प्रा० प्र० १, ६०

४५. धर्म का पालन यह है कि हम सीधे रास्ते पर चलें।

प्रा० प्र० १, १६०

४६. जो बहादुर होते हैं उनको किसी की मदद की ज़रूरत नहीं होती। उन्हें केवल ईश्वर की मदद होनी चाहिए।

प्रा० प्र० १, २२१

४७. जो आदमी अपना धर्म पालन करता है, धर्म ही उसका बदला है।

प्रा० प्र० १, २४०

४८. धर्म अमर है। वह कभी बदल नहीं सकता।

प्रा० प्र० १, २३७

४९. हम दूसरों को कहें कि आप मेहरबानी करके हमारा धर्म बचा दें तो इस तरह धर्म बचता नहीं है। मेहरबानी से धर्म बचता है ? यदि हम कहें कि हमारा धर्म बचाओ, तो वह धर्म का सौदा हुआ।

प्रा० प्र० १, ३८३

५०. धर्म अपने दिल की बात है। इंसान जाने और उसका ईश्वर जाने।

प्रा० प्र० १, ४०६

५१. हम धर्म-परिवर्तन करने से तो मरना अच्छा समझेंगे।

प्रा० प्र० २, २४

५२. दुनिया के दूसरे लोग धर्म का पालन नहीं करते, इसलिए क्या मैं भी धर्म का पालन न करूं !

प्रा० प्र० २, ७५

५३. धर्म तो अलग-अलग व्यक्ति का अलग रह सकता है।

प्रा० प्र० २, १३५

५४. जबरदस्ती से किसी का धर्म नहीं बदला करता।

प्रा० प्र० २, १३६

५५. 'धर्म-पलटा' शब्द मेरी डिक्शनरी में नहीं।

प्रा० प्र० २, २३७

५६. पैसे से धर्म नहीं चलता।

प्रा० प्र० २, २३७

५७. भगवान तो हमारे पास पड़ा है, उसे हम पहचानें। सबसे बड़ा गिरजाघर है ऊपर आकाश और नीचे धरतीमाता। खुले में क्या भगवान का नाम नहीं लिया जा सकता? भगवान की पूजा के लिए न सोना चाहिए, न चांदी। अपने धर्म का पालन हम खुद ही कर सकते हैं और खुद ही उसका हनन कर सकते हैं।

प्रा० प्र० २, २३८

२—ईश्वर

१. जिसे ईश्वर बचाना चाहता है, वह गिरने की इच्छा रखते हुए भी पवित्र रह सकता है।

आ० क०, १६

२. जीवन की डोर तो एक ईश्वर के ही हाथ में है। ईश्वर का नाम लेकर, उस पर श्रद्धा रखकर, तू अपना मार्ग मत छोड़!

आ० क०, २१५

३. इस संसार में जहां ईश्वर अर्थात् सत्य के सिवा कुछ भी निश्चित नहीं है, निश्चितता का विचार करना ही दोषपूर्ण प्रतीत होता है।

आ० क०, २१८

४. पालन करनेवाला तो ईश्वर ही है।

आ० क०, २२६

५. संपूर्ण ईश्वरार्पण के बिना विचारों पर संपूर्ण विजय प्राप्त हो ही नहीं सकती।

आ० क०, २७७

६. ईश्वर न तो ऊपर स्वर्ग में है, न नीचे किसी पाताल में; वह तो हर-एक के हृदय में विराजमान है।

स० ई०, ५

७. ईश्वर एक अनिर्वचनीय रहस्यमयी शक्ति है, जो सर्वत्र व्याप्त है; मैं उसे अनुभव करता हूं, यद्यपि देखता नहीं हूं।

स० ई०, ७

८. सब प्राणियों का शासन करनेवाला यह नियम ही ईश्वर है। नियम और नियामक एक ही है।

स० ई०, ७

९. ईश्वर जीवन है, सत्य है, और प्रकाश है। वही प्रेम है ; वही परम मंगल है।

स० ई०, ८

१०. मैं जितना शुद्ध बनने की कोशिश करता हूं, उतना ही ईश्वर से निकटता अनुभव करता हूं।

स० ई०, ९

११. मेरी दृष्टि में ईश्वर सत्य और प्रेम है, ईश्वर नीति और सदाचार है, ईश्वर अभय है। ईश्वर प्रकाश और जीवन का स्रोत है, फिर भी वह इन सबसे ऊपर और परे है। ईश्वर अंतरात्मा है। वह नास्तिक की नास्तिकता भी है, क्योंकि अपने निःसीम प्रेम के कारण वह उसे भी रहने देता है।

स० ई०, १०

१२. ईश्वर वाणी और बुद्धि से परे है।

स० ई०, १०

१३. ईश्वर कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो दूर कहीं बादलों में रहती हो। ईश्वर हमारे भीतर रहनेवाली अदृश्य शक्ति है और पलकें आंखों के जितनी निकट हैं, उनसे भी वह हमारे ज्यादा निकट है।

स० ई०. १८

१४. ईश्वर और उसका कानून एक ही है। वह कानून ही ईश्वर है।

स० ई०, २१

१५. ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वत्र है ।

स० ई०, २१

१६. ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है, वह वर्णन से परे है ।

स० ई०, २३

१७. ईश्वर कानून बनानेवाला है, कानून भी है और उसे कार्यान्वित करानेवाला भी है ।

स० ई०, २३

१८. मानव-जाति ईश्वर को, जो मनुष्य की बुद्धि के लिए अगम्य है और ज़िसका वैसे कोई नाम नहीं हो सकता, जिन अनंत नामों से पहचानती है उनमें से एक नाम दरिद्रनारायण है। उसका अर्थ है गरीबों का, यानी उनके हृदय में प्रकट होनेवाला, ईश्वर ।

स० ई०, २७

१९. ईश्वर अपने को सिद्ध करने का विषय बनाये और वह भी अपनी ही संतानों के द्वारा, तो ईश्वर न रह जाय ।

स० ई०, २७

२०. ईश्वर के प्रति मेरा समर्पण जितना अधिक रहा है, उतना ही मेरा आनंद बढ़ा है ।

स० ई०, २७

२१. मेरे लिए सत्य सर्वोपरि सिद्धांत है, जिसमें दूसरे अनेक सिद्धांतों का समावेश हो जाता है। यह सत्य वाणी का स्थूल सत्य ही नहीं है, अपितु विचार का सत्य भी है; और न केवल हमारी कल्पना का सापेक्ष सत्य है, बल्कि स्वतंत्र चिरस्थायी सत्य है, यानी परमेश्वर ही है ।

स० ई०, ३१

२२. ईश्वर की असंख्य व्याख्याएं हैं, क्योंकि उसकी विभूतियां भी अगणित हैं ।

स० ई०, ३१

२३. मैं ईश्वर की पूजा सत्य के रूप में ही करता हूं ।

स० ई०, ३१

२४. इंद्रियों के द्वारा ईश्वर को पहचानने में हमें सदा असफलता होगी, क्योंकि वह इंद्रियों से परे हैं। हां, यदि हम इंद्रियों से अपने को विरत करलें तो उसका अनुभव कर सकते हैं।

स० ई०, ३२

२५. मनुष्य का अंतिम लक्ष्य ईश्वर से साक्षात्कार है और उसकी सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सभी प्रवृत्तियां ईश्वर-दर्शन के अंतिम उद्देश्य से प्रेरित होनी चाहिए। समस्त मानव-प्राणियों की तात्कालिक सेवा इस प्रयत्न का आवश्यक अंग बन जाती है। परंतु मैं जानता हूं कि मैं उसे मानवता से अलग कहीं नहीं पा सकता।

स० ई०, ३३

२६. मैं हवा और पानी के बिना रह सकता हूं, परन्तु ईश्वर के बिना नहीं रह सकता। आप मेरी आंखें निकाल लें, इससे मैं नहीं मरूंगा; आप मेरी नाक काट डालें, इससे भी मैं नहीं मरूंगा; परंतु आप मेरा ईश्वर पर विश्वास नष्ट करदें तो मैं निष्प्राण हो जाऊंगा।

स० ई०, ३४

२७. पृथ्वी-तल पर मैंने ईश्वर-जैसा कठोर मालिक नहीं देखा। वह हमारी परीक्षा बार-बार लेता ही रहता है।

स० ई०, ३४

२८. तूफानों में थपेड़े खाते हुए विश्व में कौन यह कहने का साहस करेगा कि मेरी जीत हुई है! विजय हमारे भीतर के ईश्वर की होती है, हमारी नहीं।

स० ई०, ३७

२९. मेरी राय में राम, रहमान, अहुरमज्द, गॉड या कृष्ण, ये सब उस अदृश्य शक्ति को, जो सब शक्तियों से बड़ी है, कोई नाम देने के मानव-प्रयत्न हैं।

स० ई०, ४२

३०. ईश्वर का वर्णन मनुष्य अपनी टूटी-फूटी भाषा में ही कर सकता है। जिस शक्ति को हम ईश्वर कहते हैं, वह वर्णनातीत है।

स० ई०, ४२

३१. ईश्वर ही वह प्राणभूत शक्ति या आत्मा है, जो सर्वव्यापी, सर्व-ग्राही और, इसलिए, मानव-बुद्धि से परे है।

स० ई०, ४३

३२. कुछ लोग ईश्वर को राम कहते हैं, कुछ कृष्ण और कोई रहीम और कोई उसे गॉड कहते हैं। सब उसी एक तत्त्व की पूजा करते हैं; परंतु जैसे सब आहार सभी को अनुकूल नहीं होते, उसी तरह सब नाम सब को नहीं भाते।

स० ई०, ४५

३३. मेरा यह विश्वास जरूर है कि प्रत्येक मनुष्य के लिए ईश्वर के बराबर ही पूर्ण हो जाना संभव है।

स० ई०, ५७

३४. ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है। यह कहना कि वह मनुष्य के रूप में समय-समय पर पृथ्वी पर उतरता है, आंशिक सत्य है और उसका इतना ही अर्थ है कि इस प्रकार का मनुष्य ईश्वर के निकट रहता है।

स० ई०, ७८

३५. हम ईश्वर के न हों तो भी ईश्वर के तो हैं ही; जैसे पानी की छोटी-सी बूंद महासागर की होती है।

स० ई०, ८६

३६. ईश्वर और उसका नियम एक ही वस्तु है। इसलिए उसके नियम का पालन करना पूजा का सबसे अच्छा रूप है। जो उस नियम के साथ एक हो जाता है उसे ज़बान से उसका नाम लेने की जरूरत नहीं रहती।

स० ई०, १०२

३७. कोई भी काम, जो ईश्वर के नाम पर और उसे अर्पित करके किया जाता है, छोटा नहीं होता।

स० ई०, १२६

३८. एक भंगी, जो ईश्वर की सेवा के लिए काम करता है और एक राजा, जो उसकी दी हुई वस्तुओं को उसके नाम पर और केवल संरक्षक बनकर काम में लेता है, दोनों का दरजा बराबर है।

स० ई०, १२६

३९. ईश्वर की इच्छा निश्चित और अपरिवर्तनीय है; बाकी सब चीजें हर वक्त बदलती रहती हैं।

स० ई०, १३८

४०. ईश्वर के नियम दुर्बोध हैं और अनंत खोज के विषय हैं। उनका कोई पता नहीं लगा सकेगा।

स० ई०, १३८

४१. केवल ईश्वर ही अव्यय है और उसका संदेश मनुष्य के माध्यम से मिलता है। इसलिए माध्यम जितना शुद्ध या अशुद्ध होगा, उतनी मात्रा में संदेश के शुद्ध या अशुद्ध होने की संभावना होगी।

य० अ०, ५६

४२. ईश्वर अर्थात् सत्य उन्हें मिलता है, जो उसे खोजते हैं।

ग्ली० बा० फी०, २०

४३. शैतान कोई व्यक्ति नहीं है, बल्कि एक सिद्धांत है—सत्य के निषेध का सिद्धांत; जबकि ईश्वरत्व सत्य का सिद्धांत है।

ग्ली० बा० फी०, २४

४४. ईश्वर उन्हीं की मदद करता है, जो सदा जागरूक रहते और अपने जीवन-कार्य में अपनी सारी बुद्धि लगाते हैं।

खा०, १२२

४५. ईश्वर-प्राप्ति के लिए स्वार्थ और अहंकार को स्वेच्छा से, और ईश्वर के प्रति निवेदित पवित्र बलिदान के रूप में, मिटा देना सीखना पड़ता है।

खा०, १३९

४६. ईश्वर की खोज के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं, वह हमारे हृदयों में निवास करता है। परंतु यदि हम वहां स्वार्थ या अहंकार को प्रस्थापित कर लेते हैं, तो हम बेचारे ईश्वर को सिंहासन-च्युत कर देते हैं।

खा०, १४०

४७. मनुष्य की इच्छा की पूर्ति तो ईश्वर ही करता है।

बा० प०, ज०, २०४

४८. ईश्वर की तो हमेशा कृपा ही होती है। हम उस कृपा को न पहचान सकें, यह हमारी मूर्खता है।

बा० प०ज०, २०

४९. ईश्वर महान है, वह चमत्कार कर सकता है।

बा० आ०, २६

५०. बुद्धिमान का और मूर्ख का, पापी का और संत का ईश्वर एक ही है।

म० डा० २, १२८

५१. जिसे भगवान के साथ का भान है, उसे और किसी के साथ की जरूरत ही क्यों हो!

बा० प० स०, २८

५२. ईश्वर का अस्तित्व साबित नहीं किया जा सकता। उसके साबित करने की जरूरत भी नहीं। ईश्वर तो है।

वि०, २९

५३. ईश्वरीय कृपा किसी एक ही राष्ट्र या जाति की संपत्ति नहीं है।

गां० वा०, ६२

५४. ईश्वर की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता है, और न तो कोई हत्यारा किसी के जीवन की अवधि में कमी ही कर सकता है, न कोई मित्र उसकी रक्षा ही कर सकता है।

गां० बा०, २०

५५. आप ईश्वर और धन दोनों की एक साथ पूजा नहीं कर सकते।

गां० का पुन०, १

५६. ईश्वर मनुष्य की बुद्धि के परे है।

गां० ना० सं०, २२

५७. जो सिर्फ ईश्वर का सहारा लेते हैं, वे मनुष्य का सहारा नहीं लेंगे, चाहे वे मरे हों, चाहे जिंदा।

बा० आ०, १२

५८. परमेश्वर और प्रकृति एक ही वस्तु है। देवता और परमेश्वर

भी एक ही वस्तु है। देवता परमेश्वर की एक शक्ति है, उसकी उपासना से भी अंत में परमेश्वर तक पहुंचा जा सकता है।

म० डा० २, १५

५९. जब क्षितिज अत्यंत अंधकारमय होता है, जब चारों ओर निराशा का घोर अंधकार छा जाता है, तब अक्सर दिव्य प्रकाश हमारा मार्ग-दर्शन करता है।

मो० मा०, १

६०. जब हम अपने पैरों-तले की धूल से भी अधिक नम्र बन जाते हैं, तब ईश्वर हमारी मदद करता है। केवल दुर्बल और निराधार के लिए ही ईश्वरीय सहायता का वचन दिया गया है।

मो० मा०, ९

६१. हम ईश्वर से डरेंगे तो मनुष्य का हमारा डर मिट जायगा।

मो० मा०, ६६

६२. ईश्वर को नहीं मानने से सबसे बड़ी हानि वही है, जो हानि अपने को नहीं मानने से हो सकती है, अर्थात ईश्वर को न मानना आत्म-हत्या-जैसा है।

म० डा० १, ८१

६३. ईश्वर को मानना चाहिए, क्योंकि हम अपने को मानते हैं। जीव की हस्ती है तो जीव-मात्र का समुदाय ईश्वर है और यही प्रबल प्रभाव है।

म० डा० १, ८७

६४. ईश्वर तो अंतर में है। इसलिए भौतिक विज्ञान में कुछ भी शोध की जाय, तो भी उससे ईश्वर पर जीवित श्रद्धा नहीं हो सकती।

म० डा० १, ११७

६५. ईश्वर के अस्तित्व के बारे में दलील न करो, जैसे हम अपनी हस्ती के बारे में दलील नहीं करते। यूक्लिड के स्वयंसिद्ध सूत्र की तरह यह मान ही लो कि ईश्वर है; क्योंकि असंख्य धर्मात्मा ऐसा कह गए हैं और उनका जीवन इस बात का असंदिग्ध प्रमाण है।

म० डा० १, ११७

६६. हम अगर अपने-आपको भगवान की इच्छा के सिपुर्द कर दें तो हमें कभी चिंता करनी ही न पड़े।

म० डा० १, १६५

६७. ईश्वर में श्रद्धा न होने से आत्म-विश्वास का अभाव होता है।

बा० प० मी०, २३९

६८. भीतर का आनंद ईश्वर का काम करने से ही पैदा होता है।

बा० आ०, १३

६९. जो ईश्वर को अधिक चाहता है, उसकी वह ज्यादा कसौटी करता है।

बा० प० म०, ९५

७०. ईश्वर स्वयं न नर है, न नारी है; उसके लिए न पंक्ति-भेद है न योनि-भेद है; न वह 'नेति-नेति' है। वह हृदय-रूपी वन में रहता है और उसकी वंसी में है अंतर्नाद। हमें निर्जन वन में जाने की आवश्यकता नहीं है। अपने अंतर में हमें ईश्वर का मधुर नाद सुनना है।

प्रा० प्र० १, १३१

७१. अकेले आदमी की रक्षा ईश्वर करता ही है। इसीलिए उसे 'निर्बल के बल राम' कहा जाता है।

प्रा० प्र० १, १३९

७२. पैसा-बल, शरीर-बल या पशु-बल—ये सब जड़वाद के द्योतक हैं; परंतु इन सबसे बड़ा ईश्वर का बल है।

प्रा० प्र० १, २००

७३. सिवा ईश्वर की मदद के और कोई चारा ही नहीं है।

प्रा० प्र० १, ४२८

७४. रक्षा का पहला साधन तो अपने हृदय में पड़ा है। वह है ईश्वर में अटल श्रद्धा; दूसरा है पड़ोसियों की सद्भावना।

प्रा० प्र० १, ४४३

७५. ईश्वर का जो नियम है उसे कौन फेर सकता है; और दुनिया में जो बड़े-बड़े नियम हैं, उन्हें ईश्वर नहीं फेर सकता।

प्रा० प्र० २, १८

३—आत्मा

१. आध्यात्मिक संबंध से रहित लौकिक संबंध प्राणहीन देह के समान हैं।

आ० क०, २२६

२. आत्मा-विहीन व्यक्ति पृथ्वी पर भार-स्वरूप होता है।

सर्वो०, १७६

३. आत्मा अविनाशी है और सेवा-कार्यों के द्वारा अपनी मुक्ति निकालने के लिए नये-नये रूप धारण करती रहती है।

दि० डा०, २८

४. आत्मा अमर है, शरीर नाशवान है।

दि० डा०, २३१

५. आत्मा की अमरता में मेरा विश्वास है।

स० ई०, १३५

६. बुद्धि की तीव्रता की अपेक्षा हृदय का बल करोड़ों-गुना कीमती है, अतः उसका विकास करना चाहिए।

बा० आ०, २१७

७. जितना साफ असर भौतिकशास्त्र में अमुक मिश्रणों का या क्रियाओं का हम देखते हैं, उतना ही, बल्कि उससे भी ज्यादा, साफ असर रूहानी क्रियाओं का होता है।

स० ई०, १२

८. आत्म-विश्वास सच्चा तब कहा जायगा जब वह निराशा के समय भी अचल रहे।

बा० प० म०, १६

९. आत्मा की न मृत्यु है और न वियोग।

बा० प० मी०, २१

१०. आत्म-विश्वास का अर्थ है अपने काम में अटूट श्रद्धा ।

म० डा० १, २३०

११. जिसका आत्म-बल पर विश्वास है, उसकी हार नहीं होती; योंकि आत्म-बल की पराकाष्ठा का अर्थ है मरने की तैयारी ।

म० डा० २, ६

१२. आजकल के गलत जीवन का हम दिलो-जान से विरोध करें, ो ही आध्यात्मिक एकता प्राप्त हो सकती है ।

म० डा० २, ११

१३. इस शरीर के नाश के साथ आत्मा का नाश नहीं है, ऐसी प्रतीति बको है। ऐसे ही इस शरीर के पहले भी आत्मा का अस्तित्व ा ।

म० डा० २, १५२

१४. जिसे आत्मा का ज़रा भी भान हो, वह मृत्यु का स्वरूप समझता । वह क्यों वृथा शोक करे !

म० डा० १, ७८

१५. आत्मा की शक्ति को पहचानना ही आत्म-ज्ञान है । आत्मा ी बैठे-बैठे दुनिया को हिला सकती है ।

म० डा० १न०, १२०

१६. आध्यात्मिक अनुभव विचार से भी अधिक गहरे होते हैं ।

सि० गां० १८

१७. आदमी की प्रतिष्ठा एक बहुत ऊंचे नियम, अर्थात् आत्मबल के नयम, का पालन चाहती है ।

सि० गां०, १४६

१८. हमें शरीर के चिकित्सक की बजाय आत्मा के चिकित्सकों की ावश्यकता है ।

मो० मा०, २२

१९. आत्मा से संबंध रखनेवाली बातों में पैसे का कोई स्थान हीं है ।

गां० का पुन०, १

२०. मानव के पास कितना ही धन या सुख-सामग्री रहे, फिर भी जबतक आंतरिक शांति नहीं होती तबतक कभी बरकत नहीं होती।

अं० भा०, २५

२१. आत्मा की वीरता त्याग, निश्चय, श्रद्धा और नम्रता के बिना प्राप्त नहीं हो सकती।

वि०, १२

२२. पशुबल अस्थायी है और अध्यात्मबल या आत्मबल या चैतन्य-वाद एक शाश्वत बल है। वह हमेशा रहनेवाला है, क्योंकि वह सत्य है। जड़वाद तो एक निकम्मी चीज है।

प्रा० प्र० १, २००

२३. आखिर में तो चैतन्यवाद या आत्मवाद की ही विजय होगी।

प्रा० प्र० १, २००

४—आत्म-शुद्धि

१. सूक्ष्म विकारों पर विजयी होना मुझे शस्त्र-बल द्वारा संसार की भौतिक विजय से कठिन प्रतीत होता है।

आ० क०, ५४

२. बिना आत्म-शुद्धि के जीवमात्र के साथ ऐक्य सध ही नहीं सकता। आत्म-शुद्धि के बिना अहिंसा-धर्म का पालन सर्वथा असंभव है। अशुद्ध आत्मा परमात्मा के दर्शन करने में असमर्थ है। अतएव जीवन-मार्ग के सभी क्षेत्रों में शुद्धि की आवश्यकता है।

आ० क०, ४३३

३. निष्कलंक चरित्र और आत्म-शुद्धिवाले मनुष्यों के प्रति आसानी से विश्वास हो जायगा और उनके आसपास का वातावरण अपने-आप शुद्ध हो जायगा।

स० ई०, ५४

४. सब प्राणियों के साथ तादात्म्य-साधना आत्म-शुद्धि के बिना असंभव है।

स० ई०, ५४

५. आत्म-शुद्धि के बिना अहिंसाधर्म का पालन थोथा स्वप्न ही रहेगा।

स० ई०, ५४

६. आत्म-शुद्धि का अर्थ जीवन की सभी पहलुओं से शुद्धि होना चाहिए।

स० ई०, ५४

७. पूर्ण शुद्धता प्राप्त करने के लिए मनुष्य को मन, वचन और कर्म में सर्वथा विकाररहित बनना पड़ता है। उसे प्रेम और घृणा, राग और द्वेष की विरोधी घटनाओं से ऊपर उठना होता है।

स० ई०, ५४

८. स्थायी और लाभदायक मुक्ति भीतर से, अर्थात् आत्म-शुद्धि से, होती है।

सर्वो०, १७५

९ जहां मनोबल नहीं है, वहां आत्मशक्ति नहीं हो सकती।

हिं० स्व०, ८४

१०. आत्म-शुद्धि में से आत्म-ज्ञान होता है।

म० मा० डा० २, ६६

११. आत्म-शुद्धि का मार्ग बड़ा विकट है। पूर्ण शुद्ध बनने का अर्थ है मन से, वचन से और काम से निर्विकार बनना; राग-द्वेषादि के परस्पर-विरोधी प्रवाहों से ऊपर उठना।

मो० मा०, ५७

१२. जो सचमुच भीतर में स्वच्छ है, वह बाहर में अस्वच्छ हो ही नहीं सकता।

बा० आ०, १२६

१३. मनुष्य को आत्म-शुद्धि का प्रयास करना चाहिए। पैसे से या पैसा बिगाड़ने से किसी की कीमत नहीं बढ़ती।

अं० झां०, १८४

१४. हरएक आदमी, दूसरे क्या करते हैं, उसे न देखे, बल्कि अपनी ओर देखे और जितनी आत्म-शुद्धि कर सके, करे।

प्रा० प्र० २, ३०६

१५. जनता बहुत परिमाण में आत्म-शुद्धि कर लेगी तो उसका हित होगा ।

प्रा० प्र० १, ३०४

५——अंतरंग की आवाज

१. इस आवाज को जो चाहे सुन सकता है । वह हरएक के अंदर है । लेकिन दूसरी चीज़ों की तरह उसके लिए भी निश्चित पूर्व-तैयारी की आवश्यकता है ।

स० ई०, २९

२. मेरा दृढ़ विश्वास है कि वह अपने को प्रत्येक मानव-प्राणी के सामने रोज प्रकट करता है । मगर हम भीतर की इस शांत आवाज के लिए अपने कान बंद कर लेते हैं, हम अपने सामने के अग्नि-स्तंभ के प्रति आंखें मूंद लेते हैं । मैं उसकी सर्वव्यापकता को अनुभव करता हूं ।

स० ई०, ३३

३. न्याय की अदालतों से भी एक बड़ी अदालत होती है । वह अदालत अंतर की आवाज की है और वह अन्य सब अदालतों से ऊपर की अदालत है ।

य० अ०, २९

४. हरएक स्त्री-पुरुष को अपनी आंतरिक आवाज का अनुकरण करना चाहिए ।

फा० पै०, १०६

५. जब मनुष्य अंतर्नाद की प्रेरणा होने की बात कहता है, तब उसे ईश्वर की दया पर छोड़ देना चाहिए ।

म० डा० २, १२१

६. हरएक मनुष्य के अंदर से ईश्वर बोलता तो है ही, परंतु हरएक मनुष्य उसे सुन नहीं सकता । अंतर की आवाज दो तरह की होती है, ईश्वर की और शैतान की । किसकी है, इसका निर्णय तो परिणाम पर से ही किया जा सकता है ।

म० डा० ३, ३७

७. करोड़ों मनुष्य अंतरात्मा की आवाज़ का दावा करें, तो भी सच्ची अंतरात्मा की आवाज एक ही होगी ।

म० डा० ३, ४८

८. हरएक को अपनी अंतरात्मा की आवाज़ का हुक्म मानना चाहिए। अंतरात्मा की आवाज़ न सुन सकें तो जैसा ठीक समझें वैसा करना उचित होगा, लेकिन किसी भी सूरत में दूसरों की नकल नहीं करनी चाहिए ।

प्रा० प्र० १, १६४

६—आंतरिक प्रकाश

१. भगवान ही हमारी आत्मा को सच्ची रोशनी दे सकता है, और ऐसी ही रोशनी सच्ची रोशनी है ।

प्रा० प्र० २, ७०

२. सच्ची रोशनी भीतर से पैदा होती है ।

प्रा० प्र० २, ७०

३. अगर बाहर की रोशनी भीतर की ज्योति का ही नमूना है तब तो खैर है; और अगर भीतर अंधेरा है और बाहर हम दिया-बत्ती जलाते हैं और ऐसा मान लेते हैं कि यह तो सब चलता है, तब हम पाखंडी और झूठे बनते हैं ।

प्रा० प्र० २, ७२

७—सिद्धांत

१ छोटी-छोटी बातों में ही हमारे सिद्धांतों की परीक्षा होती है ।

ऐ० बा०, ७१

२. व्यवहार सदा सिद्धांत से छोटा ही रहेगा, जैसे कि खिंची हुई रेखा यूक्लिड की सैद्धांतिक रेखा से छोटी रहती है ।

रच० का०, ७

३. जब तत्त्व व्यवहार में आता न दीखे तब जान लो कि हमने तत्त्व को अच्छी तरह नहीं पहचाना है । परंतु तत्त्व हमारे व्यवहार में उतरना ही चाहिए । पूरी तरह तो कोई तत्त्व व्यवहार में नहीं उतारा जा सकता; परंतु जो व्यवहार तत्त्व के निकट नहीं जाता वह अशुद्ध और त्याज्य है ।

बा० प० प्रे०, १५८

४. कुछ सिद्धांत ऐसे शाश्वत और सनातन होते हैं, जिनमें समझौते के लिए अवकाश ही नहीं होता; और ऐसे सिद्धांतों पर अमल करने के लिए मनुष्य को प्राणों का बलिदान देने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

मो० मा०, ३०

५. मानव-जीवन समझौतों की एक दीर्घ परंपरा है, और जिस बात को हमने सिद्धांत के रूप में सत्य पाया है; उसे व्यवहार में सिद्ध करना हमेशा आसान नहीं होता।

मो० मा०, ३०

८—भावना

१. शब्दों में चमत्कार भरा होता है। शब्द भावना को देह देता है और भावना शब्द के सहारे साकार बनती है।

खा०, २०८

२. केवल जोश और भावना-वश होकर किया हुआ काम आखिर टिकता नहीं।

खा०, २३४

३. जहां भावना की हत्या होती है वहां शब्द का उतना ही उपयोग है, जितना उस शरीर का जिसमें से प्राण निकल गए हैं।

खा०, २८१

४. महत्त्व मानसिक वृत्ति का है, न कि ऊपरी दिखावे का।

ऐ० बा०, १३

५. भावना का स्थान हृदय में है। अगर हम हृदय शुद्ध न रखेंगे, तो भावना हमें गलत रास्ते ले जायगी।

म० डा० ३, १८४

६. मनुष्य के भावना न हो तो मनुष्य का मूल्य ही क्या ?

म० डा० ३, ३११

७. दुर्भावना को मैं मनुष्यत्व का कलंक मानता हूं।

गां० वा०, ८६

८. महज भावना का कोई उपयोग नहीं है, ठीक उसी तरह जैसे

कि भाप का अपने-आप में कोई उपयोग नहीं। भाप को उचित नियंत्रण में रखा जाय तभी उसमें ताकत पैदा होती है। यही बात भावना की है।

मे० स० भा०, १६२

९. भावना कई बार कष्टप्रद सिद्ध होती है, लेकिन भावनाहीन मनुष्य पशु-तुल्य है। भावना को सही दिशा में ले जाना हमारा परम कर्तव्य है।

बा० प० प्रे०, १५

१०. भावना सीधे मार्ग पर जा सकती है। उसे सीधे मार्ग पर ले जाना परम अर्थ है।

बा० प० प्रे०, १६

११. भावना को गलत मार्ग से रोकने की शक्ति हम सबमें होती ही है। यह उत्कृष्ट प्रयत्न है। इस प्रयत्न में हार के लिए स्थान ही नहीं है।

बा० प० प्रे०, १७

१२. शब्दों के पीछे रही भावना का अध्ययन करना चाहिए। केवल शब्दों को नहीं पकड़ रखना चाहिए।

ह० च०, १७७

९—प्रकृति

१. प्रकृति की शक्तियां रहस्यमय ढंग से काम करती हैं।

स० ई०, १३१

२. मनुष्य में प्रकृति को काबू में रखने और उसके बलों को जीतने की शक्ति है।

खा०, २२

३. जगत हम ही हैं। हम उसके अंदर हैं, वह हमारे अंदर है। ईश्वर भी हमारे अंदर है।

बा० आ०, २३७

४. प्रकृति की शक्तियां एक रहस्यमय ढंग से काम करती हैं।

फ़ा० पै०, ८३

५. जैसा पिंड में वैसा ब्रह्मांड में है। ब्रह्मांड को जानने जायं तो भूल करेंगे, परंतु पिंड तो हमारे हाथ में है।

बा० प० प्रे०. १८

६. हमें प्रकृति ने तो अपार भंडार दिया है, परंतु आलस्य हमें खा जाता है ।

ए० च०, ३९

७. हम कुदरत की देन को किसी भी तरह काम में लें, फिर भी कुदरत तो दोनों पलड़े बराबर रखती ही है । कुदरत के बहीखाते में न जमा है, न वाकी । वहां तो रोज आमद-खरच बराबर होकर शून्य वाकी रहता है । इस शून्य में हमें शून्य के समान होकर समा जाना है ।

स० ई०, ५१

१०—श्रद्धा

१. जिसकी निष्ठा सच्ची है, उसकी रक्षा स्वयं भगवान ही कर लेते हैं ।

आ० क०, १०

२. शंका के मूल में श्रद्धा का अभाव रहता है ।

आ० क०, ३९५

३. श्रद्धा की आवश्यकता है ही । मैंने तो सब धर्मों में यही आदेश पाया है कि अपनी चिंता ही न करनी, सब ईश्वर के भरोसे छोड़ देना ।

य० मं०, १२५

४. जिनमें श्रद्धा है, उनके लिए वह केवल सत्-स्वरूप है । वह सब मनुष्यों के लिए प्रत्येक की भावना के अनुसार सब-कुछ है । वह हमारे भीतर है और फिर भी हमसे ऊपर और परे है ।

स० ई०, १०

५. मानव प्राणी जितनी अधिक-से-अधिक आध्यात्मिक उच्चता प्राप्त कर सकते हैं, उसके लिए जरूरत सिर्फ अटल और सजीव श्रद्धा की है ।

स० ई०, ३२

६. वही सच्ची प्रार्थना कर सकता है, जिसे दृढ़ विश्वास हो कि ईश्वर उसके भीतर है । जिसे यह विश्वास नहीं है, 'उसे' प्रार्थना करने की जरूरत नहीं ।

स० ई०, ४३

को हिलाती है और श्रद्धा ही समुद्र लांघ जाती है। यह श्रद्धा अंतर्यामी ईश्वर के सजीव और जागृत भाव के सिवा और कुछ नहीं है।

स० ई०, ४६

८. अपने अंतर में ईश्वर के वास का सजीव विश्वास न हो, तो प्राथना असंभव है।

स० ई०, ५२

९. श्रद्धा एक तरह की छठी इंद्रिय है, जो उन मामलों में काम देती है, जो बुद्धि के क्षेत्र से बाहर हैं।

स० ई०, ८६

१०. श्रद्धा के बिना यह संसार क्षण-भर में नष्ट हो जायगा।

स० ई०, ८६

११. बुराई की जड़ चेतन-ईश्वर में सजीव श्रद्धा का अभाव है।

स० ई०, १३३

१२. विश्वास की शक्ति ऐसी है कि अंत में मनुष्य वैसा ही बन जाता है, जैसा वह अपने-आपको समझता है।

सर्वो०, १००

१३. श्रद्धा कभी गुम नहीं होती। वह आगे-आगे ही बढ़ती चली जाती है। उसके सहारे से बुद्धि तेजस्वी होती जाती है और फिर श्रद्धा बुद्धि-वाद का सामना कर सकती है।

खा०, २०२

१४. उत्साह टिकाने में एक ही वस्तु का काम है—ईश्वर पर सजीव श्रद्धा !

बा० प० ज०, २४८

१५. श्रद्धा तो ज्ञानमयी और विवेकपूर्ण है। जो बुद्धि का विषय है, वह श्रद्धा का विषय कदापि नहीं हो सकता। इसलिए अंधश्रद्धा श्रद्धा ही नहीं।

गां० वा०, ८२

१६. श्रद्धा से मनुष्य क्या नहीं कर सकता ! सब-कुछ कर सकता है।

वा० आ० ३५

१७. जिस विषय में बुद्धि का प्रयोग किया जा सकता है, वहां केवल श्रद्धा से हम नहीं चल सकते। जो बातें बुद्धि से परे हैं, उन्हीं के लिए श्रद्धा का उपयोग है।

गां० वा०, ८५

१८. जहां बड़े-बड़े बुद्धिमानों की बुद्धि काम नहीं करती वहां एक श्रद्धालु की श्रद्धा काम कर जाती है।....जहां श्रद्धा है, पराजय नहीं; श्रद्धालु का अकर्म भी कर्म हो जाता है।

गां०, वा० ८२

१९. सच्ची श्रद्धा का अर्थ है ऐसे लोगों के ज्ञानपूर्ण अनुभव का उपभोग करना, जिनके बारे में हमारा यह विश्वास है कि उन्होंने प्रार्थना और तपस्या से शुद्ध और पवित्र बना हुआ जीवन बिताया है।

मो० मा० ४७

२०. उस श्रद्धा का कोई मूल्य नहीं है, जो केवल सुख के समय ही पनपती है। सच्चा मूल्य तो उस श्रद्धा का है, जो कड़ी-से-कड़ी कसौटी के समय भी टिकी रहे। यदि आपकी श्रद्धा सारी दुनिया की निंदा के सामने भी अडिग खड़ी न रह सके, तो वह निरा दंभ और ढोंग है।

मो० मा०, ४८

२१. श्रद्धा ऐसा सुकुमार फूल नहीं है, जो हल्के-से-हल्के तूफानी मौसम में भी कुम्हला जाय। श्रद्धा तो हिमालय पर्वत के समान है, जो कभी डिग ही नहीं सकती।

मो० मा०, ४९

२२. जहां श्रद्धा होती है, वहां दूसरे सामान अपने-आप आ जाते हैं। श्रद्धा के अनुसार ही बुद्धि सूझती है, मेहनत आती है।

मु० ई०, ५९

२३. सच्ची श्रद्धा हो जाने पर बाहर से लगनेवाले संकट भी ऐसी श्रद्धावाले को संकट नहीं लगते।

म० डा० १, १५५

२४. किसको किस प्रसंग पर ईश्वरीय ज्ञान हुआ है, यह जानने से ईश्वरीय ज्ञान नहीं होता, मगर संयममयी श्रद्धा से होता है।

म० डा० १, २३७

२५. मनुष्य की श्रद्धा जितनी तीव्र होती है, उतनी ही अधिक वह मनुष्य की बुद्धि को पैनी और प्रखर बनाती है। जब श्रद्धा अंधी हो जाती है, तब वह मर जाती है।

मो० मा०, ४७

११—साधन और साध्य

१. साधन की बीज से और साध्य की वृक्ष से तुलना की जा सकती है। और साधन तथा साध्य में ठीक वही अलंघ्य संबंध है, जो कि बीज और वृक्ष में है।

हिं० स्व०, ७१

२. मैं शैतान को साष्टांग दंडवत करके ईश्वर की पूजा से मिलनेवाले फल प्राप्त नहीं कर सकता।

हिं० स्व०, ७१

३. आप टीन की खान में चांदी की आशा नहीं कर सकते।

हिं० स्व०, ७७

४. अहिंसक साधनों का गुणज्ञान धैर्यपूर्ण शोध-कार्य है और उससे भी अधिक धैर्यपूर्ण और कठिन व्यवहार है।

रच० का०, २६

५. अशुद्ध साधनों का अशुद्ध परिणाम होता है।

फा० पै०, ९३-९४

६. मैं सफलता की सरल (हिंसक) विधियों में विश्वास नहीं करता।

फा० पै० ९५

७. गंदे साधनों से मिलनेवाली चीज भी गंदी ही होगी।

मे० स० भा०, ७०

८. जीवन के मेरे तत्त्व-ज्ञान में साधन और साध्य पर्यायवाची शब्द हैं। दोनों एक-दूसरे का स्थान ले सकते हैं।

मो० मा०, ७२

९. लक्ष्य की सिद्धि ठीक साधनों की सिद्धि के अनुपात में होती है। यह ऐसा सिद्धांत है जिसमें अपवाद की कोई गुंजाइश ही नहीं है।

मो० मा०, ७२

१०. साधन से चिपटे रहना लेकिन उसमें विश्वास न रखना, विश्वास रखनेवाले का उसपर अमल न करना—यह स्थिति कितनी दयनीय, कितनी भयंकर है !

बा० प० स०, १२६

११. हेतु की शुद्धता से असत्य सत्य नहीं बन सकता।

म० डा० १नई, २६३

१२. पैसे से कोई स्थायी चीज नहीं हो सकती।

प्रा० प्र० १, १४०

१३. नापाक साधन से ईश्वर नहीं पाया जा सकता और बुरी चीज को पाने का साधन पाक नहीं हो सकता।

प्रा० प्र० १, १४०

१४. अच्छी बात के लिए साधन भी अच्छे ही बरतने चाहिए। टेढ़े रास्ते से सीधी बात को नहीं पहुंचा जा सकता। पूरब को जाने के लिए पच्छिम की ओर नहीं चलना चाहिए।

प्रा० प्र० १, १४६

१२—सम्यक् विचार

१. अहिंसा में मूल तत्त्व सम्यक् विचार है।

ग्ली० बा० फी०, २४

२. सम्यक् विचार न तो ठीक रूप से सोचना है और न ठीक योजना बनाना है; यह तो मूल बातों का सम्यक् रूप से समझना है। उदाहरण के तौर पर, 'ईश्वर है'—यह सम्यक् विचार है और 'ईश्वर नहीं है'—यह मिथ्या विचार है।

ग्ली० बा० फी० २४

३. सम्यक् विचार के बिना अहिंसा अपने में विश्वास की अति आवश्यक शक्ति को कभी धारण न कर सकेगी।

ग्ली० बा० फी०, २६

४. अपवित्र विचार से जो मुक्त हो जाय उसने मोक्ष प्राप्त किया। अपवित्र विचारों का सर्वथा नाश बड़ी तपश्चर्या से होता है। उसका एक ही उपाय है : अपवित्र विचारों के आते ही उनके विरुद्ध तुरंत पवित्र विचार खड़े कर दें।

बा० प० ज०, २९

६. अपवित्र विचार आयें तो उससे पीछे न हटें, बल्कि अधिक उत्साहित हों।

बा० प० ज०, ३०

७. हरएक व्यक्ति अपने लिए खुद सोचे।

बा० प० ज०, २६७

८. मनुष्य अपने शुद्ध विचार से भी सेवा कर सकता है। सलाह इत्यादि से भी कर सकता है। विशुद्ध चित्त के विचार ही कार्य हैं और महान परिणाम पैदा करते हैं।

म० डा० १, १९५

९. विचार ही कार्य का मूल है। विचार गया तो कार्य गया ही समझो।

बा० प० म०, ४०

१०. विचार पर नियंत्रण रखना एक लंबी, कष्टकर और कठिन परिश्रम की प्रक्रिया है।

मो० मा०, ५४

११. विचार की शुद्धि निश्चित अनुभव-जैसी दृढ़ ईश्वर-श्रद्धा के बिना कभी संभव ही नहीं है।

मो० मा०, ५४

१२. अपवित्र विचार आकर उसी तरह शरीर को हानि पहुंचाने की शक्ति रखता है, जिस तरह कि अपवित्र कार्य।

मो० मा०, ५४

१३. मुक्त किंतु अपूर्ण विचार की शक्ति मूर्त अर्थात् कार्य-रूप में परिणत विचार की शक्ति से कहीं ज्यादा बड़ी होती है।

मो० मा०, ५५

१४. जिसकी विचार-शुद्धि हो गई है, उसका धर्म हो जाता है कि

वह अपने आचरण द्वारा पड़ोसियों को सुधारे। विचार-शुद्धि का इतना अधिक असर होता है कि आचार-शुद्धि अपने-आप हो जाती है।

वि० कौ० आ०, २३

१५. विचार का विरोध तो हो सकता है, लेकिन आचार में विरोध नहीं होना चाहिए।

प्रा० प्र० २, ७४

१६. एक फालतू विचार कोई विचार नहीं।

प्रा० प्र० २, ८६

१३—कर्मयोग

१. हमारा प्रत्येक क्षण प्रवृत्तिमय होना चाहिए। परंतु वह प्रवृत्ति सात्त्विक हो, सत्य की ओर ले जानेवाली हो। जिसने सेवा-धर्म को स्वीकार किया है, वह एक क्षण कर्म-हीन नहीं रह सकता।

य० मं०, ५८

२. मैंने देख लिया और मैं मानता हूं कि ईश्वर हमारे सामने शरीर धारण करके नहीं, बल्कि कार्य के रूप में आता है; यही कारण है कि हमारा बुरे-से-बुरे समय में उद्धार हो जाता है।

स० ई०, ३२

२. जो करो वह ठीक से करो और सुंदरता से करो! छोटे या बड़े किसी काम को बेगार न टालो!

बा० प० ज०, २५५

४. छोटा-बड़ा जो भी काम हाथ में आया हो, उसका पालन करके शांत रहना चाहिए।

बा० प० ज०, २५३

५. जितने काम की हम अच्छी व्यवस्था कर सकते हैं, उससे अधिक का बोझ उठाकर हम अपनी आत्मा में झूठ का धब्बा लगा लेते हैं।

ऐ० बा०, १०१

६. मैं समझ गया हूं और मेरा विश्वास है कि ईश्वर शरीर से कभी दिखाई नहीं देता, परंतु कर्म में दर्शन देता है।

ऐ० बा०, ११६

७. महान काम महान बलिदान और महान उपायों के बिना नहीं किये जा सकते ।

डिं० इ०, २६

८. निस्संदेह उचित काम को स्वेच्छा से करने में गुण है, न कि बलात करने में ।

डिं० इ०, ४६

९. जब एक आदमी को औचित्य का विश्वास हो, तो उसे उचित काम से डरकर रुकना नहीं चाहिए ।

फा० पै०, २४

१०. न्याय और निष्काम कर्मयोग दोनों साधन हैं । न्याय बुद्धि का विषय है, निष्काम कर्मयोग हृदय का है । बुद्धि से हम निष्कामता को नहीं पहुंच सकते ।

१४—अनासक्ति

१. आसक्ति से मुक्ति ही सत्य-रूपी ईश्वर का साक्षात्कार है । यह साक्षात्कार जल्दबाजी से प्राप्त नहीं हो सकता ।

स० ई०, ३५

२. सत्य और अहिंसा के पूर्ण पालन के बिना पूर्ण कर्मफल-त्याग मनुष्य के लिए असंभव है ।

स० ई०, ९६

३. काम करने पर भी उसका बोझ न लगे, यह अनासक्ति का रूप है ।

बा० प० प्रे०, २८

४. अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योंकि अनासक्त कार्य भगवान की भक्ति है ।

बा० आ०, २५०

५. अनासक्ति का अर्थ बेशक यह है कि अपने और अपनों के प्रति अनासक्त रहें ।

म० डा० १, २५०

६. बगैर अनासक्ति के मनुष्य न सत्य का पालन कर सकता है, न अहिंसा का। अनासक्त होना कठिन है, इसमें संदेह नहीं।

म० डा० २, १६०

७. जगत मात्र की सेवा करने की भावना पैदा होने के कारण अनासक्ति सहज ही आ जाती है।

म० डा० २, १८१

८. अनासक्ति का मतलब जड़ता नहीं है, निर्दयता भी नहीं है; क्योंकि सेवा तो करनी ही होगी, इसलिए दया की भावना मंद पड़ने के बजाय तीव्र होगी, कार्यदक्षता भी बढ़ेगी और एकाग्रता भी बढ़ेगी, और ये सब अनासक्ति के चिह्न हैं।

म० डा० २, १८१

९. सबकी सेवा करनी हो, तो वह अनासक्तिपूर्वक ही हो सकती है।

म० डा० २, १८१

१०. सच्ची निवृत्ति शरीर से नहीं होती, वह तो भीतर से पैदा होती है।

म० डा० २, १४१

११. उदासीनता का अर्थ अप्रसन्नता नहीं, वरन् विषयों से अरुचि और संसार के विषयों से अमोह है।

गां० सा०, १४३

१५—जीवन और मृत्यु

१. आत्महत्या का विचार करना सरल है, आत्महत्या करना सरल नहीं।

आ० क०, २१

२. हमें समझ लेना चाहिए कि जन्म की खुशी मनाना और मौत का मातम करना बेवकूफी है। जो आत्मा को मानते हैं—और कौन हिंदू, मुसलमान या पारसी ऐसा होगा जो आत्मा को नहीं मानता—वे जानते हैं कि आत्मा कभी मरती नहीं है। जीवितों और मृतों दोनों की आत्माएं एक ही हैं।

स० ई०, १३५

३. जन्म और मृत्यु दो भिन्न स्थितियां नहीं हैं, बल्कि एक ही स्थिति के दो अलग पहलू हैं ।

स० ई०, १३५

४. जीवन के महासागर में हम सब छोटी-छोटी बूंदें हैं ।

स० ई०, १३५

५. जीवन रुपये से बड़ी चीज है ।

रच० का०, ६४

६. जीवन एक कर्तव्य है, एक कसौटी है ।

स्त्रि० स०, ८४

७. बहुत काल तक जेल में रहनेवाले को जैसे जेलखाना अच्छा लगने लगता है, वैसा ही हाल हमारा भी है । देहाध्यास के कारण देह छोड़ना अच्छा नहीं लगता ।

बा० प० ज०, ५५

८. मृत्यु जब छोटे-बड़े, गोरे-काले, मनुष्य-पशु, या दूसरे सबके लिए आनेवाली है, तो उसका डर क्या ! और उसका शोक भी क्या !

बा० प० ज०, ८३

९. जन्म की अपेक्षा मृत्यु अधिक अच्छी चीज होनी चाहिए ।

बा० प० ज०, ८३

१०. जन्म के माने तो दुःख में प्रवेश ही है, जबकि मृत्यु संपूर्ण दुःख-मुक्ति हो सकती है ।

बा० प० ज०, ८३

११. हम देनदार हैं, इसी कारण जन्म लेते हैं; लेनदार तो हैं ही नहीं ।

बा०प० ज०, २४८

१२. जबतक आप शरीर का बलिदान करने को तैयार न हों, तबतक ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते ।

ऐ० बा०, ११७

१३. जो देता है, वह छीन भी सकता है ।

ऐ० बा०, १४७

१४. जानेवाले की आत्मा को सुख पहुंचाने का एकमात्र उपाय यह है कि उसके सबसे प्रिय स्वप्न को चरितार्थ किया जाय; क्योंकि जानेवाले की आत्मा, जो सदा हमारे साथ विद्यमान रहती है, जीवितों को निश्चित रूप में बल पहुंचाती है।

ऐ० बा०, १४७

१५. जीवन की समस्त शोभाएं केवल तभी संभव हैं, जब हम शिष्टता से जीवित रहने की कला सीखते हैं।

फा० पै०, १०२

१६. शहीद की मृत्यु मरने के लिए हम सबको वीर होना चाहिए; परंतु किसी को भी शहादत के लिए लालायित नहीं होना चाहिए।

सि० गां०, २४४

१७. जीवन का संपूर्ण सौंदर्य तभी खिल सकता है, जब हम उच्च कोटि का जीवन जीना सीखें।

मे० स० भा०, ३५

१८. देह के बारे में मोह न रखकर मृत्यु से ज़रा भी न डरें।

गां० सा०, १४४

१९. मनुष्य-जीवन और पशु-जीवन में क्या फर्क है—इसका संपूर्ण विचार करने से हमारी काफी मुसीबतें हल होती हैं।

बा० आ०, १८३

२०. अगर कोई भी वस्तु मनुष्य के सामने प्रत्यक्ष है तो वह मृत्यु तो है ही। ऐसा होते हुए भी इस अनिवार्य प्रत्यक्ष वस्तु का भारी डर लगता है, यही आश्चर्य है, यही ममता है, यही नास्तिकता है; उससे तर जाने का धर्म अकेले मनुष्य को ही सुलभ है।

बा० प० प्रे०, १५०

२१. जन्म और मरण एक ही सिक्के की दो बाजू हैं। एक तरफ देखो तो मरण और दूसरी तरफ जन्म। इससे दुख क्यों! हर्ष क्यों!

बा० आ०, ९३

२२. अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक

आलस्य छोड़कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जायगा।

बा० आ०, ११३

२३. जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता, तब न धन बचायेगा, न माता-पिता, न बड़ा डाक्टर।

बा० आ०, १८९

२४. जीवन का लोभ मनुष्य से क्या-क्या नहीं कराता? अतएव जो जीवन का लोभ छोड़कर जीता है, वही जीता है।

गां० वा०, ५४

२५. पुत्र मरे या पति मरे, उसका शोक मिथ्या है और अज्ञान है।

गां० वा०, ११५

२६. मनुष्य जितना ही अधिक अपनी जान देता है उतना अधिक वह उसे बचाता है।

गां० वा०, २५२

२७. मृत्यु जो शाश्वत सत्य है, उसी प्रकार एक क्रांति है, जिस प्रकार जन्म और उसके बाद का जीवन एक धीमा और स्थिर विकास है। मनुष्य के लिए मृत्यु उतनी ही आवश्यक है, जितना कि स्वयं जीवन।

मो० मा, ५०

२८. मृत्यु कोई राक्षसी नहीं है। वह हमारी सच्ची-से-सच्ची मित्र है। वह हमें यातनाओं और पीड़ाओं से मुक्त करती है।

मो० मा०, ५०

२९. जीवन का रहस्य निष्काम सेवा है।

म० डा० १, १५४

३०. जन्म से मृत्यु ज्यादा उत्सव का प्रसंग है। जन्म से पहले नौ महीने यातनाएं भोगनी पड़ती हैं और जन्म के बाद भी अनेक दुख हैं, जब कि कुछ को मृत्यु के अवसर पर ब्राह्मी स्थिति प्राप्त होती है। इस प्रकार की मृत्यु प्राप्त करने के लिए जीवन अनासक्ति-युक्त कामों में बीतना चाहिए।

म० डा० २, १८३

३१. जिन्हें ईश्वर पर श्रद्धा है उनके लिए मौत और जिंदगी बराबर है। हमारा फर्ज तो आखिरी दम तक सेवा करना है।

म० डा० १, २२८

३२. जिंदगी मौत की तैयारी है।

म० डा० १, २३९

३३. मौत का दुख मानने के बराबर और क्या अज्ञान हो सकता है!

म० डा० १, २७०

३४. समझनेवाले के लिए जन्म और मरण बराबर हैं।

म० डा० १, २८०

३५. परछाईं की तरह हमारे पीछे-पीछे चलनेवाली मौत कब हमारा गला पकड़ लेगी, यह कौन जानता है?

म० डा० २, ९१

३६. मृत्यु से शरीर का ही नाश होता है, अंदर रहनेवाली आत्मा का नहीं।

म० डा० २, २३१

३७. जन्म और मृत्यु दोनों ही महान रहस्य हैं। यदि मृत्यु दूसरे जीवन की पूर्व स्थिति नहीं है तो बीच का समय एक निर्दय उपहास है। हमें यह कला सीखनी चाहिए कि मृत्यु किसी की और कभी भी हो, हम हरगिज रंज न करें।

बा० प० म०, ३०४

३८. जीवन का सच्चा ध्येय जीवन की सार्थकता है।

बि० कौ० आ०, ८२

३९. मरने की हिम्मत पैदा करने के लिए, मरने की कला साधने का पहला और आखिरी मंत्र प्रार्थना है, जिसमें पूर्ण श्रद्धा की जरूरत होती है।

बि० कौ० आ०, २५१

४०. मृत्यु हमारा सच्चा और अचूक साथी है, वह सबको अपने समय पर ले जाती है।

बि० कौ० आ०, २८२

४१. विश्वास रखने में मानव कुछ भी गंवाता नहीं। वह अपना कर्तव्य पूरा कर सकता है। इसीका नाम है सच्ची जिंदगी।

अं० भां०, १८

४२. मृत्यु हम सबके लिए आनंददायक मित्र है। वह हमेशा धन्य-वाद के लायक है, क्योंकि मृत्यु से अनेक प्रकार के दुखों से हम एक बार तो बच ही जाते हैं।

अं० भां०, ११६

४३. पुनर्जन्म का अर्थ है शरीर का रूपांतर, आत्मा का नहीं। इसलिए वैज्ञानिक मान्यता से पुनर्जन्म अलग चीज है। आत्मा का रूपांतर नहीं, बल्कि स्थानांतर होता है।

म० डा० २, २२

४४. मनुष्य के मरते समय हम उसके दोषों की याद न करें, उसके गुणों का ही स्मरण करें।

बा० प० म०, ११५

४५. पैदा होने में तो किसी अंश में मनुष्य का हाथ है भी, पर मरने में सिवा ईश्वर के किसी का हाथ नहीं होता। मौत किसी भी तरह टाली नहीं जा सकती। वह तो हमारी साथी है, हमारी मित्र है। अगर मरनेवाले बहादुरी से मरे हैं तो उन्होंने कुछ खोया नहीं, कमाया है।

प्रा० प्र० १, ८

४६. जन्म और मरण तो हमारे नसीब में लिखा हुआ है, फिर उसमें हर्ष-शोक क्यों करें! अगर हम हंसते-हंसते मरेंगे तो सचमुच एक नये जीवन में प्रवेश करेंगे।

प्रा० प्र० १, ३२

४७. हमें बहादुरी के साथ मरना चाहिए।

प्रा० प्र० १, ४८

४८. सबको एक बार ही मरना है। कोई अमर तो पैदा हुआ नहीं है। तो फिर हम यह निश्चय क्यों न करलें कि हम बहादुरी से मरेंगे और मरते दम तक अपनी ओर से बुराई नहीं करेंगे!

प्रा० प्र० १, १०१

४९. मौत सारे प्राणियों को—इंसानों, जानवरों वगैरा को—भगवान की दी हुई देन है। फर्क सिर्फ समय और तरीके का है।

प्रा० प्र० १, २९७

५०. मारनेवाला कितना ही बलवान हो, मार नहीं सकता, जबतक ईश्वर हमारी रक्षा करता है ।

प्रा० प्र० १, ३१०

५१. सबसे बड़ी बहादुरी और सबसे बड़ी समझ दुनिया की इसीमें है कि मरने का इल्म सीखो, तब जिंदा रहोगे। अगर मरने का इल्म नहीं सीखते तो बिना मौत मारे जाओगे ।

प्रा० प्र० १, ३३८

५२. मरने की हिम्मत रखना सबसे बड़ी बहादुरी है ।

प्रा० प्र० १, ३३९

५३. मुझे या किसी को जिंदा रखना सिर्फ भगवान के हाथों में है।

प्रा० प्र० १, ३८१

५४. सबके जन्म के साथ मरण भी लिखा है।

प्रा० प्र० १, ४२९

५५. कुछ लोग वृद्धावस्था को गिरना मानते हैं, लेकिन मैं वैसा नहीं मानता। वृद्धावस्था पका हुआ फल है; तो शरीर छूटता है, आत्मा थोड़े ही छूटती है ! वह न मरती है और न गिरती है ।

प्रा० प्र० २, १८-१९

५६. लोगों को मरने से डरना नहीं चाहिए, क्योंकि आज नहीं तो कल आखिर मरना ही है, तो बहादुरी के साथ क्यों न मरें ?

प्रा० प्र० २, २८३

५७. सब इंसानों को मरना है। जिसका जन्म हुआ है, उसे मृत्यु से मुक्ति नहीं मिल सकती। ऐसी मृत्यु का भय-शोक भी क्या करना !

प्रा० प्र० २, ३०४

१६—सुख-दुख

१. यह जरूरी नहीं कि कोई मनुष्य धनवान होने के कारण सुखी हो

और निर्धन होने के कारण दुखी हो। धनवान अक्सर दुखी और गरीब अक्सर सुखी पाये जाते हैं।

सर्वो०, ४५

२. हम जिस हालत में जन्मे हैं, उसी में हमें सुखी होना चाहिए और जो कर्तव्य प्रकृति ने हमारे लिए नियत किया है, उसे हमें पूरा करना चाहिए।

स्त्रि० स०, ७

३. कोई किसी की बुराई कर ही नहीं सकता।... मनुष्य के दुख का कारण मनुष्य स्वयं ही है।

अं० भा०, १३

४. सुख और दुख दोनों ईश्वर-दत्त हैं। इसलिए दोनों को हम शांतिपूर्वक और एक ही भाव से स्वीकार करें।

म० डा० २, ६३

५. ज्ञानपूर्वक दुख सहन करने से दुनिया में आजतक किसी का बुरा नहीं हुआ। दुख पड़े और उसे सहन किया जाय, यह बुरा नहीं।

म० डा०२, २०६

६. कभी किसी के दुख से अधिक दुखी या किसी के सुख से अधिक प्रसन्न न होना चाहिए। दोनों में संतुलित स्वभाव रखने पर ही भगवान का सान्निध्य पाना आसान होता है।

अ० भा०, २४०

७. जब दुख पड़ता है तभी ईश्वर याद आता है; फिर भी उसकी दया कितनी अपार है! मनुष्य सुख में उसका स्मरण नहीं करता, परंतु दुख में थोड़ा भी याद करता है तो ईश्वर उसे बचा लेता है।

ए० च० ७६

८. दुख को भूल जाने से दुख मिट जाता है।

प्रा० प्र० १, १८८

९. जो आदमी हमेशा अमृत ही पीता हो उसको अमृत उतना मीठा नहीं लगता, जितना कि ज़हर का प्याला पीने के बाद अमृत की दो बूंदें भी बहुत मीठी लगती हैं।

प्रा० प्र० १, १६८

१०. जो ईश्वर का स्मरण करते हैं और ईश्वर का काम कर लेते हैं, उनको आपत्ति से भी सीख मिल जाती है ।

प्रा० प्र० १, ४११-१२

११. दुखी का बली परमेश्वर है, लेकिन दुखी खुद परमात्मा नहीं ।

प्रा० प्र० २, ३५३

१२. दुखियों को काम तो करना ही चाहिए। दुखी को ऐसा हक नहीं है कि वह काम न करे ।

प्रा० प्र० २, ३५३

१७—पाप-पुण्य

१. धन, सत्ता और मान मनुष्य से कितने पाप और अनर्थ कराते हैं!

आ० क०, २००

२. ईश्वर की नजर में पापी और संत बराबर हैं। दोनों को समान न्याय मिलेगा ।

स० ई०, १४१

३. जो संत अपने को पापी से श्रेष्ठ समझता है, वह अपना संत-पन खोकर पापी से भी बुरा बन जाता है; क्योंकि पापी को यह ज्ञान नहीं है कि वह क्या कर रहा है, जब कि संत को है या होना चाहिए।

स० ई० १४१

४. दूसरे का पुण्य भोगने का सिद्धांत मैं स्वीकार नहीं करता ।

य० अ०, ५६

५. पाप का दंड ईश्वर देता है या अपना अन्तःकरण देता है ।

स्त्रि० स०, ६३

६. हमें वे पाप धो डालने चाहिए जो हमारे मनुष्यत्व की हत्या करके हमें पशु बनाते हैं ।

स्त्रि० स०, १०५

७. कोई भी आदमी आत्म-हानि के बिना पाप या भूल नहीं कर सकता ।

ड्रिं० डू० ७४

८. पाप-पुण्य मृत्यु के बाद भी जीव के साथ ही जाते हैं। जीव जीव-

रूप में उन्हें भोगता है। फिर वह दूसरे दृश्य शरीर में हो या सूक्ष्म शरीर में, इसमें हर्ज नहीं।

म० डा० २, १८

९. बुरे-से-बुरे आदमी को भी हमें शुद्ध मानकर चलना चाहिए। सब के साथ समान व्यवहार करने का और विरोधी चीजों के इस विश्व में पानी में कमल की तरह अलिप्त रहने का यही अर्थ है।

बा० प० मी०, २१

१०. गुनाह छिपा नहीं रहता। वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है। उस शास्त्र को हम पूरे तौर से नहीं जानते; लेकिन बात साफ है।

बा० आ०, २०३

११. हमें पुण्यवान बनना चाहिए। एक ओर राम का नाम लेना और दूसरी ओर मायाचारी बनना, ईश्वर की निंदा करना है।

प्रा० प्र० १, ४६६

१८--प्रारब्ध और पुरुषार्थ

१. हम चाहते कुछ हैं और हो कुछ और ही जाता है।

आ० क०, २६४

२. हमारा मौजूदा जीवन पिछले जीवन से नियत होता है। इसी कार्य-कारण के नियम से हमारा भविष्य का जीवन हमारे मौजूदा कामों से बनेगा।

म० डा० १, २८६

३. प्रारब्ध अवश्य है, परंतु साथ ही पुरुषार्थ भी है। प्रारब्ध का इतना ही अर्थ है कि पुरुषार्थ के अभाव में पूर्व कर्मों का फल ही बाकी रहता है। पुरुषार्थ होते हुए प्रारब्ध बदल सकता है।

म० डा० २, ११०

४. किस्मत और पुरुषार्थ का झगड़ा रोज़ चलता है। हम पुरुषार्थ करते रहें और परिणाम ईश्वर पर छोड़ें।

बा० आ०, २३५

५. ईश्वर के शब्द-कोष में 'अकस्मात' जैसी कोई चीज ही नहीं। पर यह दुनिया तो अकस्मातों से ही भरी है। अकस्मात का अर्थ है ऐसी

घटनाएं, जिनपर हमारा काबू नहीं और जिनके होजाने के बाद भी हम उनके कारण ढूंढ़ नहीं सकते ।

म० डा० ३, ८९

६. चमत्कार-जैसी कोई चीज इस जगत में नहीं है, अथवा सब चमत्कार ही है ।

बा० प० प्रे०, ५९

७. सब तो ईश्वर के हाथ में है कि क्या होनेवाला है और क्या नहीं। आखिर इंसान तो सिर्फ कोशिश ही कर सकता है ।

प्रा० प्र० १, १२५

८. मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिए और ईश्वर का सहारा रहना चाहिए ।

प्रा० प्र० १, ३४८

१९—आदर्श

१. आदर्श को सही तौर पर समझे बिना हम उस तक पहुंचने की कभी आशा नहीं रख सकते ।

स० ई०, ३८

२. आदर्श की खूबी यह होती है कि वह अनंत होता है ।

स० ई०, १४०

३. जीवन में आदर्श की पूरी सिद्धि कभी नहीं होती ।

सर्वो०, ८७

४. हरएक बड़े ध्येय के लिए जूझनेवालों की संख्या का महत्त्व नहीं होता; जिन गुणों से वे बने होते हैं, वे ही गुण निर्णायक होते हैं। संसार के महान-से-महान पुरुष हमेशा अपने ध्येय पर अकेले डटे रहे हैं ।

सर्वो०, १०७

५. आदर्श एक वस्तु है, उसका पालन बिल्कुल दूसरी बात है ।

बा० आ०, २८९

६. बिना आदर्श के मनुष्य पाल-रहित जहाज के जैसा है ।

बा० आ०, २९१

७. मेरे पास आदर्श है, ऐसा तभी कहा जाय, जब मैं उसे पहुंचने की कोशिश करता हूं।

बा० आ०, २९३

८. हमारी दुर्बलताओं या अपूर्णताओं के कारण आदर्श नीचा नहीं किया जाना चाहिए।

सि० गां०, २९

९. आदमी जो ऊंची उड़ान लेता है, वह हमेशा टिक नहीं सकती। हम भी ऊंचे चढ़कर बार-बार गिर जाते हैं। पर मनुष्य के लिए अपनी ऊंची उड़ान पुण्य-स्मृति बन जाती है।

प्रा० प्र० १, १८५

२०—मोक्ष

१. शून्यता मोक्ष की स्थिति है। मुमुक्षु अथवा सेवक के प्रत्येक कार्य में नम्रता अथवा निरभिमानता न हो तो वह मुमुक्षु नहीं है, सेवक नहीं है।

आ० क०, ३४४

२. मनुष्य जबतक स्वेच्छा से अपने को सब से नीचे नहीं रखता, तबतक उसे मुक्ति नहीं मिलती। अहिंसा नम्रता की पराकाष्ठा है।

आ० क०, ४३३

३. नम्रता के बिना मुक्ति कभी नहीं मिलती।

आ० क०, ४३३

४. मेरे लिए मोक्ष का मार्ग यही है कि मैं अपने देश की, और देश के द्वारा मानव-जाति की सेवा के लिए अविश्रांत परिश्रम करता रहूं।

स० ई०, ५

५. पूर्णता या दोष-मुक्ति भगवान की कृपा से ही आती है।

सर्वो०, ११९

६. स्थायी तथा स्वस्थ मुक्ति भीतर से, अर्थात् आत्मशुद्धि से, आती है।

रच० का०, ११

७. यह समझकर कि शरीर बड़ा धोखेबाज है, इसी क्षण मोक्ष की तैयारी करें।

गां० सा०, १४४

८. उद्धार या मुक्ति का कोई छोटा रास्ता हो ही नहीं सकता।

टु० न्यू० हो०, १३

खंड २ : धर्म-मार्ग

१—व्रत

१. व्रत बंधन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता का द्वार है।

आ० क०, १७८

२. व्रतबद्ध न होने से मनुष्य मोह में पड़ जाता है।

आ० क०, १७८

३. व्रत से बंधना व्यभिचार से छुटकारा पाकर एकपत्नी-व्रत पालन करने के समान है।

आ० क०, १७८

४. कोई व्रत कठिन है, इसलिए उसकी व्याख्या को शिथिल करके हम अपने-आपको धोखा न दें।

य० मं०, ३५

५. असुविधाओं को बांधने के लिए ही तो व्रतों की आवश्यकता है।

य० मं०, ११३

६. जो पाप-रूप है उसका निश्चय तो व्रत कहा नहीं जा सकता; वह तो राक्षसी वृत्ति है।

य० मं०, ११४

७. जो धर्म सर्वमान्य माना गया है, पर जिसके आचरण की हमें आवश्यकता नहीं पड़ी, उसका व्रत लिया जाता है।

य० मं०, ११४

८. व्रत लेना कमजोरी का नहीं, बल का सूचक है।

य० मं०, ११६

९. अमुक काम करना उचित है, तो फिर वह करना ही चाहिए। इसी का नाम व्रत है और इसमें बल है।

य० मं०, ११६

१०. 'जहांतक बन सकेगा करूंगा', यह अपनी निर्बलता या अभिमान का दर्शन कराता है।

य० मं०, ११७

११. मनुष्य सूली पर बैठा होने पर भी अपने व्रत की रक्षा कर सकता है। उस समय भी जिस व्रत की रक्षा हो सके, वही सच्चा व्रत है।

गां० सा०, १०६

१२. जो आदमी व्रतबद्ध नहीं है, उसका कौन विश्वास करेगा!

म० डा० १, १३६

१३. किसी काम के करने या न करने का पक्का निश्चय करने का ही नाम व्रत है।

म० डा० १ न०, ३२१

१४. अगर एक बार भी व्रत तोड़ने की छूट दे दी जाय, तो व्रत पाले ही नहीं जा सकते, और उनकी महिमा जाती रहे।

म० डा० १ न०, ३२५

१५. मनुष्य अपने प्रण की रक्षा आसानी से नहीं कर सकता।

गां० सा०, १२४

१६. आसमान टूट पड़े, तब भी व्रत को तोड़ा नहीं जा सकता।

बा० प० म०, ५१

१७. जीवन का अर्थ है यम-नियम। उसके लिए हमें कष्ट की आग में से गुजरना ही पड़ता है।

म० डा० १, ३२२

१८. जिसने प्रतिज्ञा नहीं ली, वह बिना पतवार की नाव की तरह इधर-उधर टकराता और अंत में नष्ट हो जाता है।

म० डा० १ न०, १२१

१९. प्रतिज्ञाहीन जीवन बिना नींव का घर है, अथवा यों कहिये कि

कागज का जहाज है। प्रतिज्ञा न लेने का अर्थ है अनिश्चित या डांवाडोल रहना।

गां० वा, ६३

२०. धर्म का सच्चा उपाय हर तरह से यम-नियमों का पालन है।

म० डा० १, २३६

२—सत्य

१. हरिश्चंद्र पर जैसी विपत्तियां पड़ीं, वैसी विपत्तियों को भोगना और सत्य का पालन करना ही वास्तविक सत्य है।

आ० क०, ४

२. कम बोलनेवाला बिना विचारे नहीं बोलेगा। वह अपने प्रत्येक शब्द को तौलेगा।

आ० क०, ५४

३. सत्य वज्र के समान कठिन है और कमल के समान कोमल है।

आ० क०, १२८

४. शुद्ध हिसाब के बिना शुद्ध सत्य की रक्षा असंभव है।

आ० क०, १३१

५. सत्य एक विशाल वृक्ष है। ज्यों-ज्यों उसकी सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें से अनेक फल पैदा होते दिखाई पड़ते हैं। उसका अंत ही नहीं होता; हम जैसे-जैसे उसकी गहराई में उतरते हैं, वैसे-वैसे उसमें से अधिक रत्न मिलते जाते हैं, सेवा के अवसर प्राप्त होते रहते हैं।

आ० क०, १८६

६. जहां सत्य की ही साधना और उपासना होती है, वहां भले ही परिणाम हमारी धारणा के अनुसार न निकले, फिर भी जो अनपेक्षित परिणाम निकलता है वह अकल्याणकारी नहीं होता; और कई बार अपेक्षा से अधिक अच्छा होता है।

आ० क०, २६४

७. सत्य के पालन का अर्थ है: लिये हुए व्रत के शरीर और आत्मा की रक्षा; शब्दार्थ और भावार्थ का पालन !

आ० क०, ३६५

८. सत्य से भिन्न कोई परमेश्वर है, ऐसा मैंने कभी अनुभव नहीं किया।

आ० क०, ४३२

९. सत्यमय बनने का एकमात्र मार्ग अहिंसा ही है।

आ० क०, ४३२

१०. सत्य का संपूर्ण दर्शन अहिंसा के बिना असंभव है।

आ० क०, ४३२

११. व्यापक सत्य-नारायण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए जीव मात्र के प्रति आत्मवत प्रेम की परम आवश्यकता है।

आ० क०, ४३३

१२. 'परमेश्वर सत्य है' कहने के बदले 'सत्य ही परमेश्वर है' यह कहना ज्यादा मौजूं है।

य० मं०, २

१३. अपनी सुविधा के लिए आदर्श को नीचे गिराने में असत्य है, हमारा पतन है।

य० मं०, ३५

१४. सत्य साध्य है, अहिंसा एक साधन है।

य० मं०, ४२

१५. सत्य ही हरि है, वही राम है, वही नारायण, वही वासुदेव है।

य० मं०, ६१

१६. 'कुछ' होना अर्थात ईश्वर से, परमात्मा से, सत्य से, दूर जा पड़ना, बिलग होना। 'कुछ' मिट जाना अर्थात परमात्मा से मिल जाना। समुद्र में रहनेवाली बूंद समुद्र की महत्ता भोगती है, परंतु इसे वह जानती नहीं।

य० मं०, १०६

१७. सत्य के पालन की इच्छा रखनेवाला अहंकारी कैसे हो सकता है!

य० मं०, १०७

१८. सत्य को पूरी तरह प्राप्त कर लेना अपने को और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेना है, अर्थात संपूर्ण हो जाना है।

स० ह०, ३

१९. मेरी भक्तिपूर्ण खोज ने मुझे 'ईश्वर सत्य है' के प्रचलित मंत्र के बजाय 'सत्य ही ईश्वर है' का अधिक गहरा मंत्र दिया है।

स० ई०, ४

२०. सत्य और अहिंसा अनादि काल से चले आये हैं।

स० ई०, ६

२१. अगर आप सत्य के महासागर के तल पर तैरना चाहते हैं तो आपको शून्य बन जाना होगा।

स० ई०, १६

२२. विचार में, वाणी में और आचार में, सत्य का होना ही सत्य है; जो इस सत्य को संपूर्णतया समझ लेता है, उसे जगत में दूसरा कुछ भी जानने को नहीं रहता।

स० ई०, १९

२३. सत्य की खोज के साधन जितने कठिन हैं, उतने ही सरल भी हैं।

स० ई०, ३१-३२

२४. सत्य का मार्ग जितना सीधा है, उतना ही तंग भी है। यही बात अहिंसा की है। यह खांडे की धार पर चलने के बराबर है।

स० ई०, ३५

२५. सतत साधना के द्वारा ही सत्य और अहिंसा को सिद्ध किया जा सकता है।

स० ई०, ३५

२६. सत्य और असत्य अक्सर एक साथ रहते हैं; भलाई और बुराई बहुधा एक साथ पाई जाती हैं।

स० ई०, ३५

२७. सत्य इतिहास से परे है।

य० अ०, ६३

२८. निर्मल अंतःकरण को जिस समय जो प्रतीत हो, वह सत्य है। उसपर दृढ़ रहने से शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है।

बा० प० ज०, २९

२९. सत्य में से प्रेम की प्राप्ति होती है।

बा० प० ज०, २६

३०. सत्य में मृदुता मिलती है।

बा० प० ज०, २६

३१. सत्यनिष्ठ का पतन संभव ही नहीं।

बा० प० ज०, १६२

३२. जहां सत्य का साम्राज्य है, वहां सफलता हाथ बांधे खड़ी रहती है।

ए० बा०, ६

३३. सत्य-मार्ग पर चलने वाले को संकट के समय हमेशा सत्य-मार्ग सूझ जाता है।

गां० सा०, १४०

३४. स्वभाव से सत्य स्वत:प्रत्यक्ष है। ज्योंही तुम उस अज्ञान के जालों को दूर कर देते हो, जो उसके इर्द-गिर्द फैले हुए हैं, वह स्पष्ट रूप से चमकने लगता है।

सि० गां०, ७

३५. कोई असत्य से सत्य को नहीं पा सकता। सत्य को पाने के लिए हमेशा सत्य का आचरण करना ही होगा।

मे० स० भा०, २८

३६. ज़रा-सा असत्य भी महारोग है, इस बात का भान सदा रहना चाहिए।

स० ई०, १२

३७. जिस लगन के साथ प्रेमी मेहनत करता है, उससे भी ज्यादा लगन सत्य के दर्शन के लिए चाहिए और सत्य के दर्शन के अंत में परमानंद है। फिर भी आशिक की-सी लगन थोड़े ही जिज्ञासुओं में पाई जाती है।

स० ई०, ४४

३८. हमारे विचार में सत्य होना चाहिए, हमारी वाणी में सत्य होना चाहिए और हमारे कर्म में भी सत्य होना चाहिए। जिस मनुष्य ने इस

सत्य को पूर्णतया समझ लिया है, उसके लिए दूसरा कुछ जानने को बाकी नहीं रह जाता।

मो० मा०, २५

३९. सबसे अच्छी बात तो यही है कि झूठ का कोई जवाब ही न दिया जाय। झूठ अपनी मौत मर जाता है। उसकी अपनी कोई शक्ति नहीं होती ; विरोध पर वह फलता-फूलता है।

गां० वा०, ६०

४०. तीखी चटपटी भाषा सत्य के नजदीक उतनी ही विजातीय है, जितनी कि नीरोग जठर के लिए तेज मिर्चियां।

गां० वा०, १४

४१. सत्य के दर्शन बग़ैर अहिंसा के हो ही नहीं सकते। इसीलिए कहा गया है कि 'अहिंसा परमो धर्मः।'

बा० आ०, ५

४२. थोड़ा-सा झूठ भी मनुष्य का नाश करता है, जैसे दूध को एक बूंद जहर भी।

बा० आ०, ५५

४३. अपना सादा ज्ञान और पांडित्य तराजू के एक पलड़े पर और सत्य तथा पवित्रता को दूसरे पलड़े पर रखकर देखो; सत्य और पवित्रता वाला पलड़ा पहले पलड़े से कहीं भारी पड़ेगा।

मे० स० भा०, १६१

४४. जानता हुआ आदमी सत्य कहने से क्यों झिझकता है ? शर्म के मारे ? किसकी शर्म ? अफसर है तो क्या ? नौकर है तो क्या ? बात यह है कि आदत आदमी को खा जाती है। हम सोचें और बुरी आदत से छूट जायं।

बा० आ०, १६३

४५. सत्य-निष्ठा से किये गए कामों के परिणाम अवश्य आयंगे, इस बारे में शंका ही नहीं हो सकती। इतना विश्वास न हो तो हम नीति की रक्षा कभी कर ही नहीं सकते।

बा० प० प्रे०, २४६

४६. अहिंसक सत्य के बारे में ऐसा हो सकता है कि बोलते समय वह कठोर लगे, परंतु परिणाम में वह अमृतमय लगना ही चाहिए। यह अहिंसा की अनिवार्य कसौटी है।

बा० प० प्रे०, ७२

४७. सत्य जहां प्रस्तुत हो, वहां कोई भी कुर्बानी करके उसे कहना चाहिए।

म० डा० १, ७०

४८. किसी भी हालत में रहकर जो सत्य का आचरण कर सकता है, वही सत्यार्थी माना जायगा। व्यापार में किसी को झूठ बोलने की मजबूरी नहीं है और न नौकरी में। जहां मजबूरी दीखे वहां नहीं जाना चाहिए, भले ही भूखों मर जाय।

म० डा० १, २२७

४९. किसी का दुख दूर करने के लिए भी कोई झूठ नहीं बोल सकते।

म० डा० १, २६६

५०. सत्य ईश्वर का केवल एक गुण या एक विभूति नहीं है, बल्कि सत्य ही ईश्वर है। अगर सत्य नहीं है; तो कुछ भी नहीं है।

म० डा० १, २७५

५१. जो मनुष्य सांसारिक वस्तु की प्राप्ति के लिए या और किसी कारण असत्य का सहारा लेता है; राग-द्वेष से भरा है; उसको भगवत-प्राप्ति हो ही नहीं सकती।

म० डा० १, ३१८

५२. सच बात से किसी का भी जी दुखे; तो उसमें हिंसा नहीं है। हमारी इच्छा न होने पर भी किसी का जी दुखे तो उसमें हिंसा नहीं है।

म० डा० १, ३३०

५३. सत्य लाखों लोगों के जीवन से बढ़कर है।

म० डा० २, १८९

५४. जबतक अपने जीवन का अंतिम श्वास चले, तबतक पूरी सचाई से ही रहना चाहिए।

अं० झां०, १८९

५५. मनुष्य का धर्म है कि साधना के पश्चात् जो अपने को सत्य लगे उसी चीज को कहना; भले ही जगत को वह भूल-सी प्रतीत हो।

गां० छ०, ३:

५६. सत्य से ही धर्म बढ़ता है।

प्रा० प्र० १, २:

५७. सच्चा बनने के लिए चाहिए कि हम एकमात्र ईश्वर के ही गुलाम बनें, और किसी के गुलाम न बनें।

प्रा० प्र० १, ८१

५८. दुनिया में सत्य और अहिंसा के विना काम नहीं चलता।

प्रा० प्र० २, ११

५९. जीते-जागते सत्य के विना ईश्वर कहीं नहीं है।

प्रा० प्र० २, ३११

३—अहिंसा

१. कुविचार-मात्र हिंसा है। उतावलापन—जल्दीपन—हिंसा है। मिथ्या भाषण हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जिसकी दुनिया को जरूरत है, उस पर कब्जा रखना भी हिंसा है।

य० मं०, १५

२. अहिंसा के बिना सत्य की खोज असंभव है।

य० मं०, १९

३. मनुष्य को पशु-पक्षियों पर जो प्रभुत्व प्राप्त हुआ है, वह उन्हें मारकर खाने के लिए नहीं, बल्कि उनकी रक्षा के लिए है; अथवा जिस प्रकार मनुष्य एक-दूसरे का उपयोग करते हैं, पर एक-दूसरे को खाते नहीं, उसी प्रकार पशु-पक्षी भी उपयोग के लिए हैं, खाने के लिए नहीं।

आ० क०, ४७

४. बकरों के जीवन का मूल्य मनुष्य के जीवन से कम नहीं है।

आ० क०, २०४

५. जो जीव जितना अधिक अपंग है, उतना ही उसे मनुष्य की क्रूरता से बचने के लिए मनुष्य का आश्रय पाने का अधिक अधिकार है।

आ० क०, २०५

६. अहिंसा मेरा ईश्वर है और सत्य मेरा ईश्वर है। जब मैं अहिंसा को ढूंढ़ता हूं तो सत्य कहता है, उसे 'मेरे द्वारा खोजो !' जब मैं सत्य की तलाश करता हूं तो अहिंसा कहती है; 'मेरे जरिये उसे खोजो !'

स० ई०, ५

७. अहिंसा और प्रेम एक ही चीज है।

स० ई०, १९

८. मैं अपने तमाम प्रयोगों के परिणामस्वरूप विश्वासपूर्वक, इतना कह सकता हूं कि सत्य के संपूर्ण दर्शन अहिंसा के संपूर्ण पालन के बाद ही हो सकते हैं।

स० ई०, ३३

९. अहिंसा के बिना सत्य की खोज और प्राप्ति असंभव है।

स० ई०, ३५

१०. अहिंसा और सत्य आपस में इतने गंथे हुए हैं कि उन्हें एक-दूसरे से सुलझाकर अलग करना लगभग असंभव है।

स० ई०, ३६

११. अहिंसा सर्वोच्च प्रकार की सक्रिय शक्ति है। वह आत्म-बल या हमारे भीतर विराजमान भगवान की शक्ति है।

स० ई०, ३६

१२. हम जिस हद तक अहिंसा को सिद्ध करते हैं, उतनी ही हद तक ईश्वर के सदृश बनते हैं; परंतु हम पूरी तरह ईश्वर कभी नहीं बन सकते।

स० ई०, ३६

१३. अहिंसा रेडियम की तरह काम करती है। रेडियम की छोटी-से-छोटी मात्रा भी किसी रुग्ण अंग के बीच में रख दी जाय तो वह लगातार चुपचाप और बिना रुके काम करता रहता है और अंत में सारे रोग-ग्रस्त अंग को नीरोग बना डालता है, इसी प्रकार थोड़ी-सी भी सच्ची अहिंसा सूक्ष्म और अदृश्य रूप में चुपचाप काम करती है और सारे समाज में व्याप्त हो जाती है।

स० ई०, ३६

१४. मानव-जाति के हाथ में अहिंसा सबसे बड़ा बल है। मनुष्य की

सज्ञ ने विनाश के जो प्रबल-से-प्रबल हथियार निकाले हैं, उनसे भी यह प्रबल है।

स० ई०, ३७

१५. विनाश मानव का धर्म नहीं है।

स० ई०, ३७

१६. दया, अहिंसा, प्रेम और सत्य के सद्गुणों की परीक्षा किसी मनुष्य में तभी हो सकती है, जब उनका मुकाबला क्रूरता, हिंसा, वैर और असत्य आदि से होता है।

स० ई०, ३७

१७. अहिंसा एक व्यापक सिद्धांत है।

स० ई०, ३८

१८. प्रेम और अहिंसा का प्रभाव अद्वितीय है, परंतु वे अपना काम बिना शोरगुल, दिखावे या प्रदर्शन के करते हैं।

स० ई०, ५४

१९. जो एकमात्र सच्ची और प्राप्त करने योग्य स्वतंत्रता है, उसकी ईश्वर हमसे संपूर्ण आत्मसमर्पण से कम कीमत नहीं मांगता; और जब कोई मनुष्य इस प्रकार अपने-आपको ईश्वर में खो देता है, तो वह तुरंत अपनेको सब प्राणियों की सेवा में संलग्न पाता है।

स० ई०, ५४

२०. मानव-जाति को अहिंसा के द्वारा ही हिंसा से छुटकारा पाना होगा। घृणा को प्रेम से ही जीता जा सकता है। बदले में घृणा करने से घृणा का विस्तार और गहराई दोनों बढ़ते हैं।

स० ई०, १३१

२१. मैं एक सांप की जीव-हानि करके भी जिंदा नहीं रहना चाहता। मुझे उसके काटने से मर जाना मंजूर है, मगर उसे मारना मंजूर नहीं।

स० ई०, १८८

२२. अहिंसा और सत्य मेरे दो फेफड़े हैं। मैं उनके बिना जी नहीं सकता।

स० ई०, ११०

२३. अहिंसा का अर्थ है विश्व-प्रेम। अगर कोई पुरुष एक स्त्री को या कोई स्त्री एक पुरुष को अपना प्रेम प्रदान कर देती है तो फिर बाकी सारी दुनिया के लिए रह ही क्या जाता है ?

मं० प्र०, ११२

२४. यह मानना गहरी भूल है कि अहिंसा केवल व्यक्तियों के लिए ही अच्छी है और जनसमूह के लिए नहीं।

सर्वो०, १०

२५. मैं यह जरूर महसूस करता हूं कि किसी मंजिल पर आध्यात्मिक प्रगति का यह तकाजा अवश्य होता है कि हम अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने साथ रहनेवाले प्राणियों की हत्या बंद कर दें।

सर्वो०, ७१

२६. सत्य और अहिंसा की जितनी अनुभूति होगी, उतना ही ज्ञान बढ़ेगा।

सर्वो०, ७७

२७. हिंसा या अहिंसा की अंतिम कसौटी तो आखिर उस कृत्य के पीछे रहा हेतु ही होगा।

सर्वो०, ७८

२८. आमतौर पर जानवरों को न मारने का, और इसलिए उन्हें बचाने का कर्तव्य, निर्विवाद सत्य माना जाना चाहिए।

सर्वो०, ७७

२९. मैं जानवरों को न मारने का सिद्धांत पूरी तरह स्वीकार नहीं कर सकता। जो पशु मनुष्य को खा जाते हैं या नुकसान पहुंचाते हैं, उनकी जान बचाने की मुझमें कोई भावना नहीं है। उनकी वंश-वृद्धि में सहायक होना मैं अनुचित समझता हूं।

सर्वो०, ७८

३०. अच्छे उपायों से ही अच्छे परिणाम निकल सकते हैं और सब में नहीं, तो कम-से-कम अधिकांश मामलों में प्रेम और दया का बल

शस्त्र-बल से कहीं बड़ा होता है। पशुबल के प्रयोग में हानि है, मगर दया-बल के प्रयोग में कभी नहीं।

सर्वो०, १३०-१३१

३१. अहिंसा कोई ऐसी-वैसी चीज नहीं है। उसकी कल्पना कमजोरों के हथियार के रूप में कभी नहीं की गई, बल्कि मजबूत-से-मजबूत हृदयों के अस्त्र के रूप में की गई है।

सर्वो०, १३६

३२. अहिंसा मेरे धर्म का पहला मंत्र है, और वही मेरे धर्म का आखिरी मंत्र है।

य० अ०, १३

३३. आघात के बदले में आघात न करना ही मनुष्य के लिए स्वाभाविक स्थिति है।

य० अ०, २०

३४. एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति के बीच में, एक समाज और दूसरे समाज के बीच में, अथवा सरकार और जनता के बीच में चलने वाले सभी अहिंसात्मक प्रयोगों का परिणाम सदा हार्दिक सहयोग में ही आता है।

य० अ०, ४२

३५. हिंसा से हिंसा के परिणाम पैदा होते हैं और जब तुम एक बार इसको आरंभ कर देते हो, तब कोई सीमा नहीं खींची जा सकती।

हिं० स्व०, ११

३६. अहिंसा अप्रत्यक्ष होती है। तुम्हें तो अहिंसा का बना हुआ शरीर होना पड़ेगा। तुम्हें अहिंसा का जीवन बनाना चाहिए।

ग्ली० बा० फी०, १४

३७. हिंसा का स्थिर जीवन नहीं होता; यह तो निषेधार्थक वस्तु है। हिंसा केवल वहां ही रह सकती है, जहां रुकावट हो।

ग्ली० बा० फी०, १४

३८. अहिंसा शक्ति को नहीं हथियाती। यह शक्ति चाहती भी नहीं। शक्ति तो इसे प्राप्त हो जाती है।

ग्ली० बा० फी०, १५

३९. अहिंसा ही निरपवाद-रूप में जीवन का असली तत्त्व है।

ऐ० बा०, ९५

४०. हमें अपने और शेष सजीव सृष्टि के बीच अधिक-से-अधिक सजीव संबंध अनुभव करना चाहिए।

ऐ० बा०, ११३

४१. पौरुष का सार यह है कि पशु-जगत और वनस्पति-जगत के सभी प्राणियों का ज्यादा-से-ज्यादा ख़याल रखा जाय। जो सुख की खोज में दूसरों का ख़याल नहीं रखता, वह जरूर इसान से कुछ घटिया है। वह विचारहीन है।

ऐ० बा०, ११४

४२. अहिंसा-धर्म केवल ऋषियों तथा संतों के लिए नहीं है। यह जन-साधारण के लिए भी है।

फ़ा० पै०, ४

४३. जो अपनी या अपने अति निकट-संबंधियों या प्रिय जनों की या उनके मान की अहिंसा के द्वारा मौत का सामना करके रक्षा नहीं कर सकता, वह विरोधियों से हिंसा द्वारा ऐसा कर सकता है, या उसे करना चाहिए। जो दोनों में से एक भी नहीं कर सकता, वह भार-रूप है।

फ़ा० पै०, १३

४४. अहिंसा कोई ऐसा गुण तो है नहीं, जो गढ़ा जा सकता हो। यह तो एक अंदर से बढ़नेवाली चीज है, जिसका आधार आत्यंतिक व्यक्तिगत प्रयत्न है।

गां० वा०, ७

४५. सारा समाज अहिंसा पर उसी प्रकार कायम है जिस प्रकार कि गुरुत्वाकर्षण से पृथ्वी अपनी असली स्थिति में बनी हुई है।

गां० वा०, ३१

४६. अहिंसा श्रद्धा और अनुभव की वस्तु है, एक सीमा से आगे तर्क की चीज वह नहीं है।

गां० वा०, ४२

४७. अपने यथार्थ रूप में अहिंसा का अर्थ अत्यंत बड़ा प्रेम है, अत्यंत बड़ी दानशीलता है।

सि० गां०, १५७

४८. अहिंसा का शुद्ध ध्यान रखनेवाला अंत में हिंसा करने में असमर्थ हो जाता है—यानी शरीर से नहीं, बल्कि विचार से।

बा० प० म०, ४०

४९. अहिंसा का रिवाज पड़ गया है, उसी के अनुसार बगैर सोचे जहां तक अपने को बहुत दिक्कत महसूस न हो, वहां तक हिंदुस्तान के हिंदू अपना आचरण करते हैं।

स० ई०, ३७

५०. अहिंसा का ज्ञानपूर्वक पालन मनुष्य को नया जन्म देता है। उसे बदलता है।

स० ई०, ३८

५१. अहिंसा का अर्थ है मारने या हानि पहुंचाने की इच्छा को मिटा देना। अहिंसा ऐसे ही मनुष्यों के प्रति बरती जा सकती है, जो हमसे सब तरह घटिया हों। इसका अर्थ यह हुआ कि पूर्ण अहिंसाधर्मी को अंतिम पूर्णता प्राप्त करनी चाहिए।

म० डा० १ न०, ६

५२. मनुष्य मारना सीखे, उससे पहले उसमें मरने की शक्ति होनी चाहिए।

म० डा० १ न०, १२८

५३. जो मारने की शक्ति गंवा बैठा हो, वह अहिंसा का आचरण नहीं कर सकता। अहिंसा में अत्यंत ऊंचे प्रकार का त्याग समाया हुआ है। कमजोर और कायर बनी हुई जनता त्याग का यह भव्य आचरण नहीं कर सकती।

म० डा० १ न०, २२१

५४. दुष्कृत्य करनेवाल को मारने की जोखिम उठाकर भी अपने स्त्री-बच्चों की रक्षा करने में सच्ची अहिंसा समायी है।

म० डा० १ न०, २३७

५५. अहिंसा सबका भला सोचती है ।

म० डा० १ न०, ३३३

५६. निर्बल की अहिंसा को अहिंसा का नाम देकर हम इस शक्ति की निंदा करते हैं। ऐसी अहिंसा को हम डरपोक की युक्ति कह सकते हैं।

ए० च०, १६

५७. हिंसा से कभी प्रतिहिंसा करने से हिंसा का अंत हरगिज नहीं आयगा ।

बि० कौ० आ० ४५

५८. मरने में मारने से ज्यादा बहादुरी है ।

बि० कौ० आ०, १२६

५९. अहिंसा-धर्म किसी का नाश नहीं करेगा, बल्कि शुद्ध करेगा ।

बि० कौ० आ०, १५३

६०. कोई भी धर्म यह नहीं सिखाता कि हम किसी भी जीव का खून करें।

प्रा० प्र० १, १०५

६१. अहिंसा का दिवाला कभी नहीं निकल सकता ।

प्रा० प्र० १, १६३

६२. आज की बदली हुई हालत में कमजोरों की अहिंसा के लिए जगह नहीं है ।

प्रा० प्र० १, १६३

६३. इस दुखी जगत की पीड़ा मिटाने के लिए, कठिन होने पर भी, सिवा अहिंसा के और कोई सीधा और साफ रास्ता नहीं है। मेरे-जैसे लाखों आदमी इस सत्य को भले ही जीवन में सिद्ध न कर पायं, यह उनकी कमजोरी तथा नाकामयाबी होगी, न कि अहिंसा की ।

प्रा० प्र० १, १६४

६४. अहिंसा कोई हल्दी-मिर्च तो है नहीं, जो बाजार से मोल आ जायगी !

प्रा० प्र० १, १६६

६५. अहिंसा से बदबू कभी आ ही नहीं सकती, क्योंकि उसमें खुशबू ही भरी पड़ी है।

प्रा० प्र० १, १९८

६६. सच्ची अहिंसा यह नहीं है कि बलवान के सामने तो हम अहिंसा का उपयोग करें, लेकिन कमजोर पर हिंसा करें।

प्रा० प्र० १, ३९३

६७. जो आदमी जीव को बना नहीं सकता, उसको लेने का कोई अधिकार कैसे आया !

प्रा० प्र० १, ४४४

६८. क्या पुराने ऋषि-मुनियों ने हमें यह नहीं बताया है कि जो आदमी अहिंसा का पुजारी है, उसका दिल फूल से भी कोमल और पत्थर से भी कठोर होना चाहिए !

प्रा० प्र० २, ४१

६९. अहिंसा कमजोरों का हथियार नहीं, वह बहादुरों का हथियार है। बहादुरों के हाथ में ही वह सुशोभित रह सकता है।

प्रा० प्र० २, १६८

७०. मगर जो आदमी आत्मा से लूला है, पंगु है, अंधा है, वह अहिंसा को समझ नहीं सकता। अहिंसा का पालन कर नहीं सकता।

प्रा० प्र० २, २३६

७१. दूसरों को मिटाने की चेष्टा करनेवालों को खुद मिटना होगा। यह जीवन का कानून है। यह अपने-आपको और अपने धर्म को मिटाने की बात है।

प्रा० प्र० २, २४१

७२. अहिंसा का नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिए, अपमान नहीं करना चाहिए, नम्र होना चाहिए।

प्रा० प्र० २, ३१२

७३. अहिंसा से भरा आदमी मरता है तो उसका नतीजा अच्छा ही होगा।

प्रा० प्र० २, ३२१

४—ब्रह्मचर्य

१. ब्रह्मचर्य के पालन में उपवास अनिवार्य है।

आ० क०, १८१

२. ब्रह्मचर्य का अर्थ है मन, वचन, काय से समस्त इंद्रियों का संयम।

आ० क०, १८१

३. ईश्वर-दर्शन के लिए ब्रह्मचर्य अनिवार्य है।

आ० क०, २७६

४. ब्रह्मचर्य-रहित जीवन मुझे शुष्क और पशुओं-जैसा प्रतीत होता है।

आ० क०, २७६

५. शारीरिक अंकुश से ब्रह्मचर्य का आरंभ होता है। पर शुद्ध ब्रह्मचर्य में विचार की मलिनता भी न होनी चाहिए। संपूर्ण ब्रह्मचारी को तो स्वप्न में भी विकारी विचार नहीं आते।

आ० क०, २७७

६. मन को विकारपूर्ण रहने देकर शरीर को दबाने की कोशिश करना हानिकर है।

य० मं०, २४

७. विषय-मात्र का निरोध ही ब्रह्मचर्य है।

य० मं०, २६

८. ब्रह्मचर्य की संकुचित व्याख्या से नुकसान हुआ है।

य० मं०, २७

९. ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्म की—सत्य की—शोध में चर्या, अर्थात् तत्संबंधी आचार।

य० मं०, २८

१०. सबसे बड़े अनुशासनों में से शील एक है, जिसके बिना मन आवश्यक दृढ़ता प्राप्त नहीं कर सकता।

हिं० स्व०, ८५

११. काम अंधा होता है, उसमें विवेक नहीं होता। वह तो जिस तरह हो सके, अपनी तृप्ति चाहता है।

स्त्रि० स०, ५५

१२. कामाग्नि की तृप्ति के कारण किया हुआ संभोग त्याज्य है।

स्त्रि० स०, ७६

१३. जो मनुष्य अपने जीवन को धार्मिक बनाना चाहता है, जो जीव-मात्र की सेवा को आदर्श समझकर संसार-यात्रा पार करना चाहता है, उसके लिए ही ब्रह्मचर्य-मर्यादा का विचार किया जा सकता है।

स्त्रि० स०, ७७

१४. ब्रह्मचर्य का पालन भी ब्रह्म को ढूंढ़ने का एक जरिया है। उसके बिना ब्रह्म नहीं मिलता और ब्रह्म के मिले बिना ब्रह्मचर्य का पूरा पालन नहीं हो सकता।

स० ई०, ४५

१५. ब्रह्मचर्य के पालन के लिए रामबाण उपाय तो इस बात का अनुभव होना है कि यह जीव परमात्मा का ही अंश है और परमात्मा का हमारे हृदय में वास है।

म० डा० १, ११६

१६. ब्रह्मचर्य मन की स्थिति है। अलबत्ता सब तरह के निग्रह से उसे मदद जरूर मिलती है।

म० डा० १, ११६

१७ किसी को ब्रह्मचर्य पालने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। वह तो भीतर से पैदा होना चाहिए।

म० डा० २, २५

१८. स्त्री का परिग्रह अगर आप काम-वासना की तृप्ति के लिए करते हों तो यह बुरे-से-बुरा परिग्रह है।

म० डा० २, २८१

१९. ब्रह्मचर्य पालन करने का अर्थ है निर्विकार होना। जो निर्विकार हो, उसके सामने अप्सरा भी आकर क्यों न खड़ी रहे, उसकी दृष्टि दूषित नहीं होती।

ए० च०, ६६

२०. निर्दोष यौवन ऐसी अमूल्य संपत्ति है, जिसे क्षणिक उत्तेजना के लिए, झूठे आनंद के लिए, नष्ट नहीं करना चाहिए।

मो० मा०, ५८

२१. हृदय पवित्र हो, तो विकारेंद्रिय के विकारी होने की बात नहीं रहती।

गां० सा०, १६१

२२. पुरुष को कवियों ने सिंह की उपमा दी है। चिंतन करने से हम सबको इंद्रिय-वन के राजा बनने का सामर्थ्य प्राप्त होगा।

गां० सा०, १४२

२३. विषयासक्ति जगत में जरूर रहेगी, परंतु जगत की प्रतिष्ठा ब्रह्मचर्य पर निर्भर है और रहेगी।

बा० प० प्रे०, २६२

२४. मनुष्य का पतन विषयों के गुप्त सेवन से होता है। ऐसा करने से मर्यादा नहीं रहती।

बा० प० प्रे०, २७५

५--अस्तेय

१. दूसरे की वस्तु को उसकी अनुमति के बिना लेना चोरी है ही, परंतु मनुष्य अपनी कही जानेवाली चीज भी चुराता है। उदाहरणार्थ, किसी पिता का अपने बालकों के जाने बिना, उन्हें मालूम न होने देने की इच्छा से, चुपचाप किसी चीज का खाना।

य० मं०, ४४

२. किसी चीज के लेने की हमें आवश्यकता न हो, उसे जिसके पास वह है, उसकी आज्ञा लेकर भी लेना चोरी है। ऐसी एक भी चीज न लेनी चाहिए, जिसकी जरूरत न हो।

य० मं०, ४६

३. प्रायः हममें से सब अपनी आवश्यकताओं को, जितनी होनी चाहिए, उससे अधिक बढ़ा लेते हैं। विचार करने से हमें मालूम होगा कि हम अपनी बहुतेरी आवश्यकताओं को कम कर सकते हैं। अस्तेय-व्रत

का पालन का निश्चय करनेवाला उत्तरोत्तर अपनी आवश्यकताओं को कम करेगा।

य० मं०, ४६

४. सूक्ष्म और आत्मा को नीचे गिरानेवाली या पतित बनाये रखनेवाली चोरी, मानसिक है। मन से किसी चीज को पाने की इच्छा करना या उसपर झूठी नजर डालना चोरी है।

य० मं०, ४७

५. अस्तेय-व्रत का पालक भविष्य में प्राप्त होनेवाली चीज़ों के लिए हवाई किले नहीं बांधा करता।

य० मं०, ४८

६. अस्तेय-व्रत का पालन करनेवाले को बहुत नम्र, बहुत विचारशील, बहुत सावधान और बहुत सादगी से रहना पड़ता है।

य० मं०, ५०

७. मैं तो कहूंगा कि एक तरह से हम सब चोर हैं। अगर मैं कोई ऐसी चीज़ लेता हूं, जिसकी मुझे तात्कालिक आवश्यकता नहीं है और उसे अपने पास रखता हूं, तो मैं उसे किसी दूसरे से चुराता ही हूं।

स० ई०, २६

८. मनुष्य अपनी कम-से-कम जरूरत से ज्यादा जितना भी लेता है, वह चोरी करता है।

स० ई, ३९

९. जो चीज हमें जिस काम के लिए मिली हो, उसके सिवा उसे दूसरे काम में लेना, या जितने वक्त के लिए मिली है उससे ज्यादा वक्त तक काम में लेना, यह भी चोरी ही है।

स० ई०, ४७

१०. अस्तेय का अर्थ 'चोरी नहीं करना', इतना ही नहीं है; जिस वस्तु की हमें आवश्यकता नहीं है, उसे रखना—लेना भी चोरी है। चोरी में हिंसा तो भरी ही है।

बा० आ०, १७

११. जरूरत से ज्यादा चीजें इस्तेमाल करना भी हिंसा है, चोरी है, परिग्रह है।

बि० कौ० आ०, ६६

६—अपरिग्रह

१. अपरिग्रही बनने में, समभावी होने में हेतु का—हृदय का—परिवर्तन आवश्यक है।

आ० क०, २२८

२. सत्य-शोधक अहिंसक परिग्रह नहीं कर सकता।

य० मं०, ५१

३. यदि सब अपनी आवश्यकतानुसार ही संग्रह करें, तो किसी को तंगी न हो और सब संतोष से रहें।

य० मं०, ५३

४. हम आदर्श को ध्यान में रखकर नित्य अपने परिग्रह की जांच करते रहें और जैसे बने, वैसे उसे घटाते रहें। सच्ची संस्कृति, सुधार और सभ्यता का लक्षण परिग्रह की वृद्धि नहीं, बल्कि विचार और इच्छा-पूर्वक उसकी कमी है।

य० मं०, ५४

५. अभ्यास द्वारा आदमी अपनी आवश्यकताओं को कम कर सकता है, और जैसे-जैसे कम करता जाता है, वैसे-वैसे वह सुखी और सब तरह आरोग्यवान बनता है।

य० मं०, ५६

६. जो मनुष्य अपने दिमाग में निरर्थक विचार ठूंस रखता है, वही परिग्रही है। जो विचार हमें ईश्वर से विमुख रखते हैं या ईश्वर की ओर नहीं ले जाते, वे इस परिग्रह में शुमार होते हैं, और इसलिए त्याज्य हैं।

य० मं०, ५८

७. सुवर्ण नियम यह है कि जो चीज़ लाखों को नहीं मिल सकती, उसे लेने से हम दृढ़तापूर्वक इंकार कर दें।

स० ई०, १२३

८. अगर हम आज की चिंता कर लेंगे, तो कल की चिंता भगवान कर लेगा।

स० ई०, १२३

९. अपरिग्रह से मतलब यह है कि हम ऐसी कोई चीज संग्रह न करें जिसकी हमें आज दरकार नहीं है।

बा० आ०, १३

१०. शुद्ध सत्य की दृष्टि से यह शरीर भी एक परिग्रह है।

मो० मा०, ३१

११. परिग्रही के लिए स्थूल अहिंसा का भी पूरा पालन असंभव-सा है। जो अपनी जायदाद रखता है, वह उसकी रक्षा का भी उपाय करेगा ही। उसमें कहीं-न-कहीं सजा की गुंजाइश जरूर रहेगी। जो सब चीजों से अपनापन हटाकर, उदासीन होकर, व्यवहार करता है, वही स्थूल अहिंसा का पूरा पालन कर सकता है।

स० ई०, ३९

१२. अपरिग्रह-व्रत के पालन में ध्यान रखने की मुख्य बात यह है कि अनावश्यक कुछ भी संग्रह न किया जाय।

गां० सा०, १६३

७—अभय

१. लोगों के लिए सच्ची दवा तो उनके डर को भगाना है।

आ० क०, ३५५

२. भय-मात्र से तो वही मुक्त हो सकता है, जिसे आत्म-साक्षात्कार हुआ हो। अभय अपूर्व स्थिति की पराकाष्ठा—हद—है।

य० मं०, ६४

३. शक्ति भय के अभाव में रहती है, न कि मांस या पुट्ठों के गुणों में, जो कि हमारे शरीर में होते हैं।

हिं० स्व०, ४४

४. जिस आदमी ने अपने आप को पा लिया है और जो केवल परमात्मा से डरता है, वह किसी दूसरे से नहीं डरेगा।

हिं० स्व०, ८०

५. श्मशान में सोते हुए भी निडर रहना मनुष्य का कर्त्तव्य है। परंतु संभव है कि श्मशान में सोना शुरू करनेवाला आदमी सोते ही डर के मारे मर जाय।

गां० सा०, ८५

६. खतरे का डर छोड़ना जरूरी होता है। वह आ पड़े तो उसे उठा लेना जरूरी होता है। लेकिन बिना कारण जो उसकी ओर दौड़ता है, वह सिपाही नहीं, बल्कि मूर्ख है।

बा० प० स०, ६३

७. निर्भयता का अर्थ समस्त बाहरी भयों से स्वाधीनता है; जैसे रोगों का भय, शारीरिक चोट या मृत्यु का भय, अपने अत्यंत प्रियों अथवा निकटवर्तियों को खोने का भय, ख्याति-नाश का भय, या अप्रसन्न करने का भय, आदि।

सि० गां०, १५

८. जब हम धन, कुटुंब तथा शरीर के मोह को त्याग देते हैं, तब हमारे हृदयों में भय का कोई स्थान नहीं रहता।

सि० गां०, १८

९. दूसरे श्रेष्ठ गुणों के विकास के लिए निर्भयता अनिवार्य है।

सि० गां०, २४३

१०. अविश्वास भी डर की निशानी है।

गां० वा०, २५५

११. निर्भयता—अभय—आध्यात्मिकता की पहली शर्त है। कायर मनुष्य कभी सदाचारी और नीतिमान हो ही नहीं सकता।

मो० मा०, ६६

१२. हमें सब बाह्य डरों को छोड़ देना चाहिए, परंतु आंतरिक शत्रुओं से हमें सदा डरना चाहिए।

सि० गां०, १५

८—अस्वाद

१. जिस मनुष्य में विषय-वासना रहती है, उसमें जीभ के स्वाद भी अच्छी मात्रा में होते हैं।

आ० क०, २७९

२. मनुष्य को स्वाद के लिए नहीं, बल्कि शरीर के निर्वाह के लिए ही खाना चाहिए।

आ० क०, २८०

३. किसी पदार्थ का स्वाद बढ़ाने, बदलने या उसके अस्वाद को मिटाने की गरज से उसमें नमक वग़ैरा मिलाना व्रत का भंग करना है।

य० मं०, ३१

४. थोड़ा भी स्वाद किया कि शरीर भ्रष्ट हुआ।

य० म०, ३४

५. जो-कुछ बना है और जो हमारे लिए त्याज्य नहीं है, उसे ईश्वर की कृपा समझकर, मन में भी उसकी टीका न करते हुए, संतोषपूर्वक, शरीर के लिए जितना आवश्यक हो, उतना ही खाकर हम उठ जायं। ऐसा करनेवाला सहज ही अस्वाद-व्रत का पालन करता है।

य० मं०, ३८

६. जीभ को जीत लेना सब वस्तुओं को जीत लेने के बराबर है।

म० डा० १ न०, २८०

७. जिस चीज के लेने की जरूरत न हो या इच्छा न हो, उसका स्वाद हमें क्यों जानना चाहिए!

बा० प० मी, २३

९—हृदय-शुद्धि

१. शुद्ध हृदय तो स्वर्ग और नरक दोनों का पार पा सकता है।

म० डा० १, २८८

२. जैसे-जैसे मनुष्य ज्यादा पवित्र होगा, वैसे-वैसे वह अधिक प्रवृत्ति-मय होगा। अधिक-से-अधिक कर्मशील मनुष्य ज्यादा-से-ज्यादा संयमी होता है। इसे तुम समाधि की हालत भी कह सकते हो।

म० डा० २, २४६

३. शुद्ध हृदय से निकला हुआ वचन कभी निष्फल नहीं होता।

बा० आ०, १३३

४. जिस आदमी का हृदय पवित्र नहीं है, उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती।

सि० गां०, १८

५. शुद्ध भावना से—शुद्ध हृदय से, इस परमात्मा-रूपी आत्मा को संतोष देना ही मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है।

ए० च०, १४३

६. शुद्ध चित्त को किसी का दुख नहीं लगता। उसमें किसी का दोष नहीं ठहरता, वह किसी का बुरा नहीं देखता। यह भव्य स्थिति है।

बा० प० म०, ३८

७. बलवान हो या निर्बल, गरीब हो या पूंजीपति, लेकिन जिसका मन साफ है, उसके पास सभी-कुछ है।

अं० भां०, १७८

१०—विकार पर विजय

१. विकारों के लिए तालीम कैसी! वे तो अपने-आप फूट निकलेंगे।

बा० प० प्रे०, १७७

२. यह विकार ऐसी सूक्ष्म वस्तु है कि हम उसे हमेशा पहचान नहीं सकते।

बा० प० प्रे०, २४१

३. जो स्त्री या पुरुष मन से भी विकार को पोषण देता है, वह व्यभिचारी है।

म० डा० २, ४६

४. विकार को वश में करने के लिए अंतर्मुख बनने की जरूरत है। उन्नति का मूल आत्मसमर्पण है; उन्नति का अर्थ है आत्म-ज्ञान।

म० डा० ३, ८१

५. विकार आग की तरह है। वह मनुष्य को घास की तरह जलाता है।

गां० वा०, ८९

६. विकारी विचार भी बीमारी की निशानी है। इसलिए हम सब विकारी विचार से बचते रहें।

बा० आ०, ७७

७. जो निर्विकार है, उसमें क्रोध, मोह, असत्य, हिंसा, चोरी, झूठ, परिग्रह आदि कुछ भी नहीं हो सकता। उस आदमी में ऐसे अवगुण प्रवेश ही नहीं कर सकते।

ए० च०, ६९

११—संयम

१. मनुष्य किसी भी निमित्त से संयम क्यों न पाले, उसमें उसे लाभ ही है।

आ० क०, २८९

२. योगी और संयमी के आहार भिन्न होने चाहिए, उनके मार्ग भिन्न-भिन्न होने चाहिए।

आ० क०, २८७

३. आत्म-संयम वही रख सकता है जो सदाचार के नियमों का पालन करता है, किसी को धोखा नहीं देता, सत्य का त्याग नहीं करता और अपने माता-पिता, पत्नी-बच्चों, नौकरों और पड़ोसियों के प्रति अपना फ़र्ज़ अदा करता है।

सर्वो०, ६१

४. संयम पालन करना हो तो वह स्वाभाविक रीति से पालन करना चाहिए।

बा० प० ज०, २४०

५. संयम में ही सुख है।

बा० प० ज०, २४५

६. जीवन संयम के लिए है।

बा० प० ज० २५२

७. सर्वोच्च पूर्णता की प्राप्ति सर्वोच्च संयम के बिना संभव नहीं है।

गां० वा०, ३८

८. संयम-हीन स्त्री या पुरुष तो गया-बीता समझिये। इंद्रियों को निरंकुश छोड़ देनेवाले का जीवन कर्णधार-हीन नाव के समान है, जो निश्चय ही चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जायगी।

गां० वा०, ११९

९. जो आदमी संयम से मुक्त रहने का, अर्थात इंद्रियों के भोग का, रास्ता चुन लेता है, वह विकारों का क्रीत दास रहेगा; और जो आदमी अपने को नियमों और पाबंदियों से बांध लेता है वह मुक्त हो जाता है।

वि०, ३८

१०. कुदरत बड़ी कठोर है और अपने कानूनों के ऐसे किसी भंग के लिए पूरा बदला लेगी। नैतिक परिणाम केवल नैतिक नियंत्रणों से ही उत्पन्न किये जा सकते हैं। दूसरे सारे नियंत्रण उस हेतु को ही खत्म कर देते हैं, जिसके लिए वे लगाये जाते हैं।

मो० मा०, १०५

११. काम-वासना की विजय किसी पुरुष या स्त्री के जीवन का सबसे ऊंचा पुरुषार्थ है। काम-वासना पर विजय प्राप्त किये बिना मनुष्य अपने पर शासन करने की आशा नहीं रख सकता।

मो० मा०, १०६

१२. दुनिया में रहते हुए भी सेवा-भाव से और सेवा के लिए ही जो जीता है, वह संन्यासी है।

स० ई०, ४८

१३. जिस समाज में प्रौढ़ संन्यासी विचरते हों, जिस समाज में धर्म की, और अर्थ की कंगाली नहीं होती, वह पराधीन नहीं होता।

स० ई० ६८

१४. संन्यास-आश्रम जिंदा होता तो दूसरे पासवाले धर्मों पर भी संन्यासियों का असर पड़े बिना न रहता। संन्यासी हिंदूधर्म का ही नहीं, सभी धर्मों का है।

स० ई०, ६८

१५. असली गुफा हृदय में है और श्मशान भी वहीं है। हम इस गुफा में रहकर विकार-मात्र की राख कर डालें, तब सच्चा संन्यास कहलायेगा।

म० डा० २, ८६

१२—मन पर नियंत्रण

१. मन को वश में करना तो वायु को वश में करने से भी कठिन है।

आ० क०, १८२

२. अंकुश अंदर का ही लाभदायक हो सकता है।

आ० क०, २४८

३. भावना शुद्ध हो तो संकट का सामना करने के लिए सेवक और साधन मिल ही जाते हैं।

आ० क०, २५२

४. मनुष्य का मनुष्यत्व स्वेच्छा से अंकुश में रहने में है।

आ० क०, २७७

५. मन का मैल तो विचार से, ईश्वर के ध्यान से और आखिर ईश्वरी प्रसाद से ही छूटता है। विकारयुक्त मन विकारयुक्त आहार की खोज में रहता है। विकारी मन अनेक प्रकार के स्वादों और भोगों की तलाश में रहता है और बाद में उन आहारों तथा भोगों का प्रभाव मन पर पड़ता है।

आ० क०, २८८

६. मन के विकारों को जीतना, संसार को शस्त्र-युद्ध से जीतने की अपेक्षा, मुझे कठिन मालूम होता है।

आ० क०, ४३३

७. अवांछनीय विचारों को दूर रखने की भी कोई कुंजी है। परन्तु वह हरएक को अपने-अपने लिए स्वयं ही ढूँढ़ लेनी होती है।

स० ई०, ११७

८. सदाचार का पालन करने का अर्थ : अपने मन और विकारों पर प्रभुत्व पाना।

स० ई०, ४५

९. हम अपने विकारों का जितना पोषण करते हैं, वे उतने ही निरंकुश बनते हैं।

सर्वो०, ४५

१०. हम अपनी लालसाओं को जितना तृप्त करते हैं, वे उतनी ही बेलगाम बन जाती हैं।

हिं० स्व०, ६१

११. जो मनुष्य मन जिधर ले जाय उधर इंद्रियों को भी जाने देता है, उसका नाश ही होता है।

बा० प० ज०, ३७

१२. मानव-विकार हवा से भी जल्दी चलने वाले होते हैं और उन्हें पूरी तरह वश में रखने के लिए धीरज की जरूरत होती है।

खा०, ११

१३. मन को जीतना सरल नहीं है; लेकिन प्रयत्न से वह जीता जा सकता है, ऐसी अटल श्रद्धा रखनी चाहिए।

बा० प० प्रे०, १६

१४. अपने मन को मंदिर बनाओ और उस मंदिर में प्रीति बसाओ, तो इसमें भी अहिंसा का शिक्षण है।

प्रा० प्र० २, २२

१५. अगर तू केवल अपने मन-मंदिर में ज्योति जगा लेगा तो तेरा सारा काम बन जायगा। उसके बाद तो सारी दुनिया में ज्योति या प्रकाश ही देखेगा। अंधेरा कहीं रहेगा ही नहीं। इसी तरह का चमत्कार सत्य और अहिंसा में भरा है।

प्रा० प्र० २, २२

१६. कोई मिस्कीन हो, अनपढ़ हो, या पढ़ा-लिखा हो, मन है तो सब-कुछ है। मन चंगा तो भीतर में गंगा।

प्रा० प्र० २, ३२८

१३—त्याग

१. त्याग के क्षेत्र की सीमा ही नहीं है।

आ० क०, १८१

२. जहां अमुक वस्तु के प्रति संपूर्ण वैराग्य उत्पन्न हो गया है, वहां उसके विषय में व्रत लेना अनिवार्य हो जाता है।

आ० क०, १७८

३. भोग का परिणाम नाश है। त्याग का फल अमरता है।

आ० क०, १३४

४. त्याग का अर्थ संसार से भाग कर अरण्यवास करना नहीं, बल्कि जीवन की समस्त प्रवृत्तियों में त्याग की भावना का होना है।

य० मं०, १३०

५. निष्कामता या त्याग सिर्फ उसकी बात करने से नहीं आता। वह बुद्धिबल से प्राप्त नहीं होता। वह सतत हृदय-मंथन से ही सिद्ध हो सकता है।

स० ई०, ६२

६. त्याग की प्राप्ति के लिए सम्यक ज्ञान जरूरी है।

स० ई०, ६२

७. जिस त्याग से पीड़ा होती है, उसकी पवित्रता नष्ट हो जाती है और अधिक जोर पड़ने पर वह खत्म हो जाती है।

सर्वो०, २०

८. शांति और आत्म-त्याग का मार्ग लोक-मत को शिक्षित करने का छोटे-से-छोटा रास्ता है, और इसलिए उसकी जीत दुनिया की दृष्टि में सत्य की जीत होती है।

य० अ०, २१

९. त्याग तथा कष्ट का नियम विश्वव्यापी नियम है, जिसमें किसी अपवाद की गंजाइश नहीं है।

सि० गां० १३२

१०. प्रेम जिस न्याय को प्रदान करता है, वह है त्याग; और कानून जिस न्याय को प्रदान करता है, वह है सजा।

गां० वा०, ११४

११. मनुष्य की देह भोग के लिए हर्गिज नहीं है, मात्र सेवा के लिए है। त्याग में रहस्य है, जीवन है; भोग में मृत्यु है।

गां० वा०, १२२

१२. वैराग्यहीन त्याग, त्याग नहीं है।

म० डा० १ न०, ४११

१३. व्यक्ति अगर समझ के साथ त्याग करेगा तो वह समस्त मानव-जाति को अपनी सेवा के क्षेत्र में अवश्य समा लेगा।

ए० च०, १७९

१४. त्याग से प्रसन्नता न हो तो वह किसी काम का नहीं। त्याग करने और मुंह फुलाने का मेल नहीं बैठता।

वि०, ८८

१५. त्याग की कोई हद नहीं है। ज्यों-ज्यों हमारा त्याग बढ़ेगा, त्यों-त्यों आत्मा के दर्शन हम अधिक करेंगे। मन की गति परिग्रह छोड़ने की तरफ होगी और शरीर की शक्ति के अनुसार हम त्याग करेंगे, तो अपरिग्रह-व्रत का पालन हुआ माना जायगा।

गां० सा०, १९३

१६. कोई भी इंसान, जो पवित्र है, अपनी जान से ज्यादा कीमती चीज कुरबान नहीं कर सकता।

प्रा० प्र० २, २९०-९१

१४—तपस्या

१. हमें अपने जीवन में तपश्चर्या और प्रायश्चित्त की आदत डालनी चाहिए। कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसे तपस्या से प्राप्त न किया जा सके।

खा०, ३२३

२. तपस्या जीवन की सबसे बड़ी कला है।

गां० वा०, १११

३. यदि तप आदि के साथ श्रद्धा, भक्ति, नम्रता न हो तो तप एक मिथ्या कष्ट है। वह दंभ भी हो सकता है।

गां० वा०, १११

१५—क्षमा

१. क्षमा में सजा से अधिक बहादुरी है। दंड देने की शक्ति होने पर भी दंड न देना सच्ची क्षमा है।

सर्वो० ९८

२. क्षमा दंड से अधिक पुरुषोचित है।

गां० वा०, ४०.

३. जीवन-दान सब दानों से महानतम है। जो आदमी इसे देता है, वह वास्तव में वैर-विरोध को बेकार कर देता है।

सि० गां०, १५७

१६—दया

१. यदि हम स्वयं मानवीय दया से शून्य हैं तो उसके सिंहासन के निकट दूसरों की निष्ठुरता से मुक्ति पाने की याचना हम नहीं कर सकते।

मे० स० भा०, २६६

२. दया अहिंसा की विरोधी नहीं है और विरोधी हो तो वह दया नहीं है। दया को अहिंसा का मूर्त स्वरूप मान सकते हैं।

म० डा० १, १४८

३. जब आत्मा शरीर धारण करती है, तब उसमें अहिंसा दया के रूप में मूर्तिमान होती है।

म० डा० १, १४९

४. स्नेहियों के प्रति वीतराग स्थिति उत्पन्न हो जाय, तभी हृदय सचमुच दयावान बनता है और स्नेहियों की सेवा करता है।

गां० सा०, १४१

५. स्वयं अपने ऊपर दया करके हम सब जीवों को समान मानें, उन पर दया करें तथा अपने किसी भी सुख के लिए जीव-हानि करते हुए चौंकें।

गां० सा०, १४४

६. असत्य आचरण करने वाले में दयाभाव हो, तो उसे अपने दोष का भान होता है, वह खुद शर्माता है और दुबारा न करने का निश्चय करता है।

स० ई०, १४

७. जुल्म करनेवाला जुल्म छोड़े तो उसका श्रेय होता है, और दबाया हुआ अपने-आप छूट जाता है।

म० डा० २, २७८

१७—परोपकार

१. परोपकार का अर्थ है पड़ौसी की सेवा अथवा यों कहें कि ईश्वर-भक्ति ।

ए० च०, ४८

२. मनुष्य जीते-जी अपने-जैसे मनुष्यों के प्रति जो भलाई करता है, वही उसकी सच्ची पूंजी है ।

ए० च०, १७०

३. जिसका मन परोपकार में रमा रहता है और जो अंत तक ऐसी हालत में बना रहता है, उसका जन्म सफल हुआ है ।

म० डा०१, २२९

४. जो मनुष्य किसी का भी बोझ हल्का करता है, वह निकम्मा नहीं है ।

बा० आ०, १४५

१८—सेवा

१. ईश्वर की पहचान सेवा से ही होगी—यह मानकर मैंने सेवा-धर्म स्वीकार किया था ।

आ० क०, १३७

२. सेवा के दाम नहीं लिये जा सकते ।

आ० क०, १९०

३. सार्वजनिक सेवक के लिए निजी भेंटें नहीं हो सकतीं ।

आ० क०, १९२

४. सेवा की अभिरुचि कुकुरमुत्ते की तरह बात-की-बात में तो उत्पन्न होती नहीं । उसके लिए इच्छा चाहिए और बाद में अभ्यास ।

आ० क०, १९३

५. सेवा के लिए ब्रह्मचर्य आवश्यक है ।

आ० क०, १९३

६. शुद्ध लोक-सेवा में प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष रीति से राजनीति मौजूद ही रहती है ।

आ० क०, ३९१

७. यह शरीर हमें इसलिए दिया गया है कि इससे हम सारी सृष्टि की सेवा कर सकें ।

मं० प्र०, १४

८. निष्काम सेवा परोपकार नहीं, अपना उपकार है ।

य० मं०, १२६

९. सेवा में अपनी सुविधा के विचार को कोई स्थान ही नहीं है । सेवक की सुविधा को देखने वाला स्वामी ईश्वर है ।

य० मं०, १३६

१०. जो अपने मानव-बंधुओं की सेवा करता है, उसके हृदय में निवास करने की भगवान स्वयं इच्छा करते हैं ।

स० ई०, ४६

११. सेवा और अत्यंत सादगी का जीवन उत्तम उपदेश है । गुलाब के फूल को कोई उपदेश देने की जरूरत नहीं पड़ती, वह सिर्फ अपनी सुगंध फैलाता है । यह सुगंध ही उसका अपना उपदेश है ।

स० ई०, ६८

१२. मनुष्य-विजय तब हुई मानी जायगी, जब हमारे जीवन का नियामक उसूल, जीवन-संग्राम के बजाय, पारस्परिक सेवा की प्रतियोगिता हो जाय ।

स० ई०, १२५

१३. दुखी और पीड़ित कौन है? दलित और गरीबी के मारे लोग। इसलिए जो भक्त बनना चाहता है उसे इन लोगों की तन, मन और आत्मा से सेवा करनी पड़ेगी ।

स० ई०, १२५

१४. सेवा तबतक संभव नहीं, जबतक उसका मूल प्रेम या अहिंसा न हो ।

स२ ई०, १२७

१५. जब कोई पुरुष या स्त्री सेवा के खातिर शरीर-श्रम करे, तभी उसे जीने का हक होता है ।

सर्वो०, १६२

१६. जो स्वार्थ को छोड़ने और मनुष्य-जन्म की शक्ति की आवश्यकता स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं, उसके लिए सेवा का मार्ग दुर्गम है।

स० ई०, १२८

१७. जो सेवा करना चाहता है, वह अपने आराम का विचार करने में एक क्षण भी व्यर्थ खर्च नहीं करेगा, क्योंकि उसे वह प्रभु की मर्जी पर छोड़ देता है।

सर्वो०, १६

१८. राज्य के द्वारा बनायी गई सीमाओं के बाहर अपने पड़ौसियों की सेवा करने की कोई मर्यादा नहीं है। ईश्वर ने उन सीमाओं का कभी निर्माण नहीं किया।

सर्वो०, १७४

१९. सच्चे दिल और सेवा की भावना से किये हुए काम का अंत में तो सभी पर असर पड़ेगा।

स्त्रि० स०, ४

२०. जिनमें सेवा की जीती-जागती भावना भरी है, वे किसी भी हालत में रहें, सदा सेवा करेंगे।

स्त्रि० स०, ८२

२१. जो मानव-जाति की सेवा करने का दावा करे उसका यह कर्त्तव्य है कि वह उनसे नाराज न हो, जिनकी वह सेवा कर रहा है।

सि० गां०, २४४

२२. दृश्य ईश्वर क्या है ? गरीब की सेवा।

गां० वा०, १०६

२३. सेवा भी उसकी करो, जिसे सेवा की जरूरत है। जिसे सेवा की जरूरत नहीं है, उसकी सेवा करना ढोंग है। वह तो दंभ है।

गां० वा०, १०८

२४. धर्म तो कहता है, "मैं सेवा हूँ, मुझे विधाता ने अधिकार दिया ही नहीं है।"

गां० वा०, १०४

२५. सेवा करने वाले को तो अपनी लाज, आबरू, मान, सर्वस्व होम करके ही प्रजा की सेवा का इरादा करना चाहिए।

गां० वा०, २५३

२६. शून्यवत होकर रहने का मतलब है अच्छा लेने में सबसे पीछे रहना। सबकी सेवा करना, उपकार की आशा न रखना, और कष्ट सहन करने में दूसरों से पहल करना। जो इस तरह शून्यवत रहेगा, वह अपने कर्त्तव्यों में तो डूबा ही रहेगा।

म० डा०१, २६६

२७. हम खुद दिन-दिन शुद्ध होते जायं, एक भी गंदा विचार मन में न आने दें, तो यह भी मेरे खयाल से सेवा ही है।

म० डा०१, ३१८

२८. सब तरह की निःस्वार्थ सेवा का फल आत्म-शुद्धि होता है।

म० डा०२, ६४

२९. जो लोग सेवा-कार्य में लगे हुए हैं उनके सामने हमेशा नहीं, पर अक्सर कठिनाइयां होती ही हैं।

म० डा०२, १४१

३०. बीमार सेवा लेते हैं और सेवा नहीं कर सकते, इस बात का अफसोस करते हैं। यह बड़ी भूल है। बीमार शुद्ध विचारों से सेवा करते हैं। कम-से-कम सेवा ले कर सेवा करनेवालों को अपने प्रेम से नहला कर सेवा करते हैं। खुद मुफलिस होकर भी सेवा करते हैं। हमें यह कभी न भूलना चाहिए कि भगवान का शुद्ध चिंतन भी सेवा ही है।

मा० डा०२, २३१

३१. परमार्थ की दृष्टि से की हुई सारी वृत्ति निवृत्ति है और मोक्ष का कारण है। दूसरों की सेवा ही परम अर्थ है।

म०डा०१ न०, २३४

३२. मानव जाति की सेवा भी अंत में तो अपनी ही सेवा है और अपनी सेवा का अर्थ है आत्म-शुद्धि।

म० डा०१ न०, २७१

३३. अपनी सेवा किये बिना कोई दूसरे की सेवा करता ही नहीं

और दूसरे की सेवा किये बिना जो अपनी ही सेवा करने के इरादे से कोई काम शुरू करता है, वह अपनी और संसार की हानि करता है।

स० ई०, ५५

३४. शरीरधारी की सेवा करने की शक्ति की मर्यादा होती है।

स० ई०, ५४

३५. संत पुरुष के लिए एकांत में रहकर विचार-मात्र से भी सेवा कर सकना संभव है। ऐसा लाखों में एक निकल सकता है।

म० डा०२, १५

३६. तन, मन, धन से चुपचाप सेवा करनेवाले की सेवा निष्फल कभी जाती ही नहीं। अपनी आत्मा को, अपने ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए उसकी दी हुई शक्ति का सदुपयोग करने के खातिर ही सेवा है, बाकी तो दंभ ही कहलायगा।

बि० कौ० आ०,१७१

३७. जिसे सेवा करनी है, उसे अपने शरीर की रक्षा पहले करनी चाहिए।

बि० कौ० आ०, २०

३८. जो सच्ची सेवा करनेवाला है, उसका प्रचार तो अपने-आप होनेवाला है।

बि० कौ० आ०, ११३

३९. जो मनुष्य-जाति की सेवा करता है, वह ईश्वर की सेवा करता है।

प्रा० प्र०१, १८

४०. अगर मैं किसी आदमी की सेवा करता हूं, तो इसी भावना से प्रेरित होकर करता हूं कि वह सिर्फ हिंदुस्तान का या किसी एक धर्म का ही नहीं, बल्कि सारी मनुष्य-जाति का अंग है।

प्रा० प्र०२, ४३

४१. आत्मा अमर होती है और सेवा के द्वारा अपनी मुक्ति के लिए नये-नये चोले धारण करती है।

प्रा० प्र०१, ३३२

४२. हकूमत का क्षेत्र--सरकार का क्षेत्र--वह तो बहुत छोटा रहता है, लेकिन सेवा का क्षेत्र बहुत बड़ा रहता है।

प्रा० प्र०१, ३६५

१९--यज्ञ

१. जिस कर्म से अधिक-से-अधिक जीवों का विशाल क्षेत्र में व्यापक रूप से कल्याण हो, जो कर्म अधिक-से-अधिक सरलता के साथ किया जा सके और जिससे अधिक-से-अधिक सेवा होती हो, वह महायज्ञ है।

य० मं०, १२३

२. शुद्ध जीवन व्यतीत करने की इच्छा रखनेवाले के समस्त कार्य यज्ञ-रूप होने चाहिए।

य०मं०, १२४

३. यज्ञमय जीवन कला की पराकाष्ठा है। इसी में सच्चा रस और सच्चा आनंद है। जो यज्ञ बोझ-रूप मालूम होता है, वह यज्ञ नहीं है।

य० मं०, १३४

४. सद्‌भाग्य से जिसका हृदय स्वस्थ है, शुद्ध है, उसके लिए यज्ञ सरल वस्तु है; और यज्ञ के लिए न धन की आवश्यकता है, न बुद्धि की और न पढ़ाई की। यज्ञ का अर्थ है कोई भी परोपकारी कार्य। जिसका जीवन पूरी तरह यज्ञमय हो, उसके लिए कहा जा सकता है कि वह चोरी का धन नहीं खाता।

ए० च०, १५

५. याज्ञिक बेगार नहीं टालेगा। याज्ञिक यज्ञ में भाव भरेगा, कला पूरेगा, रंग भरेगा और तद्रूप हो जायगा। यज्ञ का द्रव्य शुद्धतम होना चाहिए।

म० डा०२, १४६

६. यज्ञ का अर्थ है काम करने में कुशलता प्राप्त करना।

स० ई०, ५९

७. दिन के चौबीस घंटे कर्तव्य का पालन करना या सेवा करना यज्ञ है।

आ०, १४

२०—सर्व-धर्म-समभाव

१. कोई क्षण-भर के लिए यह डर न रखे कि दूसरे धर्मों के आदर-पूर्ण अध्ययन से स्वयं अपने धर्म के प्रति हमारी श्रद्धा कमजोर हो जायगी।

सर्वो०, ३१

२. मैं सभी धर्मों का स्वागत करता हूं। मेरी सभी धर्मों में श्रद्धा है। परंतु मुझे स्वयं अपना धर्म छोड़ने का कोई कारण दिखायी नहीं देता।

ऐ० बा १०३

३. सब धर्मों के प्रति समभाव से देखने पर हम दूसरे धर्मों के प्रत्येक स्वीकार करने योग्य तत्त्व का अपने धर्म में समन्वय करने में कभी संकोच नहीं रखेंगे, बल्कि ऐसा करना अपना धर्म समझेंगे।

मो० मा०, ३५

४. जिस प्रकार किसी वृक्ष का तना एक होता है, परंतु शाखाएं और पत्ते अनेक होते हैं, उसी प्रकार सच्चा और पूर्ण धर्म तो एक ही है; परंतु जब वह मानव के माध्यम से व्यक्त होता है तब अनेक रूप ग्रहण कर लेता है।

मो० मा०, ३५

५. असल में तो अपने धर्म पर कायम रहकर किसी भी दूसरे धर्म में जो विशेषता दिखाई दे, उसे ले लेने का हमारा अधिकार है। इतना ही नहीं, ऐसा करना हमारा धर्म है। दूसरे धर्मों से कुछ भी न लिया जा सके, इसी का नाम धर्मांधता है।

म० डा०१, १७०

६. जब हम सब धर्मों को समान दृष्टि से देखेंगे, तब हमें अपने धर्म में दूसरे धर्मों की सभी ग्राह्य बातें अपनाने में न केवल कोई संकोच ही होगा, बल्कि हम उसे अपना फर्ज समझेंगे।

स० ई०, ६१

७. धर्म का अर्थ है अलग-अलग नामों से पहचाने जानेवाले सब धर्मों का एक साथ संकलन करनेवाला और उन्हें एकरूप देखनेवाला परम-धर्म।

स० ई०, ४

८. जैसे हम अपने धर्म को आदर देते हैं, ऐसे ही दूसरे धर्म को दें; मात्र सहिष्णुता पर्याप्त नहीं है।

बा० आ०, १७

९. अहिंसा हमें दूसरे धर्मों के प्रति समभाव सिखाती है।

य० मं०,७

१०. सब धर्मों के प्रति समभाव प्राप्त होने पर ही हमारे दिव्य चक्षु खुल सकते हैं।

य० मं०, ६१

११. अहिंसा हमें यह सिखाती है कि हम दूसरों के धर्म का उतना ही आदर करें, जितना अपने धर्म का करते हैं।

स० ई०, ६०

१२. सभी मजहब अच्छे हैं। विश्वास रखें कि जितने भी धर्म हैं, सब-के-सब ऊंचे हैं। धर्म में कसर नहीं है। कसर है तो उनके आदमियों में है।

प्रा० प्र०१, ६३

१३. हरएक धर्म में जो रत्न की-सी बात हाथ आवे, उसको ले लें, और अपने धर्म की अच्छाई को बढ़ाते चलें।

प्रा० प्र०१, ६३

१४. सब मजहब एक हैं।

प्रा० प्र०१, ६५

१५. दुनिया में जितने आदमी हैं, उतने ईश्वर के नाम हैं। ईश्वर, भगवान, खुदा, गॉड, होरमस—जो-कुछ भी कह लो, उसी के नाम हैं। और इन सब नामों से भी वह ज्यादा है।

प्रा० प्र०१, ६८

१६. सब धर्मों की जड़ में एक ईश्वर का नाम है। सब के धर्म-शास्त्र एक-सी बात कहते हैं।

प्रा० प्र०१, १०५

१७. जो सब धर्मों को समान माने, वही हिंदू धर्म है।

प्रा० प्र०२, ३३२

२१--राम-नाम

१. मेरी कल्पना के राम-नाम में और जंतर-मंतर में कोई संबंध नहीं है ।

ऐ० बा०, ५१

२. हृदय से राम-नाम लेने का अर्थ एक अतुलनीय सत्ता से सहायता प्राप्त करना है। उस सत्ता में सब प्रकार की पीड़ा मिटाने का सामर्थ्य है।

ऐ० बा०, ५१

३. मनुष्य किसी भी रोग से पीड़ित हो, अगर वह हृदय से राम-नाम ले, तो रोग अवश्य नष्ट होगा ।

स० ई०, १०४

४. राम-नाम किसी अच्छे उद्देश्य के लिए ही काम में लिया जाता है, न कि बुरे काम के लिए ।

स० ई०, १०५

५. राम-नाम शुद्ध हृदयवालों के लिए है और उन लोगों के लिए है जो शुद्धता प्राप्त करना चाहते हैं। वह कभी भोग का साधन नहीं बन सकता ।

स० ई०, १०५

६. सिर्फ मुंह से राम-नाम रटने से कोई ताकत नहीं मिलती। ताकत पाने के लिए जरूरी है कि सोच-समझकर नाम जपा जाय और जप की शर्तों का पालन करते हुए जिंदगी बिताई जाय। ईश्वर का नाम लेने के लिए इंसान को ईश्वरमय होना चाहिए।

गां० वा०, ७२

७. राम-नाम के बिना चित्त-शुद्धि नहीं हो सकती।

मे० स० भा०, १४१

८. राम-नाम का एक कानून यह है कि कुदरत के नियम न टूटने चाहिए ।

ए० च०, १३६

९. रोना-हंसना दिल में से निकलता है। मनुष्य दुख मानकर रोता है। उसी दुख को सुख मानकर हंसता है। इसलिए ही राम-नाम का सहारा चाहिए। सब उसके अर्पण करना हो तो आनंद-ही-आनंद है।

बा० आ०, १६

१०. जो लोग कृष्ण-कृष्ण कहते हैं वह उसके पुजारी नहीं हैं। जो उसका काम करते हैं, वे ही पुजारी हैं। रोटी-रोटी कहने से पेट नहीं भरता, रोटी खाने से भरता है।

बा० प० प्रे०, २२४

११. यदि श्रद्धापूर्वक कोई भी आदमी जप जपेगा, तो अंत में वह स्थिर-चित्त होगा ही।

म० डा० २, २३७

१२. शरीर की खुराक जैसे अन्न है, वैसे ही शरीर में पड़ी आत्मा की खुराक राम-नाम है।

प्रा० प्र० १, १७६

१३. जो मनुष्य राम-नाम को अपने हृदय में अंकित करता है उसको मरना है ही कहां? यह शरीर क्षणभंगुर है। आज है, कल नहीं; अभी है, दूसरे क्षण नहीं। तो इसका मैं अहंकार करूं?

प्रा० प्र० १, ३५३

१४. राम-नाम ही सब कुछ है और उसके सामने दूसरे देवताओं का कोई महत्व नहीं है।

प्रा० प्र० २, ७८

२२—प्रार्थना

१. जब हम सारी आशा छोड़कर बैठ जाते हैं, हमारे दोनों हाथ टिक जाते हैं, तब कहीं-न-कहीं से मदद आ पहुंचती है। स्तुति, उपासना, प्रार्थना वहम नहीं है; बल्कि हमारा खाना-पीना, चलना-बैठना जितना सच है, उससे भी अधिक सच यह चीज है।

आ० क०, ६२

२. विकार-रूपी भूलों की शुद्धि के लिए हार्दिक उपासना एक रामबाण औषधि है ।

आ० क०, ६३

३. प्रार्थना धर्म का प्राण है और सार है, और इसलिए मनुष्य के जीवन का मर्म होनी चाहिए; क्योंकि कोई आदमी धर्म के बिना जी ही नहीं सकता ।

स० ई०, ३९

४. प्रार्थना जैसे धर्म का सबसे मार्मिक अंग है, वैसे ही मानव-जीवन का भी है ।

स० ई०, ३९

५. प्रार्थना शब्दों या कानों का व्यायाम-मात्र नहीं है, खाली मंत्र-जाप नहीं है ।

स० ई०, ४०

६. आप कितना ही राम-नाम जपिये, अगर उससे आत्मा में हलचल नहीं मचती, तो वह व्यर्थ है ।

स० ई०, ४०

७. जैसे कोई भूखा आदमी मनचाहे भोजन में मजा लेता है, ठीक वैसे ही भूखी आत्मा को हार्दिक प्रार्थना में आनंद आता है ।

स० ई०, ४०

८. हमारे दैनिक कार्यों में व्यवस्था और शांति संवाद लाने का एकमात्र उपाय प्रार्थना है ।

स० ई०, ४१

९. प्रार्थना एक प्रकार का आवश्यक आध्यात्मिक अनुशासन है । अनुशासन और संयम ही हमें पशुओं से अलग करता है ।

स० ई०, ४१

१०. हमारी प्रार्थना तो अपने ही हृदय की छानबीन है । वह तो हमें ही यह स्मरण दिलाती है कि हम प्रभु के सहारे के बिना लाचार हैं ।

स० ई०, १२

११. प्रार्थना नम्रता की पुकार है । वह आत्म-शुद्धि का, आत्म-निरीक्षण का आह्वान है ।

स० ई०, ४२

१२. जो प्रार्थना नहीं करता, वह जरूर घाटे में रहता है ।

स० ई०, ४३

१३. ईश्वर की पूजा करना ईश्वर का गुणगान करना है । प्रार्थना अपनी अयोग्यता और दुर्बलता को स्वीकार करना है ।

स० ई०, ४५

१४. पूजा या प्रार्थना वाणी से नहीं, हृदय से करने की चीज है ।

स० ई०, ४६

१५. जिन लोगों की वाणी में तो अमृत है, परंतु जिनके हृदय विष से परिपूर्ण हैं, उनकी प्रार्थना कभी नहीं सुनी जाती ।

स० ई०, ४६

१६. सच्चे हृदय से की हुई प्रार्थना चमत्कार कर सकती है ।

स० ई०, ४८

१७. यह मान लेना सबसे बड़ी भूल है कि गायत्री का जप, नमाज़ या ईसाई-प्रार्थना अज्ञानियों या विचारहीनों के करने लायक कोई अंध-विश्वास है ।

स० ई०, ४८

१८. प्रार्थना या उपवास शुद्धि की एक अत्यंत शक्तिशाली प्रक्रिया है ।

स० ई०, ४८

१९. सच्ची प्रार्थना वह है जो बुद्धि-संगत और निश्चित है । हमें उसके साथ एकाकार होना पड़ता है । जबान पर अल्लाह का नाम लेते और माला जपते हुए हमारा मन इधर-उधर भटकता हो, तो वह बेकार है ।

स० ई०, ४९

२०. हार्दिक प्रार्थना निस्संदेह सबसे प्रबल अस्त्र है, जो कायरता और अन्य सब बुरी आदतों पर विजय प्राप्त करने के लिए मनुष्य के पास है ।

स० ई०, ५२

२१. हार्दिक प्रार्थना जीभ का जप नहीं है। यह तो एक आंतरिक अभ्यर्थना है, जो मनुष्य के एक-एक शब्द में, एक-एक काम में, नहीं-नहीं, एक-एक विचार में प्रकट होती है।

स० ई०, ५२

२२. प्रार्थना करनेवाले मनुष्य के लिए पीछे हटने की तो कोई बात ही नहीं होती।

स०ई०, ५३

२३. मूर्तियां ईश्वर की उपासना में सहायक होती हैं। कोई भी हिंदू किसी मूर्ति को ईश्वर नहीं समझता। मैं मूर्ति-पूजा को पाप नहीं मानता।

स० ई०, ७२

२४. किसी-न-किसी रूप में मूर्ति-पूजा को माने बिना आपका काम नहीं चल सकता।

स० ई०, ७७

२५. मैं किसी मंदिर का होना पाप या अंधविश्वास नहीं मानता। किसी-न-किसी रूप में सर्वमान्य पूजा और सर्वमान्य पूजा-स्थान मनुष्य के लिए जरूरी हैं। मंदिर में मूर्तियां हों या न हों, यह अपने-अपने स्वभाव और रुचि की बात है।

स० ई०, ८०

२६. मंदिर जाना आत्मा की शुद्धि के लिए है। पूजा करनेवाला पूजा करने में अपने उत्तम गुणों को बाहर लाता है।

स० ई०, ८१

२७. जब मूर्ति-पूजा बिगड़कर पत्थर-पूजा हो जाती है और उस-पर झूठे विश्वासों और सिद्धांतों की काई चढ़ जाती है, तब उसे घोर सामाजिक बुराई समझकर उसके साथ लड़ना जरूरी हो जाता है। दूसरी ओर अपने आदर्श को कोई ठोस रूप देने के अर्थ में मूर्ति-पूजा मानव-स्वभाव का अभिन्न अंग रही है, और भक्ति के लिए वह एक मूल्यवान सहायता भी है।

स० ई०, ८४

२८. व्यक्तिगत स्वार्थ-पूर्ण प्रार्थना बुरी ही है, चाहे वह किसी मूर्ति के सामने की जाय या अदृश्य ईश्वर के सामने।

स० ई०, ८५

२९. प्रार्थना सच्ची होगी और नम्र हृदय से होती होगी तो मैं जानता हूं कि कितने ही आंदोलनों की अपेक्षा उसका असर कहीं अधिक होगा ।

य० अ०, ८०

३०. एक तीव्र इच्छा प्रार्थना का रूप धारण करती है।

ग्ली० बा० फ़ी० १५

३१. अणुबमों का मुकाबला प्रार्थनामय कर्म से किया जा सकता है।

ऐ० बा०, ३२

३२. श्रद्धा और प्रार्थनाहीन कार्य उस बनावटी फूल की तरह है जिसमें सुगंध नहीं होती ।

वि०, ३५

३३. प्रार्थना धर्म की आत्मा और उसका सार है, और, इसलिए प्रार्थना मनुष्य के जीवन का मर्म बन जानी चाहिए।

वि०, ३५

३४. जो मनुष्य प्रार्थनामय हृदय के बिना दुनियादारी के काम में लगा रहेगा, वह स्वयं दुखी होगा और दुनिया को भी दुखी करेगा।

वि०, ३७

३५. प्रार्थना भगवान से एकता स्थापित करने के लिए हृदय की चाह है, उसके आशीर्वाद की मांग है। इस मामले में महत्त्व वृत्ति का है, न कि बोले हुए या गुनगुनाये हुए शब्दों का ।

वि०, २८

३६. जैसे व्यक्ति के बिना समाज हो ही नहीं सकता, उसी तरह निजी प्रार्थना के बिना सामूहिक प्रार्थना संभव नहीं।

स० ई०, ३२

३७. असल में प्रार्थना का अर्थ ही सदाचरण होना चाहिए।

बा० प० मी०, ३०६

३८. हम जिसकी आराधना करते हैं, वैसे ही बन जाते हैं। प्रार्थना का अर्थ इससे ज्यादा नहीं है।

मा० डा० १, २११

३९. जो दिल से प्रार्थना करेगा, वह अंत में ईश्वरमय ही हो जायगा; यानी निष्पाप बन जायगा।

म० डा० १, २१२

४०. प्रार्थना से इच्छित फल मिला या नहीं, इसका हमें पता नहीं चलता।

म० डा० १, २१३

४१. किसी मनुष्य या वस्तु को लक्ष्य में रखकर प्रार्थना हो सकती है, उसका फल भी मिलता है; मगर ऐसे उद्देश्य से रहित प्रार्थना आत्मा और जगत के लिए ज्यादा कल्याणकारी हो सकती है। प्रार्थना का असर अपने ऊपर होता है यानी उससे अंतरात्मा ज्यादा जाग्रत होती है, और ज्यों-ज्यों ज्यादा जाग्रत होती है, त्यों-त्यों उसका असर ज्यादा फैलता है।

म० डा० १, २१३

४२. उल्टा नतीजा निकले, तो यह मानने का कारण नहीं कि वह प्रार्थना निष्फल ही गई।

म० डा० १, २१३

४३. सच्ची प्रार्थना केवल मुंह के वचनों से नहीं होती। वह कभी झूठी नहीं पड़ती।

म० डा० २, २४

४४. भोजन सबके लिए आवश्यक है तो प्रार्थना भी सबके लिए आवश्यक है।

म० डा० २, ६१

४५. हृदय की सच्ची प्रार्थना से हमें सच्चे कर्त्तव्य का पता चलता है। आखिर में कर्त्तव्य करना ही प्रार्थना बन जाती है।

म० डा० २, १३१

४६. सामुदायिक प्रार्थना की जड़ वैयक्तिक प्रार्थना ही हो सकती

है। सामुदायिक प्रार्थना पर मैंने वज़न दिया है, उसका यह अर्थ कभी नहीं है कि वह वैयक्तिक प्रार्थना से अधिक महत्त्व रखती है।

म० डा० २, १४९

४७. प्रार्थना तो आत्मा की खुराक है। जिस तरह खुराक के बगैर शरीर कमजोर होता जाता है, उसी तरह प्रार्थना के बगैर हम लोग दिनोंदिन असंस्कारी बनते जायंगे।

अं० झां०, १०

४८. प्रार्थना तो आत्मा को साफ करने की झाड़ू है।

अं० झां०, २३८

४९. दीर्घाभ्यास और प्रयोग की पवित्रता के कारण, शब्दों में, अंत में एक शक्ति आ जाती है।

वि०, २५

५०. प्रार्थना का उपयोग बुद्धि से किसने पहचाना है ? उसका तो अभ्यास से अनुभव होता है। संसार-भर की यही शहादत है।

वि०, ३३

५१. जब काम-क्रोध आदि आवेग तुम पर सवारी करने की धमकी दें, तब घुटनों के बल झुककर ईश्वर की शरण में जाओ और उससे सहायता की भीख मांगो।

मो० मा०, ५४

५२. प्रार्थना प्रातःकाल का आरंभ है और संध्या का अंत है।

मो० मा०, ४३

५३. बड़े-से-बड़े अपवित्र या पापी मनुष्य की प्रार्थना भी सुनी जायगी। यह मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव पर से कहता हूं।

मो० मा० ४४

५४. प्रार्थना लाजिमी हो ही नहीं सकती। प्रार्थना तभी प्रार्थना है, जब वह अपने-आप हृदय से निकलती है।

गां वा, ७५

५५. हमारी गंदगी हमने जबतक नहीं निकाली है, तबतक प्रार्थना करने का हमें कुछ हक है क्या ?

बा० आ०, १९१

५६. प्रार्थना वियोगी का विलाप है, उसके बिना देहधारी जी ही नहीं सकता ।

बा० प० प्रे०, २३५

५७. प्रार्थना की आवश्यकता के बारे में सारे जगत का अनुभव है। उसपर विश्वास रखें तो मन लगता है।

बा० प० प्रे०, १९

५८. प्रार्थना का मूल अर्थ तो मांगना होता है। ईश्वर से या बड़ों से नम्रता के साथ की गई मांग ही प्रार्थना है। यहां इस अर्थ में प्रार्थना यानी ईश्वर की स्तुति, भजन, कीर्तन, उपासना, सत्संग, अंतर्ध्यान, अन्तःशुद्धि ।

स० ई०, ३०

५९. प्रार्थना का अर्थ भीतरी शुद्धि भी किया गया है।

स० ई०, ३०

६०. हृदय में उतरी हुई प्रार्थना में तो फकत इतना अंतर्ध्यान रहना चाहिए कि उस वक्त उसे किसी दूसरी चीज का भान ही न हो।

स० ई०, ३१

६१. शरीर के लिए किसी दिन उपवास जरूरी होता है; लेकिन आत्मा को प्रार्थना से बदहजमी हुई, ऐसा कभी सुना नहीं।

स० ई०, २९

६२. शांति भी प्रार्थना ही है।

प्रा० प्र० १, १६

६३. ईश्वर को तो मन की प्रार्थना चाहिए। मुंह की बात को मान लेने जैसा वह भोला नहीं है। प्रार्थना का मतलब यह नहीं है कि जिह्वा से जो उचारा जाय, उसे ही प्रार्थना कहा जाय।

प्रा० प्र० १, ७५

६४. सामूहिक प्रार्थना हमारा खास फ़र्ज है। इसे झट-से छोड़ा नहीं जा सकता।

प्रा० प्र० १, ८७

६५. आकाश से गोले भी क्यों न बरसाए जायं और कैसा भी उपद्रव क्यों न हो, ईश्वर-भजन के समय हमारी शांति भंग नहीं होनी चाहिए।

प्रा० प्र० १, १३७

६६. ईश्वर की प्रार्थना का फल नहीं मांगा जा सकता और न उसकी प्रार्थना छोड़ी ही जा सकती है। खाने-पीने का उपवास भले ही हम करें, समय-समय पर करना भी चाहिए, पर प्रार्थना का फाका नहीं हो सकता।

प्रा० प्र० १, १७६

६७. पृथ्वी में कोई कार्य ऐसा नहीं होता, जिसका फल न हो; और प्रार्थना तो सबसे उत्तम कार्य है। इसलिए अगर हम मंदिर जाते हैं, माला फेरते हैं, जो थोड़ा-सा ढोंग भी होता है, उसके पीछे भी अंत में अच्छाई आनेवाली है, यह विश्वास रखें।

प्रा० प्र० १, १८०

६८. श्रद्धा से जो प्रार्थना सुनते हैं, उन पर असर होता है।

प्रा० प्र० १, ४२६

६९. प्रार्थना करना तो हमारा धर्म है।

प्रा० प्र० २, २४३

७०. प्रार्थना ही आत्मा की खुराक है। भगवान के पास से हमें जो खुराक मिल सकती है वह और जगह नहीं मिल सकती।

प्रा० प्र० २, २५८

२३—भक्त और भक्ति

१. भक्त चाहे तो माला, तिलक और अर्घ्यादि का उपयोग कर सकता है, परंतु ये वस्तुएं उसकी भक्ति की कसौटी नहीं हैं।

स० ई०, ९३

२. भक्त वह है, जो किसी से ईर्ष्या नहीं रखता, जो दया का भंडार है।

स० ई०, ९३

३. बड़े-से-बड़े कर्मयोगी भी भजन, कीर्तन या पूजा नहीं छोड़ते।

स० ई० १२६

४. संकट के समय ईश्वर अपने भक्तों की मदद करता है, यह विश्वास उपयोगी है, ऐसे उदाहरण संग्रह करने-योग्य हैं। लेकिन अगर कोई ऐसी सहायता की शर्त लगाकर ईश्वर की भक्ति करे, तो वह निरर्थक है।

बा० पा०, प्रे० १

५. भक्त और अभक्त में भेद यह है कि एक पारमार्थिक दृष्टि से प्रवृत्ति में रहता है और प्रवृत्ति में रहते हुए सत्य को कभी छोड़ता ही नहीं है और राग-द्वेषादि को क्षीण करता है। दूसरा अपने भोगों के ही लिए प्रवृत्ति में मस्त रहता है और अपना कार्य सिद्ध करने के लिए असत्यादि आसुरी चेष्टाओं से अलग रहने की कोशिश तक भी नहीं करता है।

म० डा० १, ३१८

६. भक्त के पापों को भगवान क्षमा करता है। शास्त्र की भाषा में इसका अर्थ यह है कि भक्त जब भगवान में लीन हो जाता है तब शुद्ध हो जाता है। शुद्ध होना पाप का क्षय ही है, जैसे सुवर्ण में से कुधातु का निकलना।

म० डा० २, १५

७. ईश्वर के भक्तों को काम ढूंढ़ना नहीं पड़ता। वह ईश्वरपर भरोसा रखकर बैठे रहते हैं। ईश्वर हालत पैदा कर देता है। ईश्वर को किसी ने उसके कामों के सिवा और किसी रूप में देखा नहीं है।

म० डा० २, १९५

८. जो ईश्वर-भक्त है, वह तो बीमारी का भी सदुपयोग कर सकता है, बीमारी से हारता नहीं।

म० डा० २, २२९

९. शुद्ध भक्ति से अनासक्ति और ज्ञान पैदा होते ही हैं; न हों तो वह बकवास है, भक्ति नहीं।

म० डा० २, २५८

१०. मनुष्य-मात्र में थोड़ी-बहुत भक्ति रहती है, इसलिए वह किसी-न-किसी रूप में भगवान की उपासना कर लेता है।

म० डा० २, २७२

११. राम के भक्त को तो जगत में जितने भी जीव-जंतु हैं, उन सब पर प्रेम ही रखना चाहिए।

वि० कौ० आ०, २५४

१२. जो ईश्वर का डर रखकर चलते हैं, उन्हें रुपये-पैसे का या और किसी नुकसान का डर रखने का कारण नहीं है। भगवान के भक्तों के लिए अक्सर ऐसी मुश्किलें छिपे हुए आशीर्वाद के समान साबित होती हैं।

म० डा० १, २३४

१३. भगवान तो तरह-तरह से अपने भक्त की परीक्षा लेना चाहता है।

प्रा० प्र० १, २३

१४. जो कोई ईश्वर का भक्त बन जाता है, वह अपने भीतर बैठकर ईश्वर की आवाज सुन लेता है।

प्रा० प्र० १, ४७

२४—गुण-पूजा

१. गुण की पूजा सदा ही होगी। मगर गुणवान आदमी ने अपने को जहां इससे ऊंचा माना कि तुरंत उसके गुण निकम्मे हो जाते हैं। जिसमें कुछ भी गुण है या शक्ति है, वह उसका रक्षक है और उसे उसका उपयोग समाज के लिए करना चाहिए।

स० ई०, ७०

२. व्यक्ति की पूजा के बजाय गुण-पूजा करनी चाहिए। व्यक्ति तो गलत साबित हो सकता है और उसका नाश तो होगा ही, गुणों का नाश नहीं होता।

म० डा० १, ३३१

३. मोती तो जहां से मिलें, वहां से ले लेने चाहिए।

प्रा० प्र० १, १११

४. सद्गुण और दुर्गुण आखिर सब में भरे हैं।

प्रा० प्र० २, ४६

२५—मूर्ति पूजा

१. मूर्ति-पूजा के मैं दो अर्थ करता हूं, एक में मनुष्य मूर्ति का ध्यान करते हुए गुणों में लीन होता है। यह अच्छी पूजा है। दूसरे में गुणों का विचार न करके वह मूर्ति को ही मूल वस्तु मानता है। यह बुतपरस्ती नुकसान करती है।

बा० प० प्रे०, २८

२. मूर्तिपूजा की जरूरत है या नहीं, यह प्रश्न उठता ही नहीं; क्योंकि वह अनादि काल से है और रहेगी। देहधारी-मात्र मूर्तिपूजक ही होता है।

म० डा० १, २५०

३. मंदिरों में जाने से हमें कोई लाभ होता है या नहीं होता, यह हमारी मानसिक स्थिति पर निर्भर रहता है। इन मंदिरों में हमें नम्रता और पश्चात्ताप की भावना से जाना चाहिए। ये सब ईश्वर के निवास हैं।

मो० मा०, ३९

४. हमें प्रार्थनामय वृत्ति से मंदिर में प्रवेश करना चाहिए। और ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह वहां आने के फलस्वरूप हमें अधिक पवित्र पुरुष और अधिक पवित्र स्त्रियां बनावे।

मो० मा०, ३९

५. पत्थर की मूर्ति-पूजा का एक तरीका ही तो है। पूजा पैर से हो सकती है, हाथ से हो सकती है और जिह्वा से हो सकती है। पूजा का तरीका कुछ भी हो, पूजा सच्ची होनी चाहिए।

प्रा० प्र० १, २२

६. मंदिर में जाने से पाप का नाश होता है, यह माना जाता है। अगर सच्चे दिल से पूजा करें तो पाप का नाश होगा ही। ऐसा थोड़े ही है कि पापी मंदिर में नहीं जा सकते और पुण्यशाली ही जा सकते हैं। तब वहां पाप धुलेंगे किसके? जिन हरिजनों को हमने ही अछूत माना है, वे क्या पापी हो गये?

प्रा० प्र० २, २५५

२६—हिंदू धर्म

१. यही तो हिंदू धर्म की खूबी है कि वह बाहर से आनेवालों को अपना लेता है।

प्रा० प्र० १, २१

२. हिंदू धर्म बहुत बड़ा धर्म है, वह पुराना धर्म है।

प्रा० प्र० १, २४

३. अहिंसा हिंदू धर्म का असली सार है।

प्रा० प्र० १, ४०

४. धर्म का पालन धैर्य से ही किया जा सकता है। हिंदू धर्म नेसहिष्णुता को बड़े महत्त्व का स्थान दिया है।

प्रा० प्र० १, ७४

५. हिंदू सब एक हों। कोई ऊंचा, कोई नीचा नहीं।

प्रा० प्र० १, १६१

६. अगर हिंदू धर्म को आगे बढ़ाना है तो उसमें घृणा और अस्पृश्यता कैसे रह सकती है ? अस्पृश्य तो वे हैं जो पापात्मा होते हैं। एक सारी जाति को अस्पृश्य बनाना एक बड़ा कलंक है।

प्रा० प्र० १, ४६६-७०

७. हिंदू धर्म एक महासागर है। जैसे सागर में सब नदियां मिल जाती हैं, वैसे हिंदू धर्म में सब धर्म समा जाते हैं।

प्रा० प्र० २, १६८

खंड ३ : चरित्र

१—नीति और नैतिकता

१. यह संसार नीति पर टिका हुआ है। नीति-मात्र का समावेश सत्य में है।

आ० क०, २४

२. नैतिक परिणाम नैतिक प्रतिबंधों से ही आ सकते हैं।

स० ई०, १२०

३. नैतिकता का पालन करना ही अपने मन तथा लालसाओं को जीतना है।

हिं० स्व०, ६१

४. जो आदमी अनीति अपनाता है वह संग करने योग्य नहीं है।

ए० च०, १४६

५. नैतिक बल के सामने पशु-बल की कोई कीमत ही नहीं है।

प्रा० प्र० १, २००

६. नीति उस समय तक धर्म रह सकती है जबतक कि उसे चलाया जाय। उसके बाद नहीं।

प्रा० प्र० १, २४७

२—स्वभाव

१. फूटे बरतन को कितना ही पक्का क्यों न जोड़ा जाय, वह जोड़ा हुआ ही कहलायगा, संपूर्ण कभी नहीं होगा।

आ० क०, १४२

२. स्वभाव को कौन बदल सकता है! बलवान संस्कारों को कौन मिटा सकता है!

आ० क०, २२९

३. एक बार बनी हुई आदतों को छोड़ना कठिन है। ऐसे बहुत कम व्यक्ति हैं, जो उससे छुटकारा पाने में सफल होते हैं।

शा०, अ०,११

४. हम कुछ आदतें डालते हैं, फिर उनसे उलटा करना शक्ति के बाहर हो जाता है। अच्छी आदतों के लिए यह गुण पैदा करने लायक है।

बा० प० म०, ४०

५. हम सबमें दैवी और आसुरी प्रकृति काम कर रही है।

गां० छ०, २६

६. आदमी स्वभाव से जैसा बना है, वैसा ही कर सकता है। इसमें कृत्रिमता को कोई स्थान नहीं है।

प्रा० प्र० १, ४२६

३—आचरण

१. बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिए। वे जो कहें सो करना; उसके काजी न बनना।

आ० क०, ४

२. गुण ग्रहण करने के लिए प्रयास की आवश्यकता है।

आ० क०, १५

३. दूसरों को अपमानित करके लोग अपने को कैसे सम्मानित समझ सकते हैं!

आ० क०, १३४

४. आत्मा का विकास करने का अर्थ है चरित्र का निर्माण करना, ईश्वर का ज्ञान पाना, आत्म-ज्ञान प्राप्त करना।

आ० क०, २६६

५. कथनी की नहीं, करनी की आवश्यकता है।

आ० क०, ३५७

६. मनुष्य के बाहरी आचरण से उसके गुणों की जो परीक्षा की जाती है, वह अधूरी और अनुमान-मात्र होती है।

आ० क०, १६६

७. जब हम दूसरों के गज-जैसे दोषों को रजवत मानकर देखते हैं

और अपने रजवत प्रतीत होने वाले दोषों को पहाड़-जैसा देखना सीखते हैं, तभी हमें अपने और पराये दोनों का ठीक-ठीक अंदाज हो पाता है। सत्याग्रही बनने की इच्छा रखनेवाले को तो इस साधारण नियम का पालन बहुत अधिक सूक्ष्मता के साथ करना चाहिए।

आ० क०, ४०६

८. सिर्फ इसलिए हम भलाई करना नहीं छोड़ सकते कि कभी-कभी भलाई की आड़ में बुराई की जाती है।

स० ई०, ५०

९. ईश्वर का सारा कानून शुद्ध सदाचारी जीवन में मूर्त्तिमान होता है।

स० ई०, १०५

१०. कई बार बुराई से भलाई निकल आती है, परंतु यह ईश्वर की योजना है, मनुष्य की नहीं। मनुष्य तो यही जानता है कि जैसे भलाई से भलाई पैदा होती है, वैसे बुराई से बुराई ही उत्पन्न हो सकती है।

स० ई०, १३०

११. धर्म में कहने की गुंजाइश नहीं होती। उसे जीवन में उतारना होता है। तब वह अपना प्रचार स्वयं कर लेता है।

सर्वो०, ३१

१२. मेरा यह अचूक अनुभव है कि इस दुनिया में भलाई से भलाई उत्पन्न होती है और बुराई से बुराई।

य० अ०, २०

१३. बुराई केवल बुराई के आचार पर ही पनप सकती है। पुराने ऋषि इस सत्य को जानते थे और, इसलिए बुराई का बदला बुराई से देने के बजाय जान-बूझकर भलाई से देते थे और इस प्रकार बुराई का नाश करते थे।

य० अ०, २०

१४. ईश्वर हमसे यह पूछेगा—आज भी यही पूछता है—कि हम कैसे हैं, न कि हमारा नाम और पता क्या है? उसे तो केवल आचरण

ही चाहिए । आचरण-रहित मान्यता नहीं चाहिए । वह आचरण को ही मान्यता मानता है ।

य० अ०, ५७

१५. शिक्षा से भी अच्छा यह है कि कार्यकर्त्ता उदाहरण पेश करें ।

खा०, ६७

१६. जिस सदाचार का आधार किसी स्त्री या पुरुष की लाचारी हो, उस सदाचार में क्या धरा है ! सदाचार की जड़ें हमारे दिलों की पवित्रता में है ।

स्त्रि० स०, ६

१७. स्वेच्छा से स्वीकार की हुई पाबंदियां ही लाभ पहुंचाती हैं ।

स्त्रि० स०, २१

१८. सच्चा रहना, सच्चा विचारना, सच्चा बोलना ।

बा० प० ज०, २५७

१९. कृत्रिम कभी मत बनो ।

बा० प० ज०, २५७

२०. डूबता हुआ एक आदमी दूसरे को कभी नहीं बचायेगा ।

हिं० स्व०, ६५

२१. हम जनता को बल द्वारा सदाचारी नहीं बनाना चाहते ।

हि० स्व०, ७०

२२. आपको विचार, वाणी और कार्य का सुंदर मेल साधने का ध्येय सदा अपने सामने रखना चाहिए ।

मो० मा०, ५५

२३. जिस प्रकार कोई भव्य और सुंदर महल अपने निवासियों द्वारा छोड़ दिये जाने पर वीरान खंडहर-जैसा दिखाई देता है, उसी प्रकार चरित्र के अभाव में मनुष्य भी टूटे-फूटे खंडहर-जैसा दिखाई देता है, भले ही उसके पास भौतिक संपत्ति कितनी ही बड़ी मात्रा में क्यों न हो ।

मो० मा०, ५८

२४. जैसे समुद्र पानी की एक-एक बूंद से बना है, वैसे ही देश एक-एक मनुष्य के उत्तम चरित्र से बनेगा ।

बि० कौ० आ०, १६१

२५. दूसरों का अवलोकन करके हम उनके गुणों का अनुकरण करें और अवगुणों को सहन करें, क्योंकि अवगुणों को दूर करने का सब से अच्छा उपाय यही है ।

बा० प० म०, १३८

२६. जब अपने ऊपर बीतती है, तभी हमेशा आदमी को हर बात की समझ आती है ।

अं० भां०, १८

२७. जैसा एक आदमी है, उसका ज्ञान सदा जनता को लाभ देता है, कभी हानि नहीं करता ।

सि० गां०, २४६

२८. हमारे शब्दों की अपेक्षा हमारे जीवन को हमारे संबंध में बताने देना बेहतर है ।

सि० गां०, २५९

२९. महान पुरुष जो-कुछ करते हैं, वह सभी को करने का अधिकार हो, सो बात नहीं है ।

म० डा० १, १३७

३०. विचार जबतक आचरण के रूप में प्रकट नहीं होता, वह कभी पूर्ण नही होता । आचरण आदमी के विचार को मर्यादित करता है । जहां विचार और आचार के बीच पूरा-पूरा मेल होता है, वहीं जीवन भी पूर्ण और स्वाभाविक बनता है ।

गां० वा०, १०८

३१. सच्चा जीवन बिताना खुद ऐसा सबक है, जिसका आसपास के लोगों पर जरूर असर पड़ता है ।

गां० का पुन०, १०४

३२. अक्सर हम बुरी मिसालों का अनुकरण करके भयंकर गलतियां कर बैठते हैं । सब से सुरक्षित मार्ग यह है कि जिनके

बारे में हमें पूरी जानकारी नहीं है, ऐसे उदाहरणों की हम नकल न करें।

ह०, १४

३३. लोगों ने अपने लिए जरूरत के बहाने पापाचरण तक की गुंजाइश बना ली है।

बा० प० मी०, ६०

३४. अमल करने का साधारण आग्रह हो तो अमल आसान है।

स० ई०, ५१

३५. क्या करना है, मनुष्य यह जानता है; लेकिन जानता है, वह करता नहीं।

बा० आ०, २७३

३६. धर्म के बिना नैतिक जीवन बालू की भीत के समान है। और सदाचार-रहित धर्म उस पीतल की तरह है, जो केवल शोर मचाने और सिर फोड़ने के लिए ही अच्छा है।

वि०, ६

३७. जो बाहर से बुरा दीखता है, वह अंदर से भी बुरा ही हो, ऐसा कोई नियम नहीं है।

बा० प० प्रे०, १३१

३८. आचार के बिना बौद्धिक ज्ञान उस निर्जीव देह की तरह है, जिसे मसाला भरकर सुरक्षित रखा जाता है। वह शायद देखने में अच्छा लग सकता है, परंतु उसमें प्रेरणा देनेकी शक्ति नहीं।

मे० स० भा०, १९४

३९. अंधानुकरण भी बुद्धि का लकवा है। क्या कभी बुरी वस्तु का भी अनुकरण किया जा सकता है?

अं० भां०, ११

४०. आदमी की अपने को धोखा देने की शक्ति इतनी है कि वह दूसरों को धोखा देने की शक्ति से बहुत अधिक है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हरएक समझदार आदमी है।

बा० आ०, १७७

४१. कम बोलो, पर ज्यादा करके दिखाओ।

अं० झां०, ६८

४२. स्वेच्छा और आनंद के साथ किये गए काम का दबाव नहीं मालूम होता।

म० डा० १, २१८

४३. हमारे रोजमर्रा के काम कितने ही छोटे हों, मगर उनसे हम पूरा संतोष मानें, तो इसके बराबर और कोई अच्छी बात नहीं है। जो राह देखते हैं, जाग्रत रहते हैं और प्रार्थना करते हैं, उनके लिए ईश्वर बड़े काम और बड़ी जिम्मेदारियां जुटा देता है।

म० डा० १, २१६

४४. जिसे अपने काम में तन्मयता है, उसे बोझ या थकावट महसूस नहीं होती। जिसे रस नहीं, उसे थोड़ा काम भी ज्यादा लगता है। जैसे कैदी को एक दिन भी एक साल लगता है, और भोगी को एक वर्ष एक दिन लगता है।

म० डा० १, २२१

४५. आचरण-रहित विचार कितने ही अच्छे क्यों न हों, तो भी उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए।

म० डा० २, १५

४६. ठोस परिणाम तो लगन के साथ और चुपचाप किये गए ठोस काम से ही लाये जा सकते हैं।

म० डा० २, १६१

४७. एक चीज पूरी हो जाय तो फिर दूसरी देखेंगे, यह काम क्रम-बद्ध हुआ है। धर्म जैसे मार्ग बताता जाय, वैसे काम करते जाना चाहिए।

म० डा० १, २७६

४८. शक्ति शारीरिक समता से नहीं उत्पन्न होती, वह अजेय संकल्प (या इच्छा) से उत्पन्न होती है।

गां० वा०, ४०

४९. संकल्प तो संकल्पकर्ता-रूपी नाविक के लिए दीपक-रूप है।

दीपक की ओर लक्ष्य रखें तो अनेक तूफानों में से गुजरते हुए भी मनुष्य उभर सकता है।

गां० वा०, ६२

५०. जो मनुष्य किसी एक चीज पर एकनिष्ठा से काम करता है वह आखिर सब चीज करने की शक्ति हासिल करेगा।

बा० आ०, ३६

५१. सही चीज के पीछे वक्त देना हमको खटकता है, निकम्मी के पीछे ज़लील होते हैं, और खुश होते हैं।

बा० आ०, ५७

५२. पवित्रता सजीव वस्तु है। वह रोग के जंतुओं से भी अधिक चिपकनेवाली है। जिसकी इच्छा न हो, उसपर भी रोग के कीड़े जिस तरह असर करते हैं, उसी तरह पवित्रता का भी असर मनुष्य पर उसकी इच्छा के विरुद्ध होता है।

म० डा० २, २२०

५३. हमें अपनी भलाई नहीं छोड़नी चाहिए।

प्रा० प्र० १, ३०

५४. बदमाश को देखकर भी हमें बुराई पर नहीं उतरना चाहिए।

प्रा० प्र० १, ३१

५५. जबरदस्ती और मारपीट से कुछ हासिल होनेवाला नहीं है। अगर किसी ने मारपीट करके कुछ ले लिया या दूसरे से कुछ करवा लिया तो वह टिकनेवाली बात नहीं होगी। ऐसा तो चोर-डाकू करते हैं। दूसरे लोग डाका डालें, तो क्या हम भी डाकू बन जायंगे! नहीं, हम उनके रास्ते पर नहीं चलेंगे।

प्रा० प्र० १, ३७

५६. अगर हम दूसरों की गंदी बातों का अनुकरण करेंगे तो मर जायंगे।

प्रा० प्र० १, ६५

५७. हरएक बात मीठी भाषा में कही जा सकती है। अगर हम असभ्यता बरतते हैं तो अपना ही गला काट लेते हैं।

प्रा० प्र० १, ७०-७१

५८. असत्य और हिंसा पर जीत केवल सत्य और अहिंसा से ही हो सकती है ।

प्रा० प्र० १, १४१

५९. असत्य और बुराई के साथ तो कभी समझौता नहीं करना चाहिए ।

प्रा० प्र० १, १४१

६०. मुश्किल या उलझन में पुराने नमूने या कठिनाई और उलझन के समय पुराने उदाहरण और अनुभव काम आते हैं, लेकिन इंसान को यंत्र बनकर काम नहीं चलाना है ।

प्रा० प्र० १, १६४

६१. कड़वी चीज को मीठी बनाने से वह मीठी नहीं बन जाती ।

प्रा० प्र० १, १७३

६२. यदि कोई आदमी बुरा भी होता है तो उसकी बुराई उसके साथ चली जाती है, केवल भलाई ही पीछे रहती है ।

प्रा० प्र० १, २००

६३. एक आदमी यदि अच्छा काम करता है तो वह उस भले काम में सारे जगत को हिस्सेदार बना लेता है । जो आदमी बुरा काम करता है,उसमें सारा जगत हिस्सेदार नहीं बनता, परंतु जगत को उससे दुख तो पहुंचेगा ही ।

प्रा० प्र० १, २०२

६४. बुरा बरताव करनेवाला कोई भी क्यों न हो, वह ईश्वर के सामने गुनाह करता है ।

प्रा० प्र० १, २३७

६५. जो किसी के साथ धोखा करता है, वह किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता । वह केवल अपना ही बुरा करता है ।

प्रा० प्र० १, २६९-७०

६६. भलाई की निशानी यह है कि हम दुष्टता का बदला दुष्टता से न दे कर साधुता से दें ।

प्रा० प्र० १, ३७३

६७. मनुष्य को उसके कार्य से जांचना चाहिए, न कि उस भावना से, जिससे वह प्रेरित हुआ है। केवल परमात्मा ही मनुष्य के हृदय को जानता है।

प्रा० प्र० १, ३८८

६८. हम अपना भगवान कहां देखें ? उसको हम अपने कामों में देखें।

प्रा० प्र० १, ४३८

६९. इंसान क्या चोरी या लूट करने से या किसी के मकान जलाने से कभी अपना भला कर सकता है ?

प्रा० प्र० २, २१४

७०. ख्याल एक चीज का करें, उच्चारण दूसरे का और आचरण तीसरी चीज का करें तो बात बनती नहीं।

प्रा० प्र० २, २४४

४—प्रेम और मित्रता

१. शुद्ध प्रेम के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

आ० क०, १०

२. प्रेम किन बंधनों को नहीं तोड़ सकता !

आ० क०, १५६

३. जहां प्रेम है, वहां जीवन है। द्वेष नाश की ओर ले जाता है।

स० ई०, १६

४. सार्वत्रिक और सर्वव्यापी सत्य की भावना का प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए हममें छोटे-से-छोटे जीव से अपनी ही तरह प्रेम करने की सामर्थ्य होनी चाहिए।

स० ई०, १३६

५. मेरा ध्येय सारी दुनिया के साथ मित्रता का संबंध कायम करना है और मैं बड़े-से-बड़े प्रेम के साथ अन्याय के बड़े-से-बड़े विरोध का मेल बैठा सकता हूं।

सर्वो०, ९५

६. प्रीति कोई कानून से पैदा होनेवाली अथवा नियमों मे रहने वाली वस्तु नहीं।

य० अनु०, १८

७. यदि सब हालतों में न हो तो कम-से-कम बहुत-सी हालतों में प्रेम तथा दया की शक्ति हथियारों की शक्ति से अनंतगुना अधिक होती है।

हिं० स्व०, ७५

८. जब शस्त्र-शक्ति का प्रेम या आत्मा की शक्ति से मुकाबला होता है, तब वह शक्तिहीन होती है।

हिं० स्व० ७६

९. प्रेम की शक्ति वही है, जो कि आत्मा या सत्य की शक्ति है।

हिं० स्व०, ७७

१०. प्रेम तो हृदय का होना चाहिए। हृदय के प्रेम का प्रदर्शन करने की जरूरत नहीं होती।

प० च०, १४६

११. सच्चा प्रेम समुद्र की तरह निस्सीम होता है और हृदय के भीतर ज्वार की तरह उठकर बढ़ते हुए वह बाहर फैल जाता है तथा सीमाओं को पार करके दुनिया के छोरों तक जा पहुंचता है।

मे० स० भा०, ६८

१२. प्रेम-तत्त्व ही संसार पर शासन करता है।

गां० वा०, ८६

१३. शुद्ध प्रेम देह का नहीं, आत्मा का ही संभव है। देह का प्रेम विषय ही है।

गां० वा०, ८७

१४. हम विरोधी को केवल प्रेम से अपना कर सकते हैं, न कि घृणा से। घृणा तो हिंसा का अत्यंत सूक्ष्म रूप है। अपने में घृणा रखते हुए हम असल में अहिंसक नहीं हो सकते।

सि० गां०, १५७

१५. प्रेम में बहुत प्रेम को खींचने का विशेष गुण है।

सि० गां०, १५८

१६. संसार के हाथ में प्रेम अत्यंत बलवान शक्ति है, और फिर भी यह कल्पनातीत रूप से अत्यंत नम्र है।

सि० गां०, १५८

१७. जहां प्रेम है, वहां ईश्वर भी है।

मो० मा०, १५

१८. भारी-से-भारी चीज पंख-जैसी हलकी बन जाती है, जब प्रेम उसे उठानेवाला होता है।

म० डा० ३, ३

१९. प्रेम का दबाव विशुद्ध बनाता है और प्रेमी तथा प्रेम-पात्र को ऊंचा उठाता है।

म० डा० ३, १२५

२०. प्रेम तो बल का सत्व है, सर्वत्र भय का सर्वथा अभाव हो जाय, तभी प्रेम का मुक्त प्रवाह हो सकता है। प्रेमी जनों की सजा तो आत्मा पर ठंडे मरहम के बराबर है।

म० डा० १ न०, १५५

२१. प्रेम सत्य का सक्रिय रूप है।

म० डा० १ न०, ३५६

२२. प्रेम कहो या दया, वह बलवान मनुष्य की निशानी है।

म० डा० १ न०, ३६२

२३. प्रेम तो त्याग से ही पनपता है।

बा० प० मी०, १७३

२४. ज्ञानपूर्ण प्रेम में सदा धैर्य होता है।

बा० प० मी०, २२६

२५. असली प्रेम का आधार सर्वथा उसके आध्यात्मिक अंश पर होता है, यद्यपि शुरू में वह इंद्रियों के द्वारा पैदा होता है।

बा० प० मी, २७०

२६. यदि प्रेम जीवन का नियम नहीं होता तो मृत्यु के बीच जीवन टिक नहीं सकता था। जीवन मृत्यु पर एक शाश्वत, सनातन विजय है।

मो० मा०, १६

२७. आदमी दो तरह से अपने दुश्मन को कैद करते हैं। एक सख्ती से और दूसरे मुहब्बत से।

प्रा० प्र० १, १०७

२८. मनुष्य को अपनी ओर खींचनेवाला अगर जगत में कोई असली चुंबक है तो वह केवल प्रेम ही है।

प्रा० प्र० १, १३१

२९. प्रेम और बैर का मेल किस तरह से हो सकता है?

प्रा० प्र० १, १४२

३०. अगर कोई गाली देता है तो उसका जवाब हम मुहब्बत से दें।

प्रा० प्र० १, १५४

३१. जो आदमी बुरा काम करता है, वह बुरा तो लगता है, मगर आखिर तो वह हमारा ही भाई है।

प्रा० प्र० १, १९८

३२. इंसान का बड़े-से-बड़ा उद्योग भगवान को पाने की कोशिश करने में है। वह मंदिरों, मूर्तियों या इंसान के हाथों बनाई हुई पूजा की जगहों में नहीं मिल सकता और न उसे व्रतों और उपवासों के जरिये ही पाया जा सकता है। ईश्वर सिर्फ प्यार के जरिये मिल सकता है, और वह प्यार लौकिक नहीं, अलौकिक होना चाहिए।

प्रा० प्र० २, ८१

३३. दुनिया में प्रेम सबसे ऊँची चीज़ है।

प्रा० प्र० २, ८४

३४. मित्रता में अद्वैत भाव होता है।

आ० क०, १५

३५. मित्रता समान गुणवालों के बीच शोभती और निभती है।

आ० क०, १५

३६. जिसके साथ हृदय की गांठ बंध गई है, केवल धन की कमी के कारण उसका वियोग सहना अनुचित कहा जायगा।

आ० क०, २६८

३७. सच्चा धर्म तो यही है कि मनुष्य को सब के साथ मैत्री रखना चाहिए और सब की सेवा करनी चाहिए ।

बि० कौ० आ०, २५७

३८. जैसे बिंदु का समुदाय समुद्र है, इसी तरह हम मैत्री करके मैत्री का सागर बन सकते हैं । और जगत में सब एक-दूसरे से मित्र-भाव से रहें तो इस जगत का रूप बदल जाय ।

बा० आ०, ७१

५—उदारता और सहिष्णुता

१. उदारता ही दया में निहित है और ऐसे उदारचित्त ही सच्चे मर्द हैं ।

म० डा० १न०, ३९२

२. दूसरे के प्रति उदारता रखनी चाहिए, अपने प्रति कृपणता ।

बा० प० प्रे०, १७९

३. हमें अपना हृदय दरिया की तरह विशाल रखना चाहिए । दरिया में लोग कितना कूड़ा-करकट फेंकते हैं, फिर भी उसमें नहाकर हम पवित्र हो जाते हैं । खारा होने पर भी उसकी कितनी ज्यादा जरूरत है, यह कभी सोचा है ? अगर हम इस तरह उदार बनें तो अपनी मानवता से दुनिया-भर में दरिया-जैसी आवश्यकता वाले महत्त्वपूर्ण देश के नागरिक के नाते ख्याति प्राप्त करेंगे ।

अं० झा०, ४

४. आचरण का सुनहरा नियम यह है कि आपस में यह समझकर सहिष्णुता रखी जाय कि हम सबके विचार एक-से कभी नहीं होंगे और हम सत्य को आंशिक रूप में और विभिन्न दृष्टियों से देख सकते हैं ।

स० ई०, ९२

५. अगर हम असहिष्णुता से दूसरों के मत का दमन करेंगे, तो हमारा पक्ष पिछड़ जायगा ।

सर्वो०, १०५

६. असहिष्णुता बताती है कि अपने ध्येय की सच्चाई में हमारा पूरा विश्वास नहीं है ।

मे० स० भा०, २३

७. सीधी बात को भी मनुष्य टेढ़ी समझे, उसे सहन करने में कितनी भारी अहिंसा चाहिए ।

बा० आ०, २७७

८. सहिष्णुता हमें आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, जो धर्मांधता से उतनी ही दूर है, जितना उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव । धर्म का सच्चा ज्ञान एक धर्म और दूसरे धर्म के बीच की दीवारों को तोड़ देता है ।

मो० मा०, ३६

९. प्रत्येक मानव अपने दृष्टिकोण से सच्चा है, परंतु यह असंभव नहीं कि प्रत्येक मानव गलत हो । इसीलिए सहिष्णुता की जरूरत पैदा होती है । इस सहिष्णुता-गुण का यह अर्थ नहीं कि हम अपने धर्म की उपेक्षा करें, वरन यह है कि अपने धर्म के प्रति हम अधिक ज्ञानमय, अधिक सात्त्विक और निर्मल प्रेम रखें ।

मो० मा०, ३६

१०. दुनिया में कई चीजें ऐसी होती रहती हैं, जो अपने मन की नहीं होतीं, फिर भी हम उन्हें सहन करते हैं ।

प्रा० प्र० १, १३४

११. सहिष्णुता के लिए यह जरूरी नहीं है कि जिस चीज को मैं सहन करूं, उसका मैं समर्थन भी करूं ।

मो० मा०, ३७

१२. असहिष्णुता भी एक प्रकार की गुंडागिरी ही है ।

बि० कौ० आ०, ३२२

६—धैर्य

१. धैर्य से, या शांति से, क्या नहीं हो सकता ! इसका तजुरबा लेना चाहें, तो रोज मिल सकता है ।

बा० आ०, २३३

२. यदि धैर्य का कोई मूल्य है तो उसे अंत तक सहन करना चाहिए, । और एक प्राणवान विश्वास कठोरतम तूफान के बीच में भी बना रहेगा ।

सि० गां०, २४४

३. विपत्ति के लिए धैर्य के सिवा और कोई इलाज नहीं है।

गां० सा०, ८४

४. हम धीरज खो दें तो हम हार जायंगे।

प्रा० प्र० २, २८५

५ अधीरज को धीरज से ही मारा जा सकता है और गरमी को सरदी से।

प्रा० प्र० १, १४१

६. जब हमारे दिल में शक पैदा हो जाता है तो अच्छा तरीका यही है कि हम धैर्य रखकर बैठे रहें, बजाय इसके कि हम कोई पत्थर फेंक कर मामले को और बिगाड़ें।

प्रा० प्र० १, १९५

७—विश्वास

१. अविश्वास आदमी को खा जाता है।

प्रा० प्र० २, २०७

२. जिस आदमी ने दूसरे व्यक्तियों में विश्वास पैदा कर दिया है, उसने इस संसार में कुछ नहीं खोया है।

हिं० स्व०, ५३-५४

३. जब विश्वास मूर्त्तिमान होता है तो बुद्धि के मारफत चमकता है।

खा०, २०१-०२

४. एक आदमी को दृढ़ विश्वास बनाने में धीमा होने की आवश्यकता है, परंतु एक बार बनाने के पश्चात बड़ी-से-बड़ी विषमता के विरुद्ध भी उसकी रक्षा की जानी चाहिए।

श० श्र०, १८

५. दृढ़ विश्वास इसीलिए होते हैं कि उनके लिए हम जियें और मरें और उनपर अमल तो जरूर ही करें। मगर वह दृढ़ विश्वास, जिस पर कुछ भी अमल न हो, निरर्थक है।

ऐ० बा०, १४१

६. विश्वास या तो प्राप्त किया जाता है या अंदर से पैदा होता है।

म० डा० २, २४

७. परस्पर विश्वास और सरल चित्त से दूसरों की बात समझ लेने की तैयारी, यही अहिंसा का राजमार्ग है।

गां० वा०, ४५

८. वह विश्वास कच्चा है, जिसे स्थिर रहने के लिए अनुकूल समय की अपेक्षा है। केवल वही सच्चा विश्वास है, जो विपरीत समय में भी स्थिर रहता है।

सि० गां०, २४२

८—कायरता-निर्भीकता

१. किसी हिंसक मनुष्य के किसी दिन अहिंसक बन जाने की आशा हो सकती है, मगर बुजदिल के लिए ऐसी कोई आशा नहीं होती।

सर्वो०, ६७

२. मैं यह जरूर मानता हूं कि जहां केवल कायरता और हिंसा के बीच ही चुनाव करना हो, वहां मैं हिंसा की सलाह दूंगा।

सर्वो०, ६८

३. जो पुरुष या स्त्री मौत का सारा डर छोड़ देता है, वह न सिर्फ अपनी ही रक्षा कर लेगा, बल्कि अपने प्राण देकर दूसरों को भी बचा लेगा।

सर्वो०, १३३

४. जो जान देता है, वही बचता है।

स्त्रि० स०, ६८

५. प्राणों का मोह छोड़ने से ही जीवन का आनंद मिल सकता है। यह त्याग हमारे स्वभाव का अंग बनना चाहिए।

स्त्रि० स०, ६८

६. डरपोकपन से बड़ा कोई पाप नहीं है।

स्त्रि० स०, १०१

७. कोई औरत गुंडों के सामने झुकने की बजाय यकीनन खुदकशी करना ज्यादा पसंद करेगी। दूसरे शब्दों में, जीवन की मेरी योजना में झुकने को कोई जगह नहीं है।

स्त्रि०, स०, १०१

८. साहस तथा पराक्रम से शून्य कभी सत्याग्रही नहीं बन सकता।

फ्रा० पै०, ११

९. अहिंसा कायरता का बहाना नहीं है, बल्कि यह तो वीरों का सर्वोच्च गुण है।

फ्रा० पै०, १२

१०. कायरता और अहिंसा पूर्णरूप से परस्पर विरोधी हैं।

फ्रा० पै०, १२

११. कायरता हिंसा से भी बुरी नामर्दी है।

फ्रा० पै०, १३

१२. कायरता से तो बहादुरी के साथ शारीरिक बल काम में लाना हजार दरजे अच्छा है। कायरता की अपेक्षा लड़ते-लड़ते मारा जाना हजार गुना अच्छा है।

गां० वा०, ५१

१३. जो मनुष्य मार के डर से गाली खाकर बैठ रहता है, वह न तो मनुष्य है, न पशु है।

गां० वा०, २५१

१४. डरनेवाले को सभी डराते हैं।

बि० कौ० आ०, १६८

१५. जो कमजोर हैं, निराधार हैं, उन्हें मारना बुजदिली है।

अं० भां०, ६६

१६. भाग जाने की अपेक्षा प्रहार करना कहीं अधिक अच्छा है।

गां० छ०, ३०

१७. गुंडे सिर्फ बुजदिल लोगों के बीच पनप सकते हैं।

गां० वा०, २७०

९—भूल मानना

१. मनुष्य कितना दुर्बल और भूलभरा प्राणी है।

ऐ० बा०, ७७

२. भूल करना मनुष्य का काम है और उसे सुधारना भी उसी का काम है। परंतु यह जानकर भी कि हम भूल कर रहे हैं, उसे न सुधारना मनुष्यता का पतन है।

ऐ० बा०, १४२

३. तमाम उन्नति गलतियों और उनके सुधार के द्वारा प्राप्त होती है।

सि० गां०, ३६

४. भूल करने के अधिकार का अर्थ प्रयोगों को आजमाने की स्वाधीनता है और यह समस्त उन्नति की विश्वव्यापी शर्त है।

सि० गां०, ४१

५. भूल को मानना एक झाड़ू के समान है, जो कि गंदगी को बुहारती है और फर्श को पहले से ज्यादा साफ कर देती है। संसार के सामने झूठा बनकर प्रकट होना अपने प्रति झूठा बनने की अपेक्षा लाखों गुना बेहतर है।

सि० गां०, २४६-४७

६. कोई अपयश भूल को मानने से इंकार करने की अपेक्षा बड़ा नहीं है।

सि० गां०, २४७

७. गलती करना गलत नहीं है, क्योंकि गलती कोई गलती समझकर नहीं करता, लेकिन गलती हमारे ध्यान में आ जाय और फिर भी हम उसे सुधारें नहीं; यह गलती है।

गां० ना० सं०, ४५

८. भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई भूल को मान लेना और इस तरह आचरण करना, कि जिससे वह भूल फिर न होने पावे, यह मर्दानगी है।

गां० बा०, १२२

९. बड़ी-से-बड़ी सावधानी के बावजूद यदि मनुष्य से गलतियां हो जायं, तो उन गलतियों से संसार को सचमुच कोई क्षति नहीं होती, और न किसी व्यक्ति को हानि पहुंचती है। जो मनुष्य ईश्वर से डरते हैं,

उनकी जान-बूझकर न की गई गलतियों के परिणामों से ईश्वर हमेशा संसार को बचा लेता है।

मो० मा०, २७

१०. हमेशा अपनी भूल स्वयं ही स्वीकार करने में जितनी श्रेष्ठता है, उतनी कागज पर लिखकर स्वीकार करने में या किसी और की मारफत स्वीकार करने में नहीं।

ध० च०, १२

११. मनुष्य जो भूल करता है, उसका फल भोगना ही पड़ता है।

ध० च०, ११४

१२. मनुष्य को हमेशा स्पष्ट रहना चाहिए। अपनी भूल को सूक्ष्म-दर्शक यंत्र से देखना सीखना चाहिए और दूसरे की भूल को पहाड़ पर से देखना चाहिए। यदि हम यह नियम अपना लें, तो हजारों पापों से बच जायं।

ध० च०, १८०

१३. मनुष्य जब अपनी भूल को पर्वत के समान मानकर दूसरे की भूल को अणु के समान समझे, तो ही उसका नाम मनुष्यता है।

बि० कौ० आ०, १२६

१४. दूसरे की भूल के लिए भी हमें उसे पीड़ा नहीं पहुंचानी चाहिए। हमें खुद कष्ट उठा लेना है। जो इस सुवर्ण नियम का पालन करता है, वह सब संकटों से बच जाता है।

य० मं०, १०१

१५. भूल करने से कोई मनुष्य बचा नहीं। इसलिए भूल तो मनुष्य से होती ही है, उसमें बहुत खतरा नहीं है। लेकिन उस भूल को छिपाने में खतरा है; क्योंकि एक भूल छिपाने के लिए जो झूठ बोलना पड़ता है वह दूसरी भूल होती है। इस तरह भूलों की परंपरा चालू रहे तो बेशुमार नुकसान भोगने पड़ सकते हैं।

बि० कौ० आ०, १९३

१६. भूलें अगर इरादे के साथ न की गई हों तो सदैव क्षमा के लायक हैं।

अं० भा०, ६०

१७. भूल की माफी मांगना अच्छा काम है, इसलिए उसकी शर्म कैसी ! माफी मांगने का अर्थ है, फिर से भूल न करने का निश्चय।

म० डा० १, २२६

१८. एक बार भूल मालूम हुई कि तुरंत उसे सुधारना चाहिए।

म० डा० २, ८४

१९. हम भूलें करके ही सीखते हैं। परंतु जहां भूल होने का ज्ञान हो, वहां अधिकांश मामलों में सुधार कर लेने की तैयारी ही काफी प्राय-श्चित और इलाज है।

बा० प० मी०, २२

२०. इंसान तो भूलों की पोटली है; लेकिन हमें उन भूलों को धोना चाहिए।

प्रा० प्र० १, ८

२१. हम कोई फरेब न करें। अपने में कोई गलती न रहे। यही धर्म का मार्ग है।

प्रा० प्र० १, २१३

२२. आखिर में गलतियां दुरुस्त करना भी इंसान का काम है। हम अपनी गलतियां दुरुस्त कर लेते हैं, तो हम इंसान बन जाते हैं।

प्रा० प्र० १, ४१४

२३. गलती सब करते हैं, उससे क्या ? लेकिन जब गलती पर कायम रहते हैं तब हम जो करते हैं, उसको शैतानियत मानता हूं। उसी पर कायम रहें, तो वह इंसानियत नहीं है।

प्रा० प्र० २, १७६-७७

१०—ईमानदारी और प्रतिज्ञा-पालन

१. इस दुनिया में धोखेबाजी का कोई ईलाज नहीं है।

खा०, २६

२. कानून द्वारा या शिक्षा द्वारा जबतक ईमानदारी व्यापारिक सदाचार का पूर्ण अंश नहीं बन जाती, तबतक एक व्यक्ति को शुद्ध वस्तुएं धीरज और उद्यम से प्राप्त करनी होंगी।

शा० नै० आ०, १०

३. अगर किसी की बेवफाई या बेईमानी साबित हो जाय, तो उसे गोली से मारा जा सकता है, जो कि मेरा तरीका नहीं है। पर फिजूल की बेऐतबारी जहालत और बुजदिली की निशानी है।

प्रा० प्र० २, २६०

४. ईमानदारी से काम करने में ही हमारी मुक्ति और हमारी सभी जरूरतों की पूर्ति भरी है।

प्रा० प्र० २, ३५५

५. वचन का पालन करो तो मन और कर्म से। मन से तो वचन पालन करने से जी चुराओ और कर्म से पालन करने का पुण्य प्राप्त करो, यह असंभव बात है।

बा० प० ज०, २५४

६. जिसे अपने वचन का मूल्य नहीं, वह दो कौड़ी का है।

यं० भां०, ६८

७. अगर कोई जानबूझकर अपना वचन-भंग करता है, तो बुरा करता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके लिए जहां तक हो सके, वहां तक मौन ही रखना चाहिए। कभी बेकार एक शब्द भी नहीं कहना चाहिए। अगर एक बार दिल की बात निकाल दी तो उसके मुताबिक काम करना चाहिए। हम ऐसा करेंगे, तभी हम एकवचनी बन सकते हैं।

प्रा० प्र० २, १६०

८. सब वचन पर कायम रहें, बोलें तो तौलकर बोलें, आवेश में तो

कुछ कहना ही नहीं चाहिए ।

प्रा० प्र० २, १६१

११—अनुशासन

१. प्रत्येक संग्राम में ऐसे मनुष्यों की टोलियां चाहिए जो अनुशासन मानें ।

बा० आ०, ७२

२. बगैर नियम के एक भी काम नहीं बनता । नियम एक क्षण के लिए टूट जाय, तो सारा सूर्य-मंडल अस्त-व्यस्त हो जायगा ।

बा० आ०, २६५

३. अनुशासन विपत्ति की पाठशाला में सीखा जाता है ।

मे० स० भा०, ३२१

४. अनुशासन और संयम ही हमें पशुओं से अलग करते हैं ।

विब०, ३८

५. जो मनुष्य अपने पर काबू नहीं रख सकता है, वह दूसरों पर कभी सच्चा काबू नहीं रख सकता ।

बा० आ०, १४१

६. दूसरे का डाला अंकुश गिरानेवाला होता है और अपना बनाया उठानेवाला ।

गां० बा०, २५३

१२—गुण-अवगुण

१. इस जगत में बिना दूषण के तो कोई भी नहीं है । हम उसे दूर करने का प्रयत्न ही कर सकते हैं ।

बा० प० अ०, ५३-५४

२. जिसके अंदर जीवमात्र की सेवा-वृत्ति की लगन पैदा होती है, उसमें दोष रह ही नहीं सकते ।

बा० प० अ०, २३६

३. हम दूसरों के दोष न देखें, अपने ही देखें, इसीसे जीवन सुखी

होता है और हम स्वच्छ रहते हैं।

बा० प० न०, २४७

४. किसी बुराई को केवल इसलिए रहने का नियमानुमोदित अधिकार नहीं है कि वह पुरानी है।

फ़ा० पै०, ६८

५. गुण अवगुण को दूर कर सकता है, पर अवगुण अवगुण को क्या दूर कर सकता है!

प० च०, ३५

६. जब मनुष्य अपनेमें निर्दोष होता है तो कुछ देवता नहीं बन जाता। तब वह सिर्फ सच्चा आदमी बनता है।

गां० वा०, ३७

७. पानी का स्वभाव नीचे जाने का है। इसी तरह दुर्गुण नीचे ले जाता है, इसलिए सहल होना चाहिए। सद्गुण ऊंचे ले जाता है, इसलिए मुश्किल-सा लगता है।

बा० आ०, २१३

८. अंधा वह नहीं जिसकी आंख फूट गई है; अंधा वह है जो अपने दोष ढांकता है।

बा० आ०, २८५

९. अपना दोष सौ-गुना बढ़ाकर देखो।

म० डा० ३, १५४

१०. कई बार मनुष्य अपने दोषों को वर्णन करके अपना गुण-गान करता है।

म० डा० १न०, ४७

११. यह कहना कि इस संसार में पूर्णता प्राप्त करना संभव नहीं, ईश्वर से इंकार करने के बराबर है। हमारे लिए सर्वथा निर्दोष होना असंभव नहीं है।

म० डा० १न०, १७

१२. हम सब जिसे दुष्ट मानते हों, उसे सजा देने का हमारा अधिकार नहीं। जो सचमुच दुष्ट होगा, उसे सजा देने के लिए

भगवान बैठा ही है ।

अं० आं०, १७७

१३. भगवान् बैठा हरएक आदमी को अपनी कमज़ोरियों का अनुमान लगाना चाहिए । जो आदमी अपनी कमज़ोरियों को जानते हुए भीबलवानों की नकल करता है, वह अवश्य ही असफल होता है ।

सि० गां०, १७८

१४. अगर हम सारी दुनिया के सामने यह जाहिर करें कि हमारा ही सब दोष है, दूसरे सब भले आदमी हैं, तो वह बुजदिली नहीं है । इससे हम गिरते नहीं हैं, बढ़ते ही हैं । हम बहादुर बनते हैं ।

प्रा० प्र० १, ४४०

१३—नम्रता और विनयशीलता

१. सत्य आदि का माप हम अपने पास रख सकते हैं, परंतु नम्रता का माप नहीं होता । स्वाभाविक नम्रता छिपी नहीं रहती ।

य० मं०, १०४

२. सच्ची नम्रता तो हम से जीव-मात्र की सेवा के लिए सर्वार्पण की आशा रखती है ।

य० मं०, १०६

३. हमारी नम्रता शून्यता तक जानी चाहिए ।

य० मं०, १०५

४. सत्य के शोधक को रजकण से भी नम्र होना चाहिए । दुनिया धूल को पैरों-तले रौंदती है, परंतु सत्य के शोधक को इतना नम्र बन जाना चाहिए कि धूल भी उसे कुचल सके । तभी, और तभी, उसे सत्य की झांकी मिलेगी ।

स० ई०, ३२

५. नम्रता के बिना सत्य अहंकार पूर्ण दिखावा-मात्र होगा ।

स० ई०, ३६

६. सत्य-परायण मनुष्य परीक्षाओं से गुजर कर शुद्ध और नम्र बन जाता है ।

स० ई०, ३७

७. सेवामय जीवन में नम्रता होनी ही चाहिए।

मं० प्र०, १२९

८. आम का पेड़ ज्यों-ज्यों बढ़ता है, त्यों-त्यों झुकता है। उसी तरह बलवान का बल ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों वह नम्र होता जाता है और त्यों-ही-त्यों वह ईश्वर का डर अधिक रखता जाता है।

गां० बा०, ११३

९. विनय से तात्पर्य है विरोधी के प्रति भी मन में आदर, सरल भाव, उसके हित की इच्छा और तदनुसार व्यवहार।

आ० क०, ३७१

१०. भाषा में शिष्टता और विनय तो कभी छोड़नी ही नहीं चाहिए।

ब० प०, ४२

१४—मौन

१. सत्य के शोधक को चुप रहना चाहिए।

स० ई०, ५५

२. सत्य के पुजारी के लिए मौन उसके आध्यात्मिक अनुशासन का एक अंग है।

स० ई०, ५५

३. प्रतिक्षण अनुभव लेता हूं कि मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिए तो कम-से-कम बोलो। एक शब्द से चले तो दो नहीं।

बा० आ, २४१

४. जहां बोलने के बारे में शंका हो, वहां मौन रहना ही सत्यव्रती का कर्त्तव्य है।

गां० सा०, १६४

५. यदि सब लोग सारा दिन न सही, सुविधानुसार कुछ घंटे या कुछ मिनिट भी मौन ले सकें और अंतर्मुख होकर आत्ममंथन करें, तो कितने ही पापों से बच सकते हैं।

बि० कौ० आ०, २२

६. मौन सत्य के शोधक के लिए बड़ा सहायक होता है। मौन की

स्थिति में आत्मा अपना मार्ग अधिक स्पष्ट रूप से देख पाती है और जो समझ में नहीं आता या कुछ भ्रम में डालनेवाला होता है, वह स्फटिक के समान स्पष्ट हो जाता है।

मो० मा०,३२

७. सत्य के पुजारी को मौन का सेवन करना चाहिए। जाने-अनजाने भी मनुष्य बहुत बार अतिशयोक्ति करता है, अथवा जो कहने लायक हो उसे छिपाता है, अथवा उसे बदलकर कहता है। ऐसे संकटों से बचने के लिए भी सत्य के पुजारी का अल्पभाषी होना जरूरी है।

मो० मा०,३२

८. मौन का अर्थ न बोलना, न इशारा करना, न देखना, न सुनना, न खाना, न पीना, अर्थात एकांत में रहकर अंतर्ध्यान होना। मौन के दिन ईश्वर का ध्यान होना चाहिए और मौन का हेतु अंतर्ध्यान होना है।

म० डा०२, ८१

१५—एकता और स्वावलंबन

१. बिखरी हुई पानी की बूंदें यों ही सूख जाती हैं, लेकिन वे एक-दूसरे से मिलकर महासागर बनाती हैं, जिनकी चौड़ी छाती पर बड़े-बड़े जहाज चलते हैं।

सर्वो०, ११५

२. सबसे बड़ी चीज यह है कि करोड़ों के एक साथ काम करने से जो शक्ति पैदा होती है, उसका सामना कोई शस्त्र-बल नहीं कर सकता।

प्रा० प्र०२, २००

३. स्वावलंबन स्वतंत्रता की बुनियाद है और परावलंबन गुलामी की निशानी है।

बि० कौ० आ०, १६०

४. अपने पैरों पर खड़े होने का अर्थ है न बाप की कमाई खाना, न ससुर की और न पति की। अपनी ताकत से जो टुकड़ा मिल जाय, उसी को खाकर रहना।

म० डा० २, २०३

५. जो चीज आदमी खुद पैदा न कर सके, उसके बिना काम चला

लेना चाहिए। इससे स्वावलंबन बढ़ेगा और वह उत्तरोत्तर प्रगति करेगा।

बि० कौ० आ०, १६०

१६—प्रायश्चित

१. प्रायश्चित का अर्थ है आत्मशुद्धि।

म० डा० १, २४१

२. जो मनुष्य अधिकारी के संमुख स्वेच्छा से और निष्कपट भाव से अपना अपराध स्वीकार कर लेता है और फिर कभी वैसा अपराध न करने की प्रतिज्ञा करता है, वह शुद्धतम प्रायश्चित करता है।

आ० क०, २३

३. पापी मनुष्य चाहे जितना पाप करे, लेकिन अंतिम समय में अपना पाप कबूल करके प्रायश्चित करे तो ईश्वर उसे माफ कर देता है। ईश्वर की इस सृष्टि में प्रत्येक मनुष्य का ही नहीं, जीव-जंतु और पशु-पक्षियों तक का कल्याण हो, ऐसी भावना मन में रखनी चाहिए; और ऐसा बल प्राप्त करने का एकमात्र उपाय सुबह-शाम ईश्वर का ध्यान करना है।

बि० कौ० आ०, १६३

४. अपना गुनाह हरएक को कबूल कर लेना चाहिए।

प्रा० प्र० २, २३९

५. गुनाह कबूल करने से वह हलका हो जाता है।

प्रा० प्र० २, २४०

१७—द्वेष

१. जो द्वेष से रहित है, उसे किसी तलवार की आवश्यकता नहीं है।

हिं० स्व०, ८६

२. यदि हिंसा, अर्थात घृणा, हम पर राज करती होती, तो हम बहुत पहले ही नष्ट होगए होते।

फ़ा० पै०, ४०

३. घृणा को केवल प्रेम से जीता जा सकता है। प्रतिहिंसा केवल

घृणा की सतह और गहराई को बढ़ाती है।

फ़ा० पै०, ८४

४. अपने भाइयों से घृणा करना, किसी जाति या वर्ग के लोगों को बुरा कहना, रोगी मन का चिह्न है और वह कोढ़ से भी बुरा है।

प्रा० प्र० १, ४५८

१८—क्रोध

१. जब आदमी क्रोध में होते हैं तब वे मूर्खता के बहुत-से काम करते हैं।

हिं० स्व०, ५४

२. बीमार के गुस्से पर भला कोई ध्यान देता है! बीमार की चिढ़ तो हमेशा पी ही ली जाती है।

बा० प० ज०,१०५

३. सब में एक ही जीव-आत्मा है। इसलिए किसी अन्य पर क्रोध करना अपने ऊपर क्रोध करने के समान ही है।

बा० प० ज०,२३१

४. गुस्सा किसी पर नहीं करना चाहिए, अपने खुद के ऊपर भी नहीं।

बा० प० ज०, २४७

५. क्रोध-रहित और द्वेष-रहित कष्ट-सहन का सूर्य जब उगता है, तब उसके सामने कठोर-से-कठोर हृदय भी पिघल जाता है और घोर-से-घोर अज्ञान भी नष्ट हो जाता है।

मो० मा०,४३

६. गुस्सा एक प्रकार का क्षणिक पागलपन है। जो लोग जानबूझ कर या बिना जाने इसके वश में अपने को होने देते हैं, उन्हीं को उनका नतीजा भुगतना पड़ता है।

गां० बा०, ६०

७. क्रोध करना भी एक विकार ही है। मन में अनेक प्रकार की इच्छाएं होते रहना भी विकार है।

म० डा० २, १७

८. क्रोध के प्रति क्रोध नहीं, अवगुण के प्रति अवगुण नहीं। क्रोध के

सामने शांति, अवगुण के बदले गुण, गाली के बदले प्रेम और बुराई के बदले भलाई-- यह धर्म है ।

म० डा० २, १७१

९. मन में क्रोध भरा हो और मुंह से प्रार्थना की जाय, तो उससे कुछ लाभ नहीं होता ।

बि० कौ० आ०, १२३

१०. जिसमें क्रोध है, उसमें जहर तो है ही ।

बा० प० प्रे०, १७१

११. हमारे दिल में ज्वालामुखी दहक रहा हो तब भी ठंडा रहने में हमारी अहिंसा की परीक्षा है ।

प्रा० प्र० १, २८

१२. हमारे चारों ओर अंगार जलते रहें तो भी हमें शांत ही रहना है और चित्त स्थिर रखते हुए हमें भी इस अंगार में जलना है ।

प्रा० प्र० १, १०१

१३. गुस्सा करने का मतलब है थोड़ा पागलपन होना ।

प्रा० प्र० १, १२६

१४. गुस्सा करना पागलपन है । हमें अपनी बुद्धि शांत रखकर सब बातों को समझना चाहिए ।

प्रा० प्र० १, १४६

१५. क्रोध से काम बिगड़ते हैं ।

प्रा० प्र० १, २८६

१९—अहंकार

१. शरीर की स्थिति अहंकार को लेकर है । शरीर का आत्यंतिक नाश मोक्ष है ।

बा० प० ज०, २७

२. जिसके अहंकार का सर्वथा नाश हुआ है, वह साक्षात सत्य बन जाता है । उसे ब्रह्म कहने में भी कोई बाधा नहीं हो सकती ।

बा० प० ज०, २७

३. मनुष्य में जब एक तरह का घमंड आ जाता है तब वह अपने अवगुण नहीं देख सकता। गर्व मनुष्य-जाति का दुश्मन है।

ए० च०, १५१

४. शून्यवत होने का अर्थ है, 'मैं करता हूं' की वृत्ति छोड़ना। इसमें निराशावाद के लिए स्थान ही नहीं है।

बा० प० स०, ८८

५. जबतक हम अपना अहंकार भूलकर शून्यता की स्थिति प्राप्त नहीं करते, तबतक हमारे लिए अपने दोषों को जीतना संभव नहीं है। ईश्वर पूर्ण आत्म-समर्पण के बिना संतुष्ट नहीं होता। वास्तविक स्वतंत्रता का इतना मूल्य वह अवश्य चाहता है।

मे० स० भा०, ६९

६. अहंकार का बीज शून्यता अनुभव करने से ही जाता है। एक भी क्षण कोई गहरा विचार करे तो उसे अपनी अति तुच्छता मालूम हुए बिना रह नहीं सकती।

म० डा० २, १८

२०—गुप्तता

१. मैं गुप्तता को पाप मानने लगा हूं।

स० ई०, १४१

२. अहिंसा भय और इसलिए गुप्तता से घृणा करती है।

रच० का०, १७

३. कितनी भी बड़ी कोई गुप्त संस्था कोई अच्छाई नहीं कर सकी। गुप्तता तुम्हारे आसपास बचाव की दीवार बनाने का उद्देश्य रखती है।

फ़ा० पै०, ८६

४. छिपाव ही पाप है।

गा० ना० सं०, ४६

५. मलिनता ही वह चीज है, जो गुप्तता और अंधकार खोजती है।

मो० मा०, ५३

६. आप जो कुछ भी करें, उसमें अपने प्रति और दुनिया के प्रति सच्चे और प्रामाणिक रहें। अपने विचारों को कभी न छिपायं। अगर अपने विचार प्रकट करने में आपको शरम मालूम हो, तो उन्हें मन में लाने में तो और अधिक शरम मालूम होनी चाहिए।

मो० मा०, ५३

२१—बदला

१. बदला (प्रतिहिंसा) भी दुर्बलता है।

फ़ा० पै०, १२

२. क़त्ल का बदला क़त्ल से या मुआवजे से कभी नहीं लिया जा सकता है।

फ़ा० पै०, २८

३. वैर का बदला हिंसा से न लें। सपने में भी किसी का बुरा न चाहें।

वि० कौ० आ०, १३७

४. बदला लेने की बात मीठी तो लगती है, लेकिन ईश्वर कहता है, बदला लेने का काम मेरा है।

प्रा० प्र० १, ३४

५. हमारा काम नहीं है कि अगर किसी ने हमारे साथ बुरा किया हो तो हम उसका बुरा करके बदला लें। बुरे का बदला हम भला करके लें, यह सच्ची इंसानियत है।

प्रा० प्र० १, ३०१

६. अगर एक आदमी पाप करता है तो क्या हम भी करें ? सोचेंगे तो मालूम होगा कि यह बुरा है। एक बुराई से दूसरी बुराई पैदा होती है।

प्रा० प्र० २, ११२

२२—अतिशयोक्ति

१. अतिशयोक्ति भी असत्य है।

गां० वा०, २६८

२. कोई भी बात बढ़ा-चढ़ाकर कहनी ही नहीं चाहिए। हमेशा अपनी

भूलों को पहाड़-सी बतलाने और पराये की भूलों को राई-जैसी मानने-वाला ही आगे बढ़ सकता है। खुदा के दरवाजे तक पहुंचने की यह एक बड़ी आसान तरकीब है।

अं० फ्रां०, १६०

३. बुरी बात को भी ज्यादा बढ़ाकर कहने से हम अपना मामला कमज़ोर कर लेते हैं।

प्रा० प्र० २, २५७

४. कोई भी चीज़ बढ़ाकर न बतावें। जब हम अपनी गलती बढ़ाकर और दूसरों की कम करके कहेंगे, तब यह माना जायगा कि हम आत्मशुद्धि के नियम का पालन करते हैं।

प्रा० प्र० २, ३३३

२३—कष्ट-सहिष्णुता

१. आनंद दूसरों को कष्ट देने से प्राप्त नहीं होता, बल्कि स्वेच्छा से स्वयं कष्ट सहने में आता है।

सि० गां०, १७

२. खुशी से सहन किया हुआ कष्ट कष्ट नहीं रहता, वह सदा रहने-वाले आनंद में बदल जाता है।

सि० गां०, १७

३. क्रोधहीन तथा द्वेषरहित कष्ट के उदीयमान सूर्य के सामने कठोरतम हृदय और बड़े-से-बड़ा अज्ञान नष्ट हो जाता है।

सि० गां०, १८

४. कठिनाइयां सामना करने या सहन करने को होती हैं, न कि हमें कायर बनाने के लिए।

खा०, १४६

५. विपरीत परिस्थिति पर विजय प्राप्त करना मनुष्य का विशेषाधिकार है।

खा०, ३२३

६. प्रकृति ने आदमी के अंत:करण में ऐसी किसी भी कठिनाई या कष्ट का सामना करने की योग्यता दी है जो कि उसके सामने बिना भड़काये आ जाय।

फ्रा० पै०, १७

२४—प्रयत्न–परिश्रम

१. प्रयत्न करने का संपूर्ण क्षेत्र हमारे पास है, परिणाम का क्षेत्र ईश्वर ने अपने हाथ में रखा है।

बा० प० ज०, ३०

२. प्रयत्नशील की दुर्गति नहीं है, ऐसा भगवान का आश्वासन है।

बा० प० ज०, ५४

३. प्रयत्न करते-करते मरने से अधिक शान की बात और क्या हो सकती है!

ऐ० बा०, ७६

४. प्रयत्न करने का एक भी मौका न छोड़ना हमारा कर्तव्य है। परिणाम लाना या चाहना, प्रभु के अधीन है। माता बालक को दूध पिलाते समय परिणाम का विचार नहीं करती, उसका परिणाम तो आता ही है।

गां० सा०, १६०

५. संतुष्टि प्रयत्न में होती है, न कि प्राप्ति में। पूर्ण प्रयत्न ही पूर्ण विजय है।

सि० गां०, २८

६. लड़ने में आनंद है। प्रयत्न में और उसके कष्ट में आनंद है, न कि स्वयं विजय में, क्योंकि ऐसे प्रयत्न का मतलब विजय ही है।

सि० गां०, २२५

७. हम प्रयत्न के मालिक हैं, फल के नहीं। मेहनत करके संपूर्ण संतोष मानें, उसमें कभी हार न मानें।

बा० प० म०, ३५

८. बूंद-बूंद करके सरोवर भरता है और कंकर-कंकर करके पाल बंधती है। उद्यम के आगे कुछ भी असंभव नहीं।

बा० प० म०, ६२

९. जागें वहीं से सवेरा; भूलें वहीं से फिर गिनें।

बा० प० म०, ७१

१०. अभ्यासी के लिए तो असफलता अधिक प्रयत्न का सुअवसर होती है।

बा० प० म०,२१

११. प्रयोग-मात्र में ठोकर-ठेस तो खानी ही होती है। जिसमें सोलहों आने सफलता है; वह प्रयोग नहीं, वह तो सर्वज्ञ का स्वभाव कहा जायगा।

स० ई०, ४३-४४

१२. जिनके हृदयों में ईश्वर निवास करता है, उनके लिए परिश्रम करना ही प्रार्थना है। उनका जीवन एक लगातार प्रार्थना या पूजा का काम है।

वि०,२५

१३. बिना परिश्रम यानी बगैर तप, कुछ भी हो नहीं सकता है तो आत्मशोध ही कैसे हो सकता है ?

बा० आ०, ११६

१४. हार शब्द हमारे कोश में होना ही नहीं चाहिए।

प्रा० प्र०२, १८५-८६

२५—बहादुरी : शहादत

१. कोई पीछे से छुरा भोंक दे, तो उसमें क्या बहादुरी है!

प्रा० प्र०१, १३

२. जो मरने को तैयार हो जाते हैं, बहादुर बनते हैं, उनसे मौत हट जाती है।

प्रा० प्र० १, ३७

३. शहादत कभी बेकार नहीं जाती।

प्रा० प्र० १, ५८

४. मारकर मरने में कोई बहादुरी नहीं है। वह झूठी है। न मारकर मरनेवाला ही सच्चा शहीद है।

प्रा० प्र० १, ५८

५. बहादुरी तलवार में नहीं है।

प्रा० प्र० १, १४५

६. निहत्थे रहकर जो बहादुरी दिखाई जाय वही असली बहादुरी है।

प्रा० प्र० १, १८९

७. जो आदमी खुशी से मर जाता है, वह मारनेवाले से कहीं ज्यादा बहादुर होता है।

प्रा० प्र० १, १९३

८. हमको बहादुर होना चाहिए। किसीसे न डरें, सिर्फ भगवान से डरें।

प्रा० प्र० १, ३४८

९. अहिंसा बहादुरी की पराकाष्ठा है।

प्रा० प्र० २, २०२

२६—कर्तव्य और अधिकार

१. अधिकारों का सच्चा स्रोत कर्तव्य है। अगर हम सब अपने कर्तव्य पूरे करें तो अधिकारों को ढूंढ़ने कहीं दूर नहीं जाना पड़ेगा।

स० ई०, १४

२. कर्म कर्तव्य है, फल अधिकार।

स० ई०, १४१

३. जहां हरएक व्यक्ति अधिकार चाहता है वहां कौन किसको अधिकार देगा ?

हिं० स्व०, ७२

४. जीवन कर्तव्य है, न कि अधिकारों तथा विशेषाधिकारों की पोटली।

रि० श्र०, ४८

५. मैं विश्वास दिलाता हूं कि जैसे शिशिर के बाद वसंत आता है, वैसे ही कर्तव्यों के बाद अधिकार आप चले आयंगे।

ऐ० बा०, १०७

६. अगर सब आदमी कर्तव्यों को छोड़कर अधिकारों पर जोर दें, तो पूर्ण उपद्रव और गड़बड़ हो जायगी।

फ़ा० पै०, ९५

७. जो कर्तव्य है, उसके पालन में किसी को दुख हो तो वह दुख

देना ही पड़ेगा।

म० डा० २, २७३

८. जो कर्तव्य-कर्म को समझता है और उसपर आचरण करता है, उसकी तृष्णा तो मिटती ही है। जिसकी तृष्णा नहीं मिटी, उसे कर्तव्य-कर्म का भान ही नहीं है। तृष्णा का पर्वत तो इतना ऊंचा है कि उसे कोई पार कर ही नहीं सकता। उसे धराशायी किये बिना अन्य कोई उपाय नहीं है। तृष्णा छोड़ना, अर्थात कर्तव्य का भान होना।

बा० प० प्रे०, २५

९. जो व्यक्ति अपने कर्तव्य का उचित पालन करता है, उसे अधिकार अपने-आप मिल जाते हैं।

मे० स० भा०, २१

१०. अधिकार प्राप्त करने के लिए हिंसा का आश्रय लेना शायद आसान मालूम हो, किंतु यह रास्ता अंत में कांटोंवाला सिद्ध होता है।

मे० स० भा, ४३

११. अगर हर आदमी हकों पर जोर देने के वजाय अपना फर्ज अदा करे, तो मनुष्य-जाति में जल्दी ही व्यवस्था और अपनत्व का राज्य कायम हो जाय।

मे० स० भा०, ४८

१२. पूरी तरह अदा किये गए फर्ज से जो हक नहीं मिलते, वे प्राप्त करने और रखने लायक नहीं हैं।

मे० स० भा०, ४९

१३. जो शक्ति कुदरती तौर पर फर्ज को अदा करने से पैदा होती है, वह सत्याग्रह से पैदा होनेवाली और किसी से न जीती जा सकनेवाली अहिंसक शक्ति होती है।

मे० स० भा०, ५१

१४. आदमी अपना कर्तव्य भूलकर हैवान बन जाय, यह दुख की ही बात है।

प्रा० प्र० १, १९५

१५. मौलिक हक वही तो हैं, जिनको अमल में लाने से लानेवाले

का भी भला हो और उसके पीछे सारे जगत का। आज हर आदमी यही सोचता है कि उसके हक क्या हैं। परंतु यदि आदमी बचपन से ही धर्म-पालन करना सीख जाय और अपने धर्म-ग्रंथों का अध्ययन करे तो उसको अपना हक भी साथ-साथ मिलता चला जाता है।

प्रा० प्र० १, २०२

१६. जो आदमी अपना फर्ज भूलकर सिर्फ हक की ही हिफाज़त करना चाहता है, वह इस बात को नहीं जानता कि जो हक अपने कर्त्तव्य-पालन से पैदा नहीं होता, उसकी कोई हिफ़ाजत कर नहीं सकता।

प्रा० प्र० १, २०५

१७. धर्म के साथ कर्म करने से हक पैदा होता है।

प्रा० प्र० १, २१६

१८. धर्म (कर्त्तव्य) अच्छी चीज है, हक अच्छी चीज नहीं।

प्रा० प्र० १, २१२

१९. सब को सिर्फ अपना फ़र्ज़ अदा करना चाहिए और नतीजे को भगवान के हाथ में छोड़ देना चाहिए। भगवान की मर्जी के बगैर कुछ भी नहीं होता।

प्रा० प्र० २, ८०

२०. हिंसा से हम हक ले नही सकते। मैं तो कहूंगा कि हिंसा से कुछ मिल ही नहीं सकता। लगता तो है कि मिल सकता है, लेकिन कैसे ?

प्रा० प्र० २, १०९

२१. हक तो तभी होता है, जब मजदूरी करने का इकरार कर दिया और वह दिल से किया, अर्थात मनसे, वचनसे, कर्म से किया ; लेकिन अगर दिल से काम नहीं करता हूं, सरदार (मालिक, काम करानेवाला) का बिगाड़ता हूं, सरदार देखता नहीं है, इसलिए धोखा दूं, तो यह पाप है।

प्रा० प्र० २, ११०

२२. सच्चा हक तो वही है, जो छीना न जा सके। वह तो धर्म के अमल से पैदा होता है।

प्रा० प्र० २, २७३

२७—वर्तमान का महत्त्व

१. यह विश्वास करना कि जो बात इतिहास में नहीं हुई है, वह बिल्कुल न होगी, आदमी की प्रतिष्ठा में अविश्वास की दलील देना है।

हिं० स्व०, ६५

२. आओ, हम दूरवर्ती दृश्य की बात न सोचें, हम वर्तमान का ही उपयोग करें।

ग्ली० बा० फी०, १७

३. समय पर जो बात सूझती है, वही शोभा देती है।

बा० प० स०, १०६

२८—विकास-प्रगति

१. विकास सदा प्रयोगात्मक होता है। गलतियां करने और उनको ठीक करने से ही सब प्रकार की प्रगति होती है।

स० ई०, १३८

२. कोई भलाई ईश्वर के हाथों घड़ी-घड़ाई नहीं आती, परंतु हमको ही बार-बार प्रयोग करके और बार-बार असफलताएं सहकर पैदा करनी होती है।

स० ई०, १३८

३. भूल करने का अधिकार, जिसका अर्थ प्रयोग करने की स्वतंत्रता है, सभी प्रकार की प्रगति की सनातन शर्त है।

स० ई०, १३८

४. मनुष्य के विकास के लिए जीवन जितना जरूरी है, उतनी ही मृत्यु जरूरी है।

स० ई०, १३८

५. विश्व में वस्तु-मात्र को जो विकासक्रम लागू होता है, उसी विकास-क्रम के पात्र धार्मिक विचार भी हैं।

य० अ०, ५६

६. अवसर मिलने पर सभी आदमी आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं।

सर्वो०, १६१

७. परिवर्तन प्रगति की एक शर्त है। जब मन किसी चीज को गलत मानकर उसके खिलाफ विद्रोह करता है, तब कोई ईमानदार आदमी यांत्रिक सुसंगतता का पालन नहीं कर सकता।

मो० मा०, २६

८. अपनी अपूर्णता महसूस करना प्रगति का पहला कदम है।

गां० वा०, २६६

९. आत्मा की गति बढ़ती ही रहती है।

प्रा० प्र० २, १६

खंड ४ : समाज

१—व्यक्ति

१. किसी भी व्यक्ति को अपने लिए जीने का हक नहीं। कोई अपनी शक्ति अपने लिए ही इस्तेमाल नहीं कर सकता। वह अपनी शक्ति का उपयोग समाज के लिए पूरी तरह कर सकता है।

स० ई०, १७०

२. समाज को उसके अंगभूत व्यक्तियों से अलग नहीं किया जा सकता।

बि० कौ० आ०, १५३

३. व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रकट होने का पूरा अवकाश केवल शुद्ध अहिंसा पर आधारित शासन में ही मिल सकता है।

मे० स० भा०, १२

४. वैयक्तिक आचरण और राजनैतिक आचरण में कोई विरोध नहीं है। सदाचार का नियम दोनों पर लागू होता है।

मे० स० भा०, १४

५. अगर व्यक्ति का महत्त्व न रहे तो समाज में भी क्या सत्त्व रह जायगा ?

मे० स० भा०, २३

६. वैयक्तिक स्वतंत्रता को अस्वीकार करके कोई सभ्य समाज नहीं बनाया जा सकता।

मे० स० भा०, २४

२—मानव-जाति

१. सजातीय और विजातीय की भावनाएं हमारे मन की तरंगें हैं। वास्तव में हम सब एक परिवार ही हैं।

आ० क०, २६६

२. ईश्वर के सामने सब आदमी समान हैं। किसी आदमी को इसलिए तिरस्कार से देखना कि वह सहधर्मी नहीं है, ईश्वर और मनुष्य के सामने पाप है।

दि० डा०, २१९

३. मानवता की मांगें किसी देरी को सहन नहीं करतीं।

दि० डा०, ३८९

३—समाज

१. हम यह भी न भूल जायं कि पशु-सृष्टि और मनुष्य में यही भेद है कि मनुष्य समाज का लिहाज रखता है।

खा०, ६४

२. कोई अहंकारी मनुष्य ही सबसे स्वाधीन और अपने-आप में समाया हुआ रहने का दावा कर सकता है।

खा०, ६४

३. अहिंसा सामाजिक धर्म है।

मे० स०, ३५

४. मामूली इंसान की कसौटी तो समाज में ही हो सकती है।

स० ई०, १३

५. संपूर्ण समाज के भले के लिए स्वेच्छापूर्वक सामाजिक मर्यादाओं को स्वीकार करने से व्यक्ति और समाज, जिसका व्यक्ति एक सदस्य है, दोनों की उन्नति होती है और दोनों का जीवन समृद्ध बनता है।

मो० मा०, ११७

६. मनुष्य की शांति की कसौटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय की टोच (चोटी) पर नहीं।

बा० आ०, २८७

७. समाज की सच्ची सेवा यह है जिससे समाज, यानी सब लोग, ऊंचे चढ़ें। समाज को देखकर ही मनुष्य कह सकता है, अमुक समाज कैसे ऊंचे चढ़ें।

बा० आ,०, २२५

८. स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता की तरह परावलंबन भी मनुष्य

का आदर्श है, और होना चाहिए।

मो० मा०, ६४

९. मनुष्य का सामाजिक परावलंबन उसे अपनी श्रद्धा की परीक्षा करने तथा यथार्थता की कसौटी पर खरा सिद्ध होने की क्षमता प्रदान करता है।

मो० मा०, ६४

१०. समाज पर मनुष्य की निर्भरता उसे नम्रता का पाठ सिखाती है।

मो० मा०, ६४

११. इंसान साथ-ही-साथ रहने के लिए पैदा हुआ है।

प्रा० प्र० १, १३१

१२. इंसान दूसरों पर निर्भर रहकर ही अपने-आप को इंसान बनाता है।

प्रा० प्र० १, २०५

१३. किसी अच्छे संगठित समाज में हमेशा पानी की कमी और अनाज की फसल बिगड़ने से होनेवाली आपत्ति से बचने का कामयाब इलाज पहले से ही सोच रखा जाता है।

प्रा० प्र० १, ३८३

१४. समाज क्या है ? आप सबसे समाज बना है। हम उसमें हैं तो समाज बनता है। समाज हमको नहीं बनाता है। हम उसको बनाते हैं।

प्रा० प्र० २, ३०३

४—स्त्री-पुरुष

१. मैंने स्त्री को सदा सहनशीलता की मूर्ति के रूप में देखा है।

आ० क०, २०

२. स्त्री अहिंसा का अवतार है। अहिंसा का अर्थ है असीम प्रेम और असीम प्रेम का अर्थ है असीम कष्ट सहने की शक्ति। यह शक्ति पुरुष की जननी, स्त्री के सिवा अधिक-से-अधिक मात्रा में और कौन दिखा सकता है !

सर्वो०, २०

३. जहां मूल रूप में स्त्री और पुरुष एक हैं, वहां यह भी उतना ही सच है कि शरीर-रचना की दृष्टि से दोनों में गहरा अंतर है। इसलिए दोनों का काम भी जुदा-जुदा ही रहेगा।

सर्वो०, ६६

४. मैं स्त्री-पुरुष की समानता में विश्वास रखता हूं। इसलिए स्त्रियों के लिए उन्हीं अधिकारों की कल्पना कर सकता हूं, जो पुरुष को प्राप्त हैं।

सर्वो०, ७२

५. जहां अहिंसक वातावरण है, जहां अहिसा की सतत शिक्षा है, वहां स्त्री अपने को आश्रित, कमजोर या निःसहाय नहीं समझेगी। जब वह शुद्ध होती है तब लाचार हो ही नहीं सकती। उसकी शुद्धता ही उसका बल, उसका कवच है।

सर्वो०, १३२

६. जब किसी स्त्री पर हमला होता है तब वह हिंसा-अहिंसा का विचार करने को नहीं ठहर सकती। उस समय आत्म-रक्षा ही उसका मुख्य कर्त्तव्य है। अपने शील की रक्षा करने के लिए जो भी उपाय या तरीका सूझे, उसे अपनाने की उसको स्वतंत्रता है।

सर्वो०, १३३

७. स्त्री का दमन अहिंसा से इंकार करना है।

सर्वो०, १५५

८. संसार भर की सारी स्त्रियां बहनें हैं, माताएं हैं, लड़कियां हैं, यह विचार ही मनुष्य को एकदम ऊंचा उठानेवाला है, बंधन से मुक्त य करनेवाला है ।

य० मं०, २२

९. स्त्री-पुरुष में चारित्र्य की दृष्टि से स्त्री का आसन ज्यादा ऊंचा है, क्योंकि आज भी वह त्याग, मूक तपस्या, नम्रता, श्रद्धा और ज्ञान की प्रतीक है।

स्त्रि० स०, ६

१०. स्त्री को अबला कहना उसकी मान-हानि करना है।

स्त्रि०, स०, ६

११. अगर अहिंसा हमारे जीवन का धर्म है तो भविष्य स्त्री के हाथ में है।

स्त्रि० स०, ६

१२. स्त्री-पुरुष दो अलग-अलग हस्तियां नहीं हैं, बल्कि एक ही हस्ती के दो हिस्से हैं।

स्त्रि० स०, ३१

१३. शांति और शालीनतापूर्ण तपस्या नारी-जाति का स्वभाव-सिद्ध लक्ष्य है।

स्त्रि० स०, ३०

१४. स्त्री त्याग की मूर्ति है। जब वह कोई चीज शुद्ध और सही भावना से करती है तो पहाड़ों को हिला देती है।

स्त्रि० स०, ३१

१५. मैंने स्त्री को सेवा और त्याग की भावना का अवतार मानकर उसकी पूजा की है।

स्त्रि० स०, ३६

१६. स्त्री के हृदय में इतनी दया भरी है कि वह दुख देखते ही पिघल जाता है।

स्त्रि० स०, ३६

१७. दिल को कारगर अपील स्त्री से ज्यादा दूसरा कौन कर सकता है?

स्त्रि० स०, ४४

१८. कोई इंसान कितना ही लंपट क्यों न हो, स्त्री की उज्ज्वल पवित्रता की आग के सामने उसे सिर नीचा करना ही पड़ेगा।

स्त्रि० स०, ६७

१९. सतीत्व पवित्रता की पराकाष्ठा है।

स्त्रि० स०, ६५

२०. आखिरकार जान पर खेल जाने की तैयारी ही हर हालत में

औरत की इज्जत बचा सकती है।

स्त्रि० स०, १००

२१. जो स्त्री मृत्यु से नहीं डरती, उसकी बेइज्जती करने की हिम्मत कोई नहीं कर सकता।

स्त्रि० स०, १००

२२. साधु पति अपनी पत्नी के प्रति बेवफा होता ही नहीं।

बा० प० ज०, ३०

२३. यदि इस बुद्धि-प्रधान युग में स्त्री धर्म की रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्रनारायण की सेवा करनी होगी, उसका शिक्षण लेना होगा।

बा० प० ज०, १०२

२४. पति-पत्नी एक-दूसरे के गुण-दोषों के बराबर के भागीदार हैं।

डिं० ड०, ७६

२५. स्त्री आत्म-बलिदान की मूर्ति है। लेकिन दुर्भाग्य से आज वह अपने इस जबरदस्त लाभ को नहीं समझती, जो पुरुष को प्राप्त नहीं है।

मो० मा०, १००

२६. पुरुष ने स्त्री को अपनी कठपुतली मान लिया है। स्त्री ने उसकी कठपुतली बनना सीख लिया है, और अंत में अनुभव से यह पाया है कि ऐसा बनने में ही सुविधा और आराम है।

मो० मा०, १०१

२७. स्त्रियां, जीवन में जो कुछ पवित्र और धार्मिक है, उसकी विशेष संरक्षिकाएं हैं। स्वभाव से रक्षण-शील होने के कारण जिस प्रकार वे अंधविश्वास-पूर्ण आदतों को धीरे-धीरे छोड़ती हैं, उसी प्रकार जीवन में जो कुछ पवित्र और उदात्त है, उसे भी वे जल्दी नहीं छोड़तीं।

मो० मा०, १०१

२८. जो निडर स्त्री यह जानती है कि उसकी पवित्रता उसकी मजबूत ढाल है, उसकी आबरू कभी लूटी नहीं जा सकती।

मो० मा०, १०४

२९. स्त्रियों के प्रति पुरुषों की दृष्टि माता-जैसी मीठी हो जायगी, तभी हमारी भव्य संस्कृति स्थायी बन सकेगी ।

ए० च०, ८१

३०. जिन देशों में स्त्रियों को सम्मान प्राप्त होता है, वे देश गौरवान्वित माने जाते हैं ।

श्रं० भ्रां०, १०

३१. ज्यों ही कोई स्त्री अपना विचार और जो लोग उससे गरीब और अभागे हैं उनका विचार अधिक करने लगती है, त्यों ही वह दया की देवी बन जाती है ।

वि०, १८१

३२. स्त्री पर कोई राक्षस बलात्कार करने आये तो वह मौका आत्महत्या का है, बशर्तेकि दूसरा कोई योग्य उपाय न हो ।

म० डा० २, ४७

३३. पुरुष की नकल से आज स्त्रियां न तो पूरी तरह उनकी नकल कर सकती हैं और न प्रकृति ने उन्हें जो देन दी है, उसका ही विकास कर सकती हैं ।

बि० कौ० श्रा०, १५५

३४. स्त्रियों में ईश्वर ने ममतापूर्ण हृदय रख दिया है, इसका उन्हें सदुपयोग करना चाहिए । यह शक्ति मूक होने के कारण अधिक कारगर है ।

बि० कौ० श्रा०, १५५

३५. स्त्रियां अपने प्रति हुए दुर्व्यवहार को भूल जाने के लिए हमेशा तैयार रहती हैं । इस गुण से स्त्री-जाति सुशोभित हुई है, परंतु स्त्री के इस गुण का पुरुष-जाति ने खूब दुरुपयोग किया है ।

बा० प० म०, ११८

३६. बहनों का सच्चा शृंगार तो स्वच्छ और पवित्र हृदय ही है । और वह शरीर के किसी भी कीमती आभूषण से कई गुना अधिक मूल्यवान है ।

बि० कौ० श्रा०, ३२

३७. शांति की स्थापना में स्त्रियां बहुत महत्त्वपूर्ण भाग ले सकती हैं। स्त्रियों को आजकल के वैज्ञानिक प्रवाह में न बहकर अहिंसा के विज्ञान में बहना चाहिए, क्योंकि स्त्रियों का स्वभाव कुदरती तौर पर क्षमा करने का है।

बि० कौ० आ०, १५५

३८. जिसे कुमारी रहने की इच्छा हो उसे वीरांगना बनना चाहिए। उसे प्रफुल्लित रहना चाहिए।

बा० प० मी०, ४४

३९. घर की संभाल रखना भी देश-सेवा है।

ए० च०, ६७

४०. कोई लड़की को ऐसा मानकर बैठे कि वह हमेशा के लिए अबला है, तो मैं कहता हूं कि जगत में कोई अबला है ही नहीं, सब सबला हैं। जिनके दिल में अपने धर्म की चोट पड़ी है, वे सब सबल हैं, वे दुर्बल नहीं है।

प्रा० प्र० १, ३६२

४१. भाइयों को चाहिए कि बहनों को पहले जगह देना सीखें। जिस देश में औरतों की इज्जत नहीं, वह सभ्य नहीं। दोनों को अपनी मर्यादा सीखनी चाहिए।

प्रा० प्र० २, २५८

५—वर्ण-व्यवस्था

१. वर्ण का अर्थ है कर्तव्य—धर्म।

म० डा० ३, १६

२. खाने-पीने और विवाह के साथ वर्ण का कोई भी संबंध नहीं है।

म० डा० २, २४०

३. वर्ण-व्यवस्था में शक्ति का दुर्व्यय रोकने का हेतु है।

म० डा० ३, १६

४. कोई भी मनुष्य अपने को दूसरे से ऊंचा मानता है, तो वह ईश्वर और मनुष्य दोनों के सामने पाप करता है। इस तरह जात-पांत, जिस हद तक, दरजे का फर्क जाहिर करता है, उस हद तक वह

बुरी चीज है ।

मे० स० भा०, २६३

५. जो ब्राह्मण आदर से अभिमानी बनेगा या अपने को ऊंचा मानेगा, वह उसी क्षण से ब्राह्मण नहीं रहेगा ।

स० ई०, १०

६. जिस धर्म का आधार ऊंच-नीच की दरजे-वार व्यवस्था है, विनाश उसके भाग्य में लिखा है ।

रि० अ०, ४८

६—विवाह

१. मैं विवाह को एक पवित्र संस्था मानता हूं ।

सर्वो०, ६८

२. सामान्य नियम के तौर पर मैं जीवन-भर एक पुरुष के लिए एक पत्नी के और एक स्त्री के लिए एक पति के पक्ष में हूं ।

सर्वो०, ७०

३. एकपत्नी-व्रत का पालन पति का कर्तव्य है ।

आ० क०, ८

४. पत्नी पति की दासी नहीं, उसकी सहचरी है, सहधर्मिणी है । दोनों एक-दूसरे के दुख-सुख के साझेदार हैं ।

आ० क०, ८०

५. विवाहित होते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन किया जाय, तो परिवार की सेवा समाज-सेवा की विरोधी न बने ।

आ० क०, २७६

६. पति के पापों में शरीक होना पत्नी का धर्म नहीं है ।

स्त्रि० स०, ८४

७. विवाहित जीवन वैसी ही साधनावस्था है, जैसी कोई दूसरी ।

स्त्रि० स०, ८४

८. विवाह का उद्देश्य इस लोक और परलोक दोनों में एक-दूसरे का कल्याण करना है ।

स्त्रि० स०, ८४

९. विवाह धार्मिक विधि है। वर-कन्या के लिए एक नया जन्म है।

बा० प० अ०, २०१

१०. विवाह करने का अर्थ है कि स्त्री और पुरुष साथ मिलकर संसार का जो जीवन-चक्र चल रहा है, उसे जारी रखने में, अर्थात संसार के दुख दूर करने में सहायक हों।

ध० च०, ६५-६६

११. थोड़े ही लोग औरत और मर्द के पवित्र रिश्ते का स्वाद लेने के लिए, ईश्वर को पहचानने के लिए, शादी करते हैं।

गां० वा०, १२१

१२. आज हम जिसे विवाह कहते हैं, वह विवाह नहीं, उसका आडंबर है। जिसे हम भोग कहते हैं, वह भ्रष्टाचार है।

गां० वा०, १२१

१३. विवाह जीवन की स्वाभाविक वस्तु है और उसे किसी भी अर्थ में पतन-कारी या निंदनीय समझना बिल्कुल गलत है। आदर्श यह है कि विवाह को धार्मिक संस्कार माना जाय और, इसलिए, विवाहित स्थिति में आत्म-संयम का जीवन बिताया जाय।

मो० मा०, ९७

१४. विवाह का हेतु पति-पत्नी के हृदयों से गंदे काम-विकारों को मिटाकर उन्हें शुद्ध बनाना और दोनों को ईश्वर के अधिक समीप ले जाना है। पति और पत्नी के बीच काम-विकार-रहित प्रेम का होना असंभव नहीं है।

मो० मा०, ९८

१५. विवाह जिस आदर्श तक पहुंचाने के लक्ष्य सामने रखता है, वह है शरीरों के संयोग द्वारा आत्मा का संयोग साधना। विवाह जिस मानव-प्रेम को मूर्त्त रूप प्रदान करता है, उसे दिव्य प्रेम अथवा विश्व-प्रेम की दिशा में आगे बढ़ने की सीढ़ी बन जाना चाहिए।

मो० मा०, १०६

१६. स्त्री-पुरुष के, पति-पत्नी के, सांसारिक जीवन की जड़ में भोग है। हिंदू धर्म ने उसमें त्याग पैदा करने की कोशिश की है, या यों कहें

कि सब धर्मों ने की है। पति ब्रह्मा-विष्णु-महेश है तो पत्नी भी वही है। पत्नी दासी नहीं, बराबर के हकोंवाली मित्र है, सहचरी है। दोनों एक-दूसरे के गुरु हैं।

म० डा०१, २४३

१७. गृहस्थाश्रम भोग के लिए नहीं, बल्कि धर्म के लिए बना है।

स० ई०, ३

१८. वर्णाश्रम में अंतर्जातीय विवाह या खानपान की न कोई मनाही थी और न होनी चाहिए।

सर्वो०, ६७

७—माता-पिता

१. मातृत्व का धर्म ऐसा है, जिसे अधिकांश स्त्रियां सदा ही धारण करती रहेंगी।

स्त्रि० स०, ६

२. आदर्श माता होना कोई आसान काम नहीं है।

स्त्रि० स०, ६

३. जो मां समझदार, तंदुरुस्त, अच्छी तरह पाले-पोसे बच्चे देश को देती है, वह जरूर देश की सेवा करती है।

स्त्रि० स०, १३

४. मां के गुणों का अनुकरण हो सकता है, अवगुणों का थोड़े ही हो सकता है!

म० डा० २, ५

५. माता का धर्म बच्चों की त्याग-वृत्ति को प्रोत्साहन देने का है।

म० डा० २, ५६

६. सच्चा पिता अपने से अधिक चरित्रवान पुत्र को जन्म देता है। सच्चा पुत्र वह है, जो पिता के किये हुए में वृद्धि करे।

म० डा० १न०, ४४

७. बच्चों का पालन-पोषण करना एक बड़ी कला है। इसमें माता-पिता को भारी व्रतों का पालन करना पड़ता है।

म० डा० १न०, २४८

८. बाप का धर्म प्रत्येक बालक के श्रेय के लिए जितना आवश्यक हो, उतना देना है। इससे आगे बढ़कर श्रेय को हानि न पहुंचे, इस हद तक अधिक देने की भी उसे छूट है, परंतु ऐसा करना उसका फर्ज नहीं है।

बा० प० म०, १०३

८—संतान

१. माता-पिता को अपने स्वार्थ के लिए अपनी संतान की गति-विधि या इच्छा को न रोकना चाहिए।

बा० प० ज०, २६

२. बच्चे साथ रखने से ही अच्छे रहते हैं, यह सिद्धांत रूप में नहीं मान लेना चाहिए।

बा० प० ज०, ८५

३. जैसे हम, वैसी ही हमारी संतान।

बा० प० ज०, ६४

४. संतानोत्पत्ति पूरी जिम्मेदारी की भावना के साथ ही करनी चाहिए।

स्त्रि० स०, १२

५. माता-पिता की भक्ति के लिए सब सुखों का त्याग करना चाहिए।

आ० क०, ७

६. पिता की आज्ञा का स्वेच्छा से पालन किया जाता है, तब वह आज्ञा-पालन पुत्रत्व का गौरव बन जाता है।

श० अ०, ३०

७. बालक जन्म से बुरा नहीं होता।

मे० स० भा०, २५६

९—पड़ोसी

१. पड़ोसी का कर्तव्य हमेशा पड़ोसी की धार्मिक रीति से मदद करना है।

बा० प० प्रे०, १४९

२. अपने पड़ोसी के हमेशा गुण देखने चाहिए, अपने सदा दोष देखने चाहिए। तुलसीदास-जैसे भी अंत में अपने को कुटिल कहते हैं।

म० डा० २, १५

३. हर इंसान का पहला फर्ज अपने पड़ोसी के प्रति है। इसमें परदेशी के प्रति द्वेष नहीं और स्वदेशी के लिए पक्षपात नहीं।

स० ई०, ५४

४. पड़ोसी के प्रति धर्म-पालन करने का अर्थ है जगत के प्रति धर्म-पालन। और किसी तरह दुनिया की सेवा हो ही नहीं सकती।

स० ई०, ५५

५. अगर पड़ोसी के प्रति सब अपना धर्म ठीक-ठीक पालन कर सकें, तो दुनिया में कोई मदद के बिना दुख न पायं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि मनुष्य पड़ोसी की सेवा करके दुनिया की सेवा करता है।

स० ई०, ५५

६. इस दुनिया में इंसान को रोज जितना चाहिए उतना कुदरत रोज पैदा करती है। उसमें अगर कोई अपनी जरूरत से ज्यादा काम में लेता है तो उसके पड़ोसी को भूखा रहना ही पड़ेगा। बहुत-से लोग अपनी आवश्यकता से अधिक लेते हैं, इसीलिए दुनिया में भूखों मरने की नौबत आती है।

स० ई०, ५०

१०—मानव-समानता

१. किसी इंसान को अपने से नीचा समझना कभी मनुष्य का काम नहीं हो सकता।

स्त्रि० स०, ३७

२. जब हम कुछ लोगों को अपने से नीचा मानने लगते हैं, तो समझना चाहिए कि हममें बुराई बहुत ज्यादा आ गई है।

स्त्रि० स०, ३७

३. जन्म से या बाहरी रिवाजों के पालन से ऊंच-नीच का निर्णय

नहीं किया जा सकता ।

स्त्रि० स०, ३८

४. ईश्वर ने किसीको ऊंच-नीच की छाप लगाकर पैदा नहीं किया ।

स्त्रि० स०, ३८

५. श्रेष्ठता और हीनता का भाव नैतिकता के अत्यंत प्रारंभिक सिद्धांतों के विरुद्ध है ।

रि० अ०, ३७

६. इस संसार में न कोई ऊंचा है न नीचा । इसलिए जो अपने को ऊंचा मानता है, वह कभी ऊंचा नहीं हो सकता । जो अपने को नीच मानता है, वह सिर्फ अज्ञान के कारण से । उसे उसके नीचे होने का पाठ उससे ऊंचापन भोगनेवालों ने सिखाया है ।

स० ई०, ६६

७. समानता तबतक नहीं होगी, जबतक कि एक आदमी दूसरे आदमी से छोटा या बड़ा अनुभव करता है । बराबरवालों में सहायता के लिए कोई स्थान ही नहीं होता ।

सि० गां०, १३२

११—अस्पृश्यता-निवारण

१. यदि आत्मा एक ही है, ईश्वर एक ही है, तो अस्पृश्य कोई भी नहीं ।

य० मं०, ६६

२. जो धर्म अस्पृश्यता को मानता या तदनुसार बरतता है, वह धर्म नहीं, अधर्म है, और नाश के योग्य है ।

य० मं०, ७१

३. अस्पृश्यता हिंदू धर्म का अंग नहीं है । यही नहीं, वह हिंदू धर्म में घुसी हुई सड़ांद है, वहम है, पाप है और उसका निवारण करना प्रत्येक हिंदू का धर्म है, उसका परम कर्तव्य है ।

य० मं०, ७१

४. अस्पृश्यता-निवारण करनेवाला ढेढ़-भंगी को अपनाकर ही संतोष नहीं मानेगा, वरन जबतक जीव-मात्र को अपनें में नहीं देखता

और अपने को जीव-मात्र में नहीं होम देता, तबतक वह शांत होगा ही नहीं। अस्पृश्यता मिटाने का मतलब है जगत-मात्र के साथ मैत्री रखना, उसका सेवक बनना।

य० मं०, ७४

५. जीव-मात्र के साथ का भेद मिटाना ही अस्पृश्यता-निवारण है।

य० मं०, ७५

६. शूद्र का अर्थ आध्यात्मिक दृष्टि से असंस्कृत और अज्ञानी मनुष्य है।

स० ई०, ८९

७. कोई भी जन्म से अछूत नहीं हो सकता, क्योंकि सभी उस एक आग की चिनगारियां हैं। कुछ मनुष्यों को जन्म से ही अस्पृश्य समझना गलत है।

सर्वो०, ३२

८. यदि विश्व में जो-कुछ है, सभी ईश्वर से व्याप्त है---अर्थात ब्राह्मण और भंगी, पंडित और मेहतर, भले ही वे किसी भी जाति के हों, यदि इन सबमें भगवान विद्यमान है---तो न कोई ऊंचा है और न कोई नीचा, सभी सर्वथा समान हैं। समान इसलिए कि सब उसी सृष्टा के प्राणी हैं।

सर्वो०, ६५

९. अस्पृश्यता धर्म की आज्ञा नहीं है; यह तो शैतान का आविष्कार है।

रि० अ०, ११

१०. अछूतपन मिटाने का अर्थ यह है कि अछूतों के सार्वजनिक संस्थाओं में जाने पर जो रुकावटें लगाई जाती हैं उन्हें दूर किया जाय; और उन्हें छूने पर जो छुआछूत मानी जाती है, उसे मिटाया जाय।

स० ई०, ९९

११. अस्पृश्यता ऐसा पाप है कि वह समाज की सारी रचना में ज़हर भरता है। इसलिए उसे मिटा डालना चाहिए।

म० डा० ३, १२१

१२. चमार के पेशे को पवित्र मानने के बजाय गंदा माना जाता है।

स० ई०, १३

१३. स्वर्ग जाने का जितना अधिकार वेद जाननेवाले को है, उतना ही भंगी का काम करनेवाले को है। लेकिन वेद जाननेवाला केवल वेदिया या पाखंडी हो, तो कितना ही विद्वान होने पर भी वह नरक में पड़ेगा, और भंगी ब्रह्म-अक्षर न जाने, तो भी ईश्वरार्पण बुद्धि से पाखाने साफ करे तो जरूर ऊंचा चढ़ जायगा।

म० डा० २, ४४

१४. प्रीतिभोज अस्पृश्यता-निवारण का अंग नहीं, तो भी वह उसका परिणाम है।

म० डा० २, १०७

१५. अछूतपन का पाप धोने के लिए कोई भी कष्ट अधिक नहीं।

म० डा० २, ५०

१६. मंदिर-प्रवेश अस्पृश्यता-निवारण का आवश्यक अंग है।

म० डा० २, ११३

१७. अस्पृश्यता आत्मा का हनन करनेवाला पाप है। जातपांत सामाजिक बुराई है।

म० डा० २, १०४

१८. अस्पृश्यता तो तमाम सत्य की, धर्म की और प्रगति की दुश्मन है।

म० डा० २, १०३

१९. अस्पृश्यता-निवारण में रोटी-बेटी का व्यवहार नहीं आता। लेकिन जो भी अछूत माने जानेवाले हरिजनों के साथ रोटी-बेटी का व्यवहार रखता है, वह अधर्म करता है, ऐसा मैं नहीं मानता।

म० डा० २, ११७

२०. हरिजनों के बहुत ही बड़े समुदाय की ज़ाहिरा दुर्दशा, का सारा कसूर सवर्ण हिंदुओं का ही है और अस्पृश्यता चली जायगी, तो उसके साथ ये सुधार अपने-आप हुए बिना नहीं रहेंगे।

म० डा० २, ३१४

२१. अछूतपन का जड़ से नाश तो तभी होगा, जब अछूतपन का नाम ही न रहे। मंदिरों का प्रश्न हिंदू जाति के उद्धार की बात है, आज तक किये गए पाप धो डालने की बात है, फिर भले ही अछूत मंदिरों में भी न जाना चाहें।

म० डा० २, १८७

२२. औरों को मूर्ति छूने का अधिकार न हो, तो अस्पृश्य भी न छुएं। मगर अछूतों को अछूतपन के कारण न रोका जाय। यह ब्राह्मणों के अधिकार की बात नहीं, बल्कि ज्ञान की बात है।

म० डा० २, १८७

२३. नापाक से नापाक मंदिरों में भी पाक दिल से जानेवाले भावुकों को जरूर ईश्वर के दर्शन होते हैं। यही उसकी अजीब कुदरत है, या यों कहिये कि यही उसकी माया है।

म० डा० २, २०८

२४. देश की आबादी के पांचवें भाग को अछूत रखकर हिंदू लोग संस्कार और नीति में बहुत ही गिर गए हैं।

म० डा० २, २२१

२५. हरिजनों में जो भी कुटेवें पाई जाती हैं, उनके लिए सवर्ण हिंदू ही जिम्मेदार हैं। ऊंचे माने जानेवाले वर्णों ने उनकी साफ रहने की सुविधाएं छीन ही नहीं ली हैं, बल्कि उनकी सफाई की प्रवृत्ति को ही मार डाला है।

म० डा० २, २८२

२६. जैसे सूर्य के प्रकाश का प्रतिबिंब चंद्रमा पर पड़ता है, वैसे ही हरिजनों पर हमारी पवित्रता का प्रतिबिंब पड़ेगा। आज तो उनपर हमारी अपवित्रता और गंदगी का ही प्रतिबिंब पड़ रहा है।

म० डा० २, २५५

२७. मंदिर-प्रवेश का प्रश्न केवल धार्मिक है।

म० डा० २, २६१

२८. सवर्ण हिंदू अगर अपने को हरिजनों पर उपकार करनेवाले

आश्रयदाता मानेंगे, तो हम बड़ी भूल करेंगे।

म० डा० २, ३८२

२९. भंगी हम सबसे ऊंचे हैं, क्योंकि उनकी सेवा सबसे बड़ी है।

प्रा० प्र० १, ११४

३०. हममें से हरएक को भंगी बनकर सेवा करनी चाहिए। जो मनुष्य पहले भंगी नहीं बनता, वह जिंदा नहीं रह सकता है। और न रहने का उसे हक है।

प्रा० प्र० १, २०४

३१. मंदिर-प्रवेश सुधार तबतक अपूर्ण रहेगा जबतक मंदिर ज़रूरी अदरूनी सुधार से, वास्तविक रूप में पवित्र न हो जायं।

प्रा० प्र० १, २१०

१२—सुधार

१. जबतक एक आदमी अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट रहता है तबतक उससे निकलने की प्रेरणा करना कठिन है। इसलिए ही हरएक सुधार से पहले असंतोष होता है।

हिं० स्व०, २७

२. सुधारक समय से कभी हार नहीं मानता।

खा०, २२

३. समय और परिस्थितियों से तरीके बदल जाते हैं।

खा०, ६०

४. जबतक निडर व्यक्तियों ने अमानुषिक रस्म-रिवाजों को नहीं तोड़ा है, तबतक कभी कोई सुधार नहीं हुआ है।

स्त्रि० स०, ७२

५. महापुरुष या समर्थ लोग बिना किसी हानि के जो कर सकते हैं, वह हम नहीं कर सकते।

स्त्रि० स०, १०

६. सुधारक लोग हुक्म देकर समाज से सुधार नहीं करा सकते। उन्हें समाज के दिल और दिमाग को समझाना होगा।

स्त्रि० स०, ११८

७. कोई आदमी कितना ही पतित क्यों न हो, यदि उसका इलाज कुशलता से और सहानुभूति के साथ किया जाय तो उसे सुधारा जा सकता है ।

गां० वा०, ६३

८. रिवाज के कुएं में तैरना अच्छा है, उसमें डूबना आत्महत्या है।

गां० वा०, २६५

९. कुरीति के अधीन होना पामरता है। उसका विरोध करना पुरुषार्थ है।

गां० वा०, २६५

१३—संस्थाएं

१. किसी भी संस्था का बारीकी से रखा गया हिसाब उसकी नाक है ।

आ० क०, १३१

२. किसी भी सार्वजनिक संस्था को स्थायी कोष पर निर्भर करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। इसमें उसकी नैतिक अधोगति का बीज छिपा रहता है ।

आ० क०, १७०

३. स्थायी संपत्ति के भरोसे चलनेवाली संस्था लोकमत से स्वतंत्र हो जाती है और कितनी ही बार वह उल्टा आचरण भी करती है।

आ० क०, १७०

४. लोग जिस संस्था को मदद देने के लिए तैयार नहीं हों, उसे सार्वजनिक संस्था के रूप में जीवित रहने का अधिकार ही नहीं है।

आ० क०, १७०

५. सार्वजनिक संस्थाओं के दैनिक खर्च का आधार लोगों से मिलनेवाला चंदा ही होना चाहिए ।

आ० क०, १७०

६. जिसे गिन्नियों में गिनती करने की आदत हो, उसे पाइयों में हिसाब लगाने को कहिये, तो वह झट से हिसाब कर सकेगा ।

आ० क० २१२

७. कोई संस्था सफलता के साथ नहीं चल सकती अगर उसके सदस्य, विशेषरूप से उसके अधिकारी, उसकी नीति को मानने से इंकार कर दें और उसका विरोध करते हुए भी उससे चिपटे रहें।

सि० गां०, २३२

८. जो मनुष्य संस्था में रहकर स्वतंत्र व्यवहार करता है, वह संस्था का घातक बनता है। काम करनेवाले सब लोग संस्था के नियमों का अक्षरशः पालन करें और एक तंत्र के अधीन रहकर चलें, तो ही संस्था बन सकती है, टिक सकती है और रह सकती है।

बि० कौ० आ०, १८०

९. कोई भी शक्तिशाली आंदोलन या संस्था बाहरी आक्रमणों से नहीं मर सकती। आंतरिक विनाश ही मृत्यु का कारण हो सकता है।

गां० का कुन०, ९५

१०. कोई भी सुपात्र संस्था जनता से मिलनेवाली मदद के अभाव के कारण नहीं मरती।

मे० स० भा०, ३२६

११. अगर कार्यकर्त्ता में कहीं भी दोष न हो तो आसपास का वायु-मंडल शुद्ध ही रहेगा।

स० ई०, ११

१२. जब नेता न रहें तब आचार-भ्रष्टता नहीं आनी चाहिए और अग्नि के सामने भी आत्म-समर्पण नहीं होना चाहिए।

सि० गां०, २३६

१३. मुख्य कार्यकर्त्ता तो जाने-अनजाने अपनी संस्था में होनेवाले दोष के लिए जिम्मेदार हैं ही। असत्य जहरीली हवा से भी ज्यादा जहरीला और ज्यादा सूक्ष्म है। जहां मुखिया की आध्यात्मिक दृष्टि है, जहां वह जाग्रत है, वहां यह सूक्ष्म जहर घुस नहीं सकता।

स० ई०, १२

१४. अच्छे स्वास्थ्य और निर्मल चरित्रवाला कोई आदमी मिल जाय, तो उसे सब काम सौंप देना।

म० डा० ३, ४९

१५. यदि सार्वजनिक सेवक में थोड़ा भी आडंबर या अभिमान होगा तो वह एक क्षण भी नहीं टिक सकेगा।

प० च०, १३२

१६. प्रत्येक महान उद्देश्य में लड़नेवालों की संख्या का महत्त्व होता है, परंतु वह गुण ही निर्णायक तत्त्व सिद्ध होता है, जिससे उन लड़ाकों का निर्माण हुआ है। संसार के बड़े-से-बड़े पुरुष हमेशा अकेले ही खड़े रहे है।

मो० मा०, ६६

१७. जब संस्थाओं का पूरा उत्तरदायित्व सिर पर आता है तभी सबसे अच्छे और सबसे बुरे आदमी की परीक्षा होती है। कोई सब से अच्छा आदमी तभी साबित होता है जब वह निर्लेप होकर काम करे।

गां० छ०, १२७

१८. हरएक शुद्ध आंदोलन के नेताओं को यह देखना पड़ता है कि वे उसमें शुद्ध लड़नेवालों को भरती करें।

सि० गां०, २३५

१९. उस आंदोलन में यथार्थता का अभाव होता है, जिसे कार्यकर्त्ता दबाव के अधीन चलाते हैं।

सि० गां०, १४७

२०. जीवन के सारे पहलुओं को अपने में समा लेनेवाला रचनात्मक काम करोड़ों जनता के सारे अंगों की शक्ति को जगाता है।

मे० स० भा०, ३०५

२१. श्रमप्रधान संस्थाओं में नौकर होते नहीं या थोड़े ही होते हैं। पानी भरना, लकड़ी फाड़ना, दिया-बत्ती तैयार करना, पाखाने और रास्ते साफ़ करना, मकानों की सफाई रखना, अपने-अपने कपड़े धोना, रसोई करना वगैरा अनेक काम तो ऐसे हैं, जो होने ही चाहिए।

स० ई०, ५

२३. कहीं कोई सभा हो रही हो और वहां कही जानेवाली बात हम नहीं सुनना चाहते हों तो हमें उठकर चले जाना चाहिए। चीखने-चिल्लाने की जरूरत नहीं है।

प्रा० प्र० १, ७

खंड ५ : ज्ञान और संस्कृति

१—ज्ञान

१. जो मानते हैं कि वे जानते हैं,; लेकिन उसपर अमल नहीं कर सकते, वे जानते ही नहीं, या जानने पर भी नहीं जानते।

बा० प० प्रे०, १३५

२. एक ही वस्तु को भिन्न-भिन्न मनुष्य भिन्न-भिन्न रीति से देखें, यह ठीक है। एक ही शक्ति का उपयोग भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है, यह हम रोज देखते हैं।

बा० प० प्रे०, १९५

३. मिथ्या ज्ञान से हम हमेशा डरते रहें। मिथ्या ज्ञान वह है, जो हमको सत्य से दूर रखता है या करता है।

बा० आ०, २७

४. समस्त ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण ही होना चाहिए।

मो० मा०, ५८

५. चरित्र के अभाव में ज्ञान केवल बुराई को जन्म देनेवाली शक्ति बन जाता है, जैसा कि संसार के अनेक 'प्रतिभाशाली चोरों' और 'सभ्य दुष्टों' के उदाहरणों में देखा जाता है।

मो० मा०, ५९

६. हमारे तत्त्व-ज्ञान की खाक के बराबर कीमत नहीं, अगर वह शनैः-शनैः प्रेममय सेवा में नहीं बदल जाता।

म० डा० १, ३३१

७. ज्ञान का अर्थ है सारासार का विवेक। जिस अक्षर-ज्ञान के परिणाम-स्वरूप यह विवेक-शक्ति न आये, वह ज्ञान नहीं।

म० डा० २, २५८

८. अच्छा और पूरी तरह प्राप्त किया हुआ ज्ञान यम-नियम के पालन से मिल सकता है ।

म० डा०३, १५५

९. ज्ञान किसी एक देश या जाति के एकाधिकार की वस्तु नहीं है ।

मे० स० भा०, ५

१०. जरूरत से अधिक ज्ञान ने अधिक अज्ञान और जड़ता पैदा की है । जैसे हमारे यहां जो समझदार जरूरत से ज्यादा समझदारी बताता है तो उसे अकलमंद दादा कहा जाता है; उसी तरह इस आवश्यकता से अधिक ज्ञान ने बरबादी ही की है ।

ए० च०, १७२

२—बुद्धि

१ .बड़े-से-बड़े वैज्ञानिक या अध्यात्मवादी का ज्ञान भी रजकण-जितना है ।

स० ई०, २१

२. जैसे गलत जगह पर रखे हुए पदार्थ ही कचरा बन जाते हैं, ठीक वैसे ही बुद्धि का दुरुपयोग करने पर वह पागलपन बन जाती है ।

स० ई०, ८५

३. बुद्धि को सर्वशक्तिमान मानना उतनी ही बुरी मूर्तिपूजा है, जितनी किसी वृक्ष या पत्थर को ईश्वर मानकर उसकी पूजा करना है ।

स० ई०, ८५

४. परमात्मा ने आदमी को बुद्धि इस लिए दी थी कि वह अपने विधाता को जाने; पर आदमी ने उसका दुरुपयोग किया, जिससे वह उसे भूल सके ।

हिं० स्व० ४८

५. अपनी बुद्धि को रुपये-आने-पाई में बदलने के बदले देश की सेवा में लगाइये ।

सर्वो०, ४०

६. जो चीज बुद्धि की कसौटी पर परखी जा सकती है, उसे हम जरूर परख लें; और जो इस कसौटी पर खरी न निकले, वह प्राचीनता का चोला पहनकर सामने आये तो भी हम उसे रद्द कर दें।

स्त्रि० स०, २७

७. मनुष्य को अपनी बुद्धि की शक्ति का उपयोग आजीविका या उससे ज्यादा प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि सेवा के लिए, परोपकार के लिए, करना चाहिए।

स० ई०, ४१

८. मनुष्य की प्रतिष्ठा उसके दिल में, हृदय में है, न कि उसके मस्तिष्क में, यानी बुद्धि में।

बा० आ०, १५३

९. हम बुद्धि की बात अधिकार-सीमा के ही भीतर मानें, तो सबकुछ ठीक हो जाय।

वि०, ३३

१०. जब बुद्धिवाद अपने सर्वशक्तिमान होने का दावा करता है, तब वह विकराल राक्षस बन जाता है।

वि०, ३३

११. बुद्धि से रुपया बटोरकर भोग-विलास के साधन खड़े करके ऐश-आराम में जीवन व्यतीत करना पाप है।

प० च० १२७

१२. ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि दी है, परंतु सदुपयोग की अपेक्षा उसका दुरुपयोग अधिक हुआ है।

बि० कौ० आ०, १७५

३—धर्म-ग्रंथ

१. मेरा यह विश्वास तो है कि मुख्य धर्म-पुस्तकें ईश्वरप्रेरित हैं; लेकिन उनमें दोहरी छनाई का दोष भी है। पहले तो वे किसी मानव-रूप संदेश-वाहक के द्वारा आती हैं और फिर उनपर टीकाएं लिखी जाती हैं।

स० ई०, ८७

२. ईश्वरीय ज्ञान पुस्तकों से उधार नहीं लिया जा सकता। उसे अपने ही भीतर अनुभव करना पड़ता है।

स० ई०, ८८

३. धर्मशास्त्रों का सच्चा अर्थ अनुभवी लोग ही कर सकते हैं।

स० ई०, ९०

४. शास्त्र तभी शास्त्र है जब वह शरीर, मन और आत्मा की भूख को मिटाने का पूरा मौका दे।

खा०, ९८

५. धर्म-शास्त्र के नाम पर जो कुछ छपता है, उस सभी को ईश्वर का वाक्य या वेदवाक्य मानना जरूरी नहीं है।

स्त्रि० स०, ४

६. हम किसी ऐसे शास्त्र को नहीं मान सकते जो इंसान को उसके जन्म के ही कारण ऊंचा या नीचा मानता हो।

स्त्रि० स०, ३८

७. निरंतर पवित्र पुस्तकों का ही संग रखें।

बा० पा० ज०, ३०

८. शास्त्र युक्ति और सत्य से ऊंचे नहीं हो सकते। उनका हेतु युक्ति को शुद्ध करना और सत्य को चमकाना है।

रि० अ०, १९

९. प्रमाणों का अंधानुकरण मन की दुर्बलता का चिह्न है।

शा० नै० आ०, १८

१०. यदि कोई बड़े धर्म-धुरंधर हों, मगर उनका धर्म सिर्फ पुस्तकों में और दिमाग में ही चक्कर काटता रहे तो वे कहने के ही धर्म-पंडित हैं।

म० डा०, २५३

११. पुस्तकों में लिखा हुआ सबकुछ वेदवाक्य नहीं माना जा सकता। जो सदाचार के खिलाफ है और अमानुषिक है, वह कहीं भी लिखा हो तो भी न माना जाय। सच-झूठ को तौलने की शक्ति जबतक हममें नहीं आती, तबतक पढ़ी हुई चीज के बारे में जिन बुजुर्गों पर विश्वास हो,

उनका कहना मानना चाहिए।

म० डा०१, ३२१

१२. शास्त्र का मुख से उच्चारण करने में कोई लाभ नहीं है, उस-पर अमल करने में ही लाभ है।

गां० वा०,१०६-१०

१३. स्वाध्याय के बराबर उदात्त या स्थायी और कोई वस्तु नहीं।

वि०, १८

१४. धर्म की बातें अरबी में हों, संस्कृत में हों या चीनी भाषा में हों, सब अच्छी ही हैं।

प्रा० प्र०१, २१

१५. महज संस्कृत में कुछ लिख देने से कोई वाक्य शास्त्र-वाक्य नहीं बन जाता।

प्रा० प्र०१, १६६

१६. शास्त्र की जो चीज हम पचा सकें, वही सार्थक है। जैसे वही आहार हमारे लिए सार्थक बनता है, जिसका हम रक्त बनायं।

प्रा० प्र०१, १७४

१७. शास्त्र के नाम से जो चलता है सबको शास्त्र न माना जाय; और शास्त्र वही माना जाय, जिसमें कम-बेश हमेशा होता रहे।

प्रा० प्र०१, २२८

४—शिक्षा

१. पढ़े हुए में से जो पसंद न आये उसे भूल जाना, और पसंद आये उस पर अमल करना।

आ० क०, ८

२. विद्याभ्यास में व्यायाम का, अर्थात शारीरिक शिक्षा का, मान-सिक शिक्षा के समान ही स्थान होना चाहिए।

आ० क०, ११

३. हम लोगों में यह भ्रम फैला हुआ है कि पहले पांच वर्षों में बालक को शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती। पर सच तो यह है

कि पहले पांच वर्ष में बालक को जो मिलता है, वह बाद में कभी नहीं मिलता ।

आ० क०, १७५

४. बच्चों की शिक्षा मां के पेट से शुरू होती है । माता-पिता के गर्भाधान-काल के शारीरिक श्रम और मानसिक स्थिति का प्रभाव बालक पर पड़ता है । गर्भ के समय की माता की प्रकृति और माता के आहार-विहार के भले-बुरे फल विरासत में लेकर बालक जन्म लेता है ।

आ० क०, १७५

५. मैंने हृदय की शिक्षा को, अर्थात चरित्र-विकास को, हमेशा पहला स्थान दिया है ।

आ० क०, २६२

६. हरएक बालक को बहुत-सी पुस्तकें दिलाने की मैंने जरूरत नहीं देखी । शिक्षक ही विद्यार्थी की पाठ्य पुस्तक है ।

आ० क०, २६५

७. बालक आंखों से जितना ग्रहण करते हैं, उसकी अपेक्षा कानों से सुनी हुई बात को वे थोड़े-से परिश्रम से बहुत अधिक ग्रहण कर सकते हैं ।

आ० क०, २६५

८. बुनियादी नीति-शास्त्र सब धर्मों में एक-सा है । बुनियादी नीति-शास्त्र की शिक्षा देना बेशक राज्य का काम है ।

स० ई०, १३१

९. बच्चों की शिक्षा का प्रारंभ वर्णमाला के साथ करने से उनका विकास रुक जाता है ।

सर्वो०, १५२

१०. शिक्षा का जरूरी अंग यह होना चाहिए कि बालक जीवन-संग्राम में प्रेम से घृणा को, सत्य से असत्य को और कष्ट-सहन से हिंसा को आसानी के साथ जीतना सीखें ।

सर्वो, १६५

११. शिक्षा से मेरा अभिप्राय यह है कि बच्चे और मनुष्य के

शरीर, बुद्धि और आत्मा के सभी उत्तम गुणों को प्रकट किया जाय। पढ़ना-लिखना शिक्षा का अंत तो है ही नहीं, वह आदि भी नहीं है।

सर्वो०, १६६

१२. पढ़ने, लिखने तथा गणित का अपना मूल्य है। इसलिए जिन्हें वह प्राप्त है, अशिक्षितों को उनका ज्ञान देना उन लोगों के लिए एक आवश्यक विशेष सेवा है।

ग्ली० वा० फो०, २०

१३. बहुत-सी किताबों में निर्दोष आनंद का भंडार भरा पड़ा है। वह हमें शिक्षा के बिना नहीं मिल सकता।

स्त्रि० स०, १५

१४. विदेशी माध्यम के द्वारा वास्तविक शिक्षा असंभव है।

गां० वा०, १९४

१५. परोपकार करना, दूसरों की सेवा करना और वैसा करते हुए ज़रा भी बड़प्पन न मानना, यही सच्ची शिक्षा है।

गां० सा०, ९६

१६. शिक्षा का अर्थ अक्षर-ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र का विकास, और धर्म-भावना का भान हैं।

गां० सा०, ९८

१७. विद्या की उमंग आज जिस कारण से होती है, वह उसे कलंकित करती है और उस हद तक वह कम हो जाय, तो उसमें भला ही है। विद्या मुक्ति के लिए यानी सेवा के लिए है। जिसमें सेवा की लगन होगी, वह विद्या प्राप्त करने की कोशिश करेगा ही, और उसकी विद्या उसे और समाज को सुशोभित करेगी। जब उसमें से रुपया पैदा करने का लालच दूर हो जायगा, तब विद्याभ्यास का क्रम बदल जायगा और उसे लेने और देने का तरीका भी बदल जायगा। उसका आज खूब दुरुपयोग होता है। इस नये दृष्टिकोण का आदर हो तो विद्या का कम-से-कम दुरुपयोग हो।

स० ई०,७३

१८. बच्चों की शिक्षा मां-बाप का धर्म है, ऐसा सोचें तो हमें बेशुमार

पाठशालाओं की अपेक्षा सच्ची शिक्षा का वायुमंडल पैदा करने की ज्यादा जरूरत है ।

स० ई०, ८८

१९. अनुभव बड़े-से-बड़ा स्कूल है ।

मे० स० भा०, २१३

२०. जबतक हमें सच्चा जीवन जीना नहीं आता, तबतक सारी पढ़ाई बेकार है । सच्चे जीवन में बनावट की गुंजाइश ही नहीं है । सत्य का पुजारी जैसा है, वैसा ही दिखाई देगा । उसके विचार, ज़बान और कामों में एकता होगी । ईश्वर को सत्य के रूप में जानने से यह शिक्षा जल्दी मिलती है । ऐसा सत्यमय जीवन बनाने के लिए बहुत-सी पोथियां उलटनी नहीं पड़तीं; मगर सारी बाजी ही हमारे हाथ में आ जाती है ।

म० डा०१, ३१७

२१. पढ़ा और सोचा हुआ किसी काम का न रहे, तो जान लेना चाहिए कि हम कुछ भी नहीं सीखे ।

म० डा०२, २५३

२२. शिक्षा मात्र आत्मोन्नति के लिए होती है । इसलिए इस प्रकार की शिक्षा लेनी चाहिए, जिससे यह उन्नति हो । उसका एक ही प्रकार हो, ऐसा जरूरी नहीं है ।

म० डा०३, १५५

२३. सच्ची शिक्षा का काम शिक्षा पानेवाले लड़कों और लड़कियों के उत्तम गुणों को बाहर लाना है ।

मे० स० भा०, २०७

२४. मनुष्य न तो कोरी बुद्धि है, न स्थूल शरीर है, और न केवल हृदय या आत्मा ही । संपूर्ण मनुष्य के निर्माण के लिए तीनों के उचित और एकरस मेल की जरूरत होती है और यही शिक्षा की सच्ची व्यवस्था है ।

मे० स० भा०, १९७

२५. अक्षर-ज्ञान न तो शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है और न उसका आरंभ । वह तो मनुष्य की शिक्षा के कई साधनों में से केवल एक साधन

है । अक्षर-ज्ञान अपने-आप में शिक्षा नहीं है ।

मे० स० भा०, १९७

२६. विद्याभ्यास सेवा के लिए ही होना चाहिए । लेकिन सेवा में अपूर्व आनंद रहता है; इसलिए विद्या आनंद के लिए है, ऐसा कहा जा सकता है ।

बा० प० प्रे०, १३०

२७. बच्चों को पढ़ाना या अनुशासन सिखाना ही हमारा ध्येय नहीं है । उन्हें चरित्रवान बनाना हमारा ध्येय है और उसीके लिए पढ़ाई, अनुशासन वगैरा हैं । उन्हें चरित्रवान बनाने में अनुशासन टूटे और पढ़ाई बिगड़े, तो भले ही टूटे और बिगड़े ।

बा० प० प्रे०, ३७

२८. बच्चों को जो देना चाहिए वह हम नहीं देते, ऐसा लगा करता है । सरल प्रयत्न से जो दिया जा सके, वह तो दें ।

बा० प० प्रे०, ४०

२९. सारा जीवन पाठशाला और शिक्षण-रूप बन जाना चाहिए ।

म० डा०१, २८६

३०. अनुभव सच्ची पाठशाला है ।

गां० सा०, ८७

३१. नई तालीम का आधार है सत्य और अहिंसा । व्यक्तिगत जीवन और सामजिक जीवन, दोनों में ये ही उसके आधार हैं ।

प्रा० प्र०२, २०३

३२. सच्ची शिक्षा हरएक को सुलभ होनी चाहिए । वह चंद लाख शहरियों के लिए ही नहीं, मगर करोड़ों देहातियों के लिए उपयोगी होनी चाहिए ।

प्रा० प्र०२, २०३

३३. यह शिक्षा तो जीवन की किताब में से मिलती है, उसके लिए कुछ खर्च नहीं करना पड़ता और उसे ताकत के जोर से कोई छीन नहीं सकता ।

प्रा० प्र०२, २०३

५—भाषा और सुलेख

१. किसी भी हिंदू बालक को संस्कृत का अच्छा अभ्यास किये बिना न रहना चाहिए।

आ० क०, १४

२. भारतवर्ष की उच्च शिक्षा के पाठ्य-क्रम में मातृभाषा के अतिरिक्त राष्ट्रभाषा हिंदी, संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी का स्थान होना चाहिए।

आ० क०, १४

३. हिदुस्तानी का मतलब यह। ह कि आसान बोली बोली जाय और वही लिखी-पढ़ी जाय।

प्रा० प्र०१, १५३

४. खराब अक्षर अधूरी शिक्षा की निशानी माने जाने चाहिए।

आ० क०, १२

५. अच्छे अक्षर विद्या का आवश्यक अंग हैं।

आ० क०, १२

६. बालकों को पहले चित्रकला सिखानी चाहिए।

आ० क०, १२

७. खराब अक्षर कोई छोटा-मोटा दोष नहीं। अच्छे अक्षर भूषण हैं। खराब अक्षरों से हम अपने मित्रों और बुजुर्गों पर बहुत बड़ा बोझ डालते हैं।

म० डा०१न०, ३३५

६—शिक्षक

१. जिस काम को हम शिक्षक न करें, वह बालकों से न कराया जाय और बालक जिस काम में लगे हों, उसमें उनके साथ उसी काम को करनेवाला एक-एक शिक्षक हमेशा रहे।

आ० क०, २९३

२. मैं स्वयं झूठ बोलूं तो अपने शिष्यों को वीरता नहीं सिखा सकता। व्यभिचारी शिक्षक शिष्यों को संयम किस प्रकार सिखायगा ?

आ० क०, २९६

३. शिक्षक शिष्यों के दोषों के लिए कुछ अंश में जरूर जिम्मेदार है।

आ० क०, ३००

४. शिक्षक का काम है कि वह शिष्य की अपूर्णताओं को दूर करे।

बा० प० ज०, २३७

५. मनुष्य का सच्चा शिक्षक वह स्वयं ही है।

मे० स० भा०, २१३

६. जिसे मारकर पढ़ाने की आदत पड़ गई हो, उसे अपनी आदत छोड़ना मुश्किल लगता है। लेकिन यह तो बंदूक-धारी सिपाही के अनुभव-जैसा हुआ। वह तो यही मानेगा कि गोली के बिना दुनिया में काम चल ही नहीं सकता। चलता है, यह सिद्ध करने का काम हमारा है। इसी तरह बच्चों के बारे में समझना चाहिए।

बा० प० प्रे०, ३३

७. शिक्षक शिष्यों से माफी मांगे तो अपना स्वाभिमान नहीं खोता, उल्टा वह बढ़ता ही है।

बा० प० प्रे०, १६७

८. जिस-जिस बारे में बच्चों को कुतूहल पैदा हो और उसकी हमें जानकारी हो, तो वह उन्हें बतानी चाहिए। जानकारी न हो तो अज्ञान मंजूर करना चाहिए। न बताने लायक बात हो तो रोक देना चाहिए और दूसरों से पूछने के लिए भी मना कर देना चाहिए।

म० डा०१, २४२

९. शिष्य के हृदय में पाठ उतारना शिक्षक का फर्ज है। कैसे उतारे, यह शिक्षक जाने। यह न जाने, तो शिक्षक काहे का !

म० डा०२, २६२

१०. वह शिक्षक अभागा है, जो मुख से एक बात पढ़ाता है और हृदय में दूसरी ही रखता है।

वि०, १७

११. सुघड़ घर के समान कोई स्कूल नहीं हो सकता; न ईमानदार और सदाचारी माता-पिता के समान कोई अध्यापक हो सकते हैं।

गां० का पुन०, ६०

७—विद्यार्थी

१. अधिक उम्र हो जाने पर भी पढ़ा जा सकता है।

आ० क०, ११०

२. जिसे सचमुच पढ़ने का शौक होता है, वह चाहे जहां अपनी इच्छा पूरी कर सकता है।

बा० प० ज०, २१५

३. शरीर बिगाड़कर पढ़ने से दोनों बिगड़ेंगे।

बा० प० ज०, २३६

४. विद्यार्थी-जीवन विचार-विकास का समय है।

बा० प० ज०, २६६

५. हमारा विद्यार्थी-जीवन तब शुरू होता है, जब हम कालेज और विश्वविद्यालय तथा कानून की शिक्षा छोड़ देते हैं।

ऐ० बा०, १४

६. जो विचार करना जानते हैं उनके लिए शिक्षक की जरूरत नहीं। शिक्षक हमें रास्ता बता सकते हैं, परंतु विचार करने की शक्ति नहीं दे सकते। वह शक्ति हमारे भीतर छिपी हुई रहती है।

ऐ० बा०, १४६

७. विद्यार्थियों को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए। वे विद्यार्थी तथा शोधक हैं, न कि राजनीतिज्ञ।

रच० का०, २६

८. हमारा सारा जीवन विद्यार्थी का होना चाहिए।

म० डा०१न०, ३३१

९. जो लड़का मन, शरीर और कार्य की पवित्रता की रक्षा नहीं करता, उसका पाठशाला में कोई काम नहीं, उसे निकाल देना चाहिए। शूरवीर लड़का हमेशा अपना मन पवित्र रखेगा, अपनी आंखें पवित्र रखेगा और अपने हाथ पवित्र रखेगा। जीवन के इन बुनियादी उसूलों को सीखने के लिए तुम्हें किसी स्कूल में जाने की आवश्यकता नहीं।

वि० गां० सी०, १०६

१०. सच्ची शिक्षा का निर्माण करने के लिए व्यक्तिगत जीवन की

शुद्धता एक अनिवार्य शर्त है।

घि०, ४३

११. विद्यार्थी अगर अपने को साधारण मजदूरों में गिनने लगें, तो उनकी बेकारी की समस्या बिना किसी कठिनाई के हल की जा सकती है।

वि०, ११६

१२. विद्यार्थी किसी दल का पक्ष क्यों लें! विद्यार्थियों का पक्ष एक है—विद्यार्थी तो विद्याभ्यास करते हैं, सारे मुल्क के लिए; अपने काम के लिए नहीं, अपना पेट भरने के लिए नहीं।

प्रा० प्र० २, २८०

१३. विद्यार्थियों के लिए न समाजवाद है, न कम्यूनिज्म है, और कांग्रेस भी नहीं—उनका एक ही काम है विद्याभ्यास करना, जिससे ज्ञान की वृद्धि हो।

प्रा० प्र० २, २८०

१४. हड़ताल विद्यार्थियों के लिए निकम्मी है। यह सबके लिए घातक है।

प्रा० प्र० २, २८०

८—समाचार-पत्र

१. दुनिया की दृष्टि में संपादक की सत्ता बड़ी चीज होती है, हालांकि संपादक स्वयं तो जानता है कि उसकी सत्ता उसके दफ्तर की दहलीज भी नहीं लांघ पाती।

आ० क०, १५७

२. समाचार-पत्र एक जबरदस्त शक्ति है, किंतु जिस प्रकार निरंकुश पानी का प्रवाह गांव-के-गांव डुबो देता है और फसल को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार कलम का निरंकुश प्रवाह भी नाश की सृष्टि करता है। यदि ऐसा अंकुश बाहर से आता है तो वह निरंकुशता से भी अधिक विषैला सिद्ध होता है। अंकुश अंदर का ही लाभदायक हो सकता है।

आ० क०, २४८

३. बार-बार प्रचार से कोई चीज मूल सत्य नहीं बन जाती; और न सत्य इसलिए मूल बन जाता है कि उसे कोई देखता नहीं।

स० ई०, ८८

४. अखबारों में जो आता है, उसमें कम-से-कम ५० फीसदी कम करके पढ़ो।

बा० प० ज०, २५०

५. जब आप कोई बात कहना चाहते हैं तो गोल-गोल बातें मत कहिये, कठोर बात को नरम शब्दों में कहना या चुटकियां लेना आदि न कीजिये, बल्कि सीधे साफ ढंग से कहिये।

ऐ० बा०, १४४

६. जब कोई संपादन की जिम्मेदारी लेता है, तो उसे अपना दायित्व पूरी कर्तव्य-भावना से पूरा करना चाहिए। इसी पद्धति से पत्रकार का धंधा चलाना चाहिए।

ऐ० बा०, १४४

७. जो अखबार में छपता है, उसपर भरोसा न करो। याद रखो कि खबर न मिलना खुशखबरी है।

बा० प० मी०, ३८४

८. निकम्मे अखबारों को आप फेंक दें। कुछ खबर सुननी हो दूसरों से जान-पूछ लें। अखबार न पढ़ेंगे तो आपका कोई नुकसान होनेवाला नहीं है।

प्रा० प्र०१, ५२

९. अखबारों से बहुत-सी बातें बनाई या बिगाड़ी जा सकती हैं।

प्रा० प्र०१, ५२

१०. बहुत-से अखबारनवीस ऐसे होते हैं, जो थोड़ा इधर पूछते हैं, थोड़ा उधर पूछते हैं और बात घड़ लेते हैं। वे लोग उच्छिष्ट भोजन खाते हैं। उच्छिष्ट भोजन करना अखबारनवीस का काम नहीं है।

प्रा० प्र०१, ६५

११. जो अखबारनवीस हैं, एडीटर हैं और जो अखबारों के मालिक हैं, उनको सच्चा बनना है, लोगों का सेवक बनना है। अखबारों में गलत

और झूठी खबरों को न जाने देना चाहिए और न लोगों को उकसानेवाली बातें छापनी चाहिए।

प्रा० प्र०१, ३९४

१२. हम अपने हृदय को साफ करें, गंदी चीज को पसंद न करें। गंदी चीज को पढ़ना छोड़ दें। अगर हम ऐसा करेंगे, तो अखबार अपना सच्चा धर्म पालन करेंगे।

प्रा० प्र०१, ३९५

१३. आजादी के जमाने में तो पब्लिक का यह फर्ज हो जाता है कि गंदे अखबारों को न पढे, उनको फेंक दे। जब उन्हें कोई लेगा नहीं, तो वे अपने-आप ठीक रास्ते पर चलने लगेंगे।

प्रा० प्र०१, ३९५

१४. अखबार आजकल की दुनिया में एक बड़ी सत्ता हो गए हैं और यदि चाहें तो वे बड़ा काम कर सकते हैं।

प्रा० प्र०१, ४२३

१५. किसी बयान का सार बनाने में मानी बदल जाने का खतरा रहता है।

प्रा० प्र०२, ३५९

९—कवि और कला

१. कवि के अर्थ का कोई पार नहीं है।

स० ई०, ९६

२. हमारी अंतस्थ सुप्त भावनाओं को जाग्रत करने का सामर्थ्य जिसमें होता है, वह कवि है। सब कवियों का प्रभाव सबपर एक-सा नहीं होता, क्योंकि सब लोगों में सभी अच्छी भावनाएं समान मात्रा में नहीं होतीं।

सर्वो०, ३

३. जो मनुष्य हममें सोई हुई उत्तम भावनाओं को जाग्रत करने की शक्ति रखता है, वह कवि है।

आ० क०, २५९

४. सच्चा सौंदर्य तो गुण में ही होता है।

आ० क०, २६९

५. प्रत्येक सच्ची कला में आत्मा की अभिव्यक्ति होनी चाहिए।

स० ई०, ९८

६. प्रत्येक सच्ची कला को अपना भीतरी रूप पहचानने में आत्मा का सहायक होना ही चाहिए।

स० ई०, ९८

७. मानव की कला-कृतियों का मूल्य उतना ही है, जितनी वे आत्म-साक्षात्कार में सहायक होती हैं।

स० ई०, ९८

८. जब कभी मनुष्य को सत्य में सौंदर्य दिखाई देने लगेगा, तब सच्ची कला जन्म लेगी।

स० ई०, ९९

९. भूखे मर रहे करोड़ों के लिए जो चीज उपयोगी हो सकती है, मुझे वह सुंदर ही दिखाई देती है।

स० ई०, १००

१०. जीवन की पवित्रता सबसे ऊंची और सबसे अच्छी कला है।

स० ई०, १००

११. सच्ची कला केवल रूप और आकृति की ही नहीं है। वह रूप और आकृति अंतर्निहित सत्य का भी विचार करती है।

स० ई०, १००

१२. सच्ची कला में कलाकार की आंतरिक पवित्रता, संतोष और आनंद का परिचय मिलना चाहिए।

स० ई०, २००

१३. कला अगर सच्ची कला है, तो उसमें शांति मिलनी चाहिए।

खा०, ९

१४. सच्ची कला उसका निर्माण करनेवालों के सुख, संतोष और शुद्धता का सबूत होनी चाहिए।

स्त्रि० स०, ४२

१५. एक कला वह है, जो जान लेने का काम करती है और दूसरी

कला वह जो जीवन-दान देती है।

स्त्रि० स०, ४२

१६. कला किसी देश या व्यक्ति का एकाधिकार नहीं होती। जिसमें छिपाने की जरूरत है, वह कला नहीं है।

बा० प० प्रे०, १३०

१७. समग्र सच्ची कला आत्मा की अभिव्यक्ति है। बाहरी रूपों का केवल इतना ही मूल्य है कि वे मनुष्य की आंतरिक भावना को अभिव्यक्त करते हैं।

मो० मा०, १११

१८. सच्चे कलाकार की दृष्टि में केवल वह चेहरा सुंदर है, जो अपने बाहरी रूप से बिल्कुल अलग आत्मा में बसे हुए सत्य की ज्योति से चमकता है। सत्य से अलग कोई सौंदर्य नहीं है। दूसरी ओर सत्य ऐसे स्वरूपों में अपने को प्रकट कर सकता है, जो बाहर से देखने में जरा भी सुंदर न हों!

मो० मा०, ११२

१९. जीवन समग्र कला से भी अधिक महान है। मैं इससे भी आगे बढ़कर यह घोषणा करूंगा कि जिस मनुष्य का जीवन पूर्णता के निकट-से-निकट पहुंचता है वह सर्वोच्च कलाकार है; क्योंकि उच्च और उदात्त जीवन की निश्चित बुनियाद और आधार के अभाव में कला का क्या मूल्य है!

मो० मा०, ११३

२०. अंत में सच्ची कला उन जड़ मशीनों के जरिये अभिव्यक्त नहीं की जा सकती, जो भाप और बिजली की शक्ति से चलती हैं और विशाल पैमाने पर माल तैयार करने के लिए बनाई गई हैं; सच्ची कला तो केवल स्त्री-पुरुषों के हाथों के कोमल प्राणवान स्पर्श के द्वारा ही अभिव्यक्त हो सकती है।

मो० मा०, ११३

२१. जीवन की शुद्धि सबसे ऊंची और सबसे सच्ची कला है। तालीम पाई हुई आवाज से मधुर संगीत को जन्म देने की कला तो अनेक लोग

सिद्ध कर सकते हैं, परंतु शुद्ध जीवन के स्वरों के सुमेल से मधुर संगीत को जन्म देने की कला बिरले ही लोग सिद्ध कर सकते हैं।

मो० मा०, ११३

२२. हम सबको जो रास्ता तय करना है, उसमें कला, साहित्य वगैरा सिर्फ साधन हैं। वे ही जब साध्य बन जाते हैं तब बंधन बनकर मनुष्य को गिराते हैं।

म० डा०१, २११

२३. कला को उपयोग से अलग नहीं किया जा सकता। हां, उपयोग का अर्थ अधिक-से-अधिक विशाल करना चाहिए।

म० डा०१, २८१

२४. मैं कला के दो भेद करता हूं—आंतर और बाह्य; और इनमें तुम किसपर अधिक जोर देते हो, यही सवाल है। मेरे नजदीक तो बाह्य की कीमत तबतक कुछ नहीं है, जबतक अंतर का विकास न हो।

गां० वा०, १४०

२५. जो कला आत्मा को आत्म-दर्शन करने की शिक्षा नहीं देती, वह कला ही नहीं है।

गां० वा०, १४०

१०—संस्कृति

१. दूसरी संस्कृतियों की समझ और कद्र स्वयं अपनी संस्कृति की कद्र होने और उसे हज्म कर लेने के बाद होनी चाहिए, पहले हरगिज नहीं। मेरा दृढ़ मत है कि कोई संस्कृति इतने रत्न-भंडार से समृद्ध नहीं है, जितनी हमारी अपनी संस्कृति।

सर्वो०, १६९

२. मेरा धर्म जहां यह आग्रह करता है कि स्वयं अपनी संस्कृतियों को हृदयांकित करके उसके अनुसार आचरण किया जाय, (क्योंकि वैसा न किया गया तो उसका परिणाम जातीय आत्म-हत्या होगा) वहाँ, दूसरी संस्कृतियों को तुच्छ समझने या उनकी उपेक्षा करने का वह निषेध भी करता है।

सर्वो०, १६९-७०

३. कोई संस्कृति जिंदा नहीं रह सकती, अगर वह दूसरों का बहिष्कार करने की कोशिश करती है।

सर्वो०, १७०

४. मैं चाहता हूं कि सब देशों की संस्कृतियों की हवा मेरे घर के चारों ओर अधिक-से-अधिक स्वतंत्रता के साथ बहती रहे। मगर मैं उनमें से किसीके झोंके में उड़ नहीं जाऊंगा।

सर्वो, १७०

५. एक देश, जिसकी संस्कृति का आधार अहिंसा पर है, यह जरूरी समझेगा कि उसका प्रत्येक घर अधिक-से-अधिक स्वावलंबी हो।

खा०, २११

६. जो संस्कृति सबसे अलग रहने का प्रयत्न करती है, वह जी नहीं सकती।

मो० मा०, १४४

७. मन की संस्कृति हृदय की संस्कृति के अधीन होनी चाहिए।

वि०, १९

८. भिन्न-भिन्न धर्मों और संप्रदायों को एक सूत्र में बांधनेवाली हमारी एक सामान्य संस्कृति है।

मे० स० भा०, २१४

९. आधुनिक सभ्यता का विशिष्ट लक्षण मानव की जरूरतों को बिना किसी मर्यादा के बढ़ाते जाना है। प्राचीन सभ्यता का लक्षण इन जरूरतों पर आवश्यक मर्यादा लगाना और इनका कठोर नियमन करना है।

मो० मा०, ११६

१०. शिष्टाचार और सहन-शक्ति तो इस तरह की होनी चाहिए कि हमारी संस्कृति अपना स्वयं परिचय दे।

प्रा० प्र०१, ३३५

खंड ६ : राजनीति

१—राजनीति और धर्म

१. जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति से धर्म का कोई वास्ता नहीं, वे नहीं जानते कि धर्म का अर्थ क्या है।

आ० क०, १३७

२. मेरे लिए धर्म-रहित राजनीति बिल्कुल गंदी चीज है, जिससे हमेशा दूर रहना चाहिए।

स० ई०, १३७

३. राजनीति में भी हमें स्वर्ग का राज्य स्थापित करना होगा।

स० ई०, १३१

४. आज मनुष्य की सारी प्रवृत्तियां एक अविभाज्य वस्तु बन गई हैं। आप सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक कार्य को एक-दूसरे से अलग करके बिल्कुल अलग-अलग विभागों में नहीं बांट सकते। मैं मानवीय प्रवृत्ति से अलग किसी धर्म को नहीं जानता।

स० ई०, १३७

६. मेरी दृष्टि में राजनैतिक सत्ता कोई साध्य नहीं है, वरन जीवन के प्रत्येक विभाग में लोगों के लिए अपनी हालत सुधार सकने का वह साधन है।

सर्वो०, ८६

७. व्यक्ति के आत्मा होती है, परंतु, चूंकि राज्य एक आत्मा-रहित मशीन होता है, इसलिए उससे हिंसा कभी नहीं छुड़वायी जा सकती, उसका तो अस्तित्व ही हिंसा पर निर्भर है।

सर्वो०, ८४

८. यदि आदमी केवल यह अनुभव कर ले कि उन कानूनों को, जो

अन्यायपूर्ण हैं, मानना पौरुषहीनता है, तो किसी आदमी का अत्याचार भी उसे गुलाम न बना सकेगा। स्वराज्य की यही कुंजी है।

हिं० स्व०, ८१

९. इस बात में विश्वास करना एक अंधविश्वास और परमात्मा में अश्रद्धा की बात है कि बहुसंख्या के काम अल्पसंख्याओं को बांधते हैं।

हि० स्व०, ८९

१०. जैसा नेता करेंगे, जनता बदले में खुशी से वैसा ही करेगी।

हिं० स्व०, ९५

११. जो चीज राजनैतिक है, उसमें सामाजिक और धार्मिक तत्त्व भी हैं।

खा०, २६४

१२. मैं राजनीति और धर्म को एक-दूसरे से अलग नहीं समझता। सच्चा धर्म जीवन की हरएक प्रवृत्ति में व्याप्त होना चाहिए।

म० डा०२, ११६

१३. आजकल की राजनीति अविश्वास से चल ही नहीं सकती।

प्रा० प्र०२, ३३४

२—राष्ट्र और राष्ट्रीयता

१. राष्ट्र एक दिन में नहीं बनता, उसके निर्माण में वर्षों लगते हैं।

हिं० स्व०, २५

२. जो आदमी राष्ट्रीयता की भावना को समझते हैं, वे एक-दूसरे के धर्म में हस्तक्षेप नही करते। यदि ऐसा करते हैं तो वे एक राष्ट्र समझे जाने के योग्य नहीं हैं।

हिं० स्व०, ४८

३. दुनिया के किसी भाग में भी राष्ट्रीयता और धर्म पर्यायवाची शब्द नहीं हैं। न कभी ऐसा भारत में हुआ है।

हिं० स्व०, ४९

४. वह राष्ट्र महान है, जो मृत्यु-रूपी तकिये पर अपने सिर को विश्राम देता है। जो मृत्यु को ललकारते हैं, वे सब भयों से मुक्त रहते हैं।

हिं० स्व०, ८२

५. एक अहिंसक राष्ट्र को दास बनानेवाली कोई बात नहीं है ।

ग्ली० बा० फी०, १६

६. रोम, यूनान, बेबीलोन, मिस्र और अन्य कई राष्ट्र इस बात के प्रमाण हैं कि अपने दुष्कर्मों से राष्ट्र का पहले भी नाश हुआ है ।

खा०, २३

७. प्रत्येक राष्ट्र की अपनी विशेषताएं होती हैं और अपना व्यक्तित्व होता है ।

खा०, २३

८. व्यक्तियों की भांति राष्ट्रों का निर्माण भी केवल बलिदान के द्वारा हो सकता है, और किसी तरह नहीं ।

ऐ० बा०, २७

९. राष्ट्रीय रुचियों-अरुचियों का निर्णय बुद्धि से नहीं होता ।

ऐ० बा०, ६९

१०. अहिंसक रूप से बने समाज या राष्ट्र को अपने ढांचे पर बाहर या भीतर के आक्रमण का सामना करने के योग्य होना चाहिए ।

रच० का०, २१

११. राष्ट्रों ने विकास और क्रांति के द्वारा उन्नति की है । पहली उतनी ही आवश्यक है, जितनी कि दूसरी ।

सि० गां०, ३४

१२. जिस राष्ट्र में असीम बलिदान की योग्यता है, उसीमें असीम ऊंचाई तक उठने की क्षमता है । बलिदान जितना अधिक शुद्ध होता है, उतनी ही अधिक तीव्र उन्नति होती है ।

सि० गां०, १२८

१३. राष्ट्रवादी हुए बिना कोई अंतर्राष्ट्रवादी नहीं हो सकता । अंतर्राष्ट्रवाद तभी संभव है जब राष्ट्रवाद सिद्ध हो चुके; यानी जब विभिन्न देशों के निवासी अपना संगठन करने और हिलमिल कर एकतापूर्वक काम करने की सामर्थ्य प्राप्त करलें ।

मे० स० भा०, १५

१४. हमारी राष्ट्रीयता दुनिया के दूसरे राष्ट्रों के लिए खतरा नहीं

बन सकती, क्योंकि जिस तरह हम किसी राष्ट्र को अपना शोषण नहीं करने देंगे, उसी तरह हम दूसरे किसी राष्ट्र का शोषण नहीं करेंगे। अपने स्वराज्य के जरिये हम सारी दुनिया की सेवा करेंगे।

मो० मा०, ६२

१५. राष्ट्रवाद बुरी वस्तु नहीं है। बुरी वस्तु है मन की संकीर्णता, स्वार्थ और बहिष्कार की वृत्ति, जो आधुनिक राष्ट्रों का अभिशाप है। आज प्रत्येक राष्ट्र दूसरे को नुकसान पहुंचाकर लाभ उठाना चाहता है और दूसरे का नाश करके ऊपर उठना चाहता है।

मो० मा०, ६५

१६. किसी देश ने कष्टों की शक्ति के द्वारा शुद्ध हुए बिना कभी उन्नति नहीं की है। मां इसलिए कष्ट सहती है कि उसका बच्चा जीवित रहे।

सि० गां०, १२८

१७. देश-प्रेम दूसरों का बहिष्कार नहीं करता। वह सारे जगत को अपने भीतर समा लेनेवाला है।

मो० मा०, १२४

३—स्वतंत्रता

१. जहां स्वतंत्रता तथा अक्षर-ज्ञान के बीच ही चुनाव करना है, वहां कौन कहेगा कि स्वतंत्रता अक्षर-ज्ञान से हजार गुनी अधिक अच्छी नहीं है!

आ० क०, १७३

२. स्वतंत्रता के लिए निरक्षर रहकर आम रास्ते पर पत्थर तोड़ना, गुलामी में रहकर अक्षर-ज्ञान प्राप्त करने से, कहीं अच्छा है।

आ० क०, १७३

३. जो जनता स्वतंत्रता चाहती है, उसके पास अपनी रक्षा का अंतिम उपाय होना चाहिए।

आ० क०, ३३०

४. व्यक्तिगत स्वतंत्रता विशुद्ध अहिंसा के शासन में ही पूरी तरह काम कर सकती है।

सर्वो०, ८२

५. कोई आदमी या आदमियों का समूह किसी आदमी या आदमियों के समूह को दास बना कर नहीं रख सकता।

ग्ली० बा० फी०, १३

६. संसार में ऐसी कोई जाति किसी शक्ति के द्वारा, संभवतया, दबा कर नहीं रखी जा सकती, जो वास्तव में पूर्णतम स्वाधीनता के लिए तैयार है।

ग्ली० बा० फी०, १६

७. गुलाम के भाग्य में सताया जाना ही होता है।

खा०, १२७

८. आजादी की कीमत मौत है।

ऐ० बा०, १३

९. सत्य तथा अहिंसा के द्वारा पूर्ण स्वातंत्र्य का अर्थ जाति, रंग तथा संप्रदाय के भेद-भाव के बिना हरएक इकाई का स्वातंत्र्य है, चाहे वह राष्ट्र का सबसे छोटा व्यक्ति ही हो। यह स्वातंत्र्य कभी भी विघटनकारी नहीं होता।

रच० का० ७

१०. जब शैतान स्वाधीनता, समानता और ऐसी ही दूसरी बातों का समर्थक बनकर आता है, तो वह प्रायः अपने-आपको अनिवार्य बना लेता है।

ह्रि० डू० ८

११. सर्वोच्च कोटि की स्वतंत्रता के साथ सर्वोच्च कोटि का अनुशासन और विनय होता है। अनुशासन और विनय से मिलनेवाली स्वतंत्रता को कोई छीन नहीं सकता।

मे० स० भा०, १७

१२. स्वतंत्रता का मैं तो यह अर्थ करता हूं कि स्वतंत्र मनुष्य अपनी जरूरतों की पूर्ति में किसी का सहारा न ले। स्वतंत्रता का अर्थ केवल

भौगोलिक स्वतंत्रता नहीं है।

बि० कौ० आ०, १५९

१३. जबतक वज्र-हृदय उसकी रक्षा के लिए मौजूद न हो, तबतक आजादी एक अत्यंत दूषित वस्तु की तरह है।

गां० वा०, १८७

१४. स्वतंत्रता इस संसार में सबसे अधिक चंचल और स्वच्छंद स्त्री है। यह दुनिया में सबसे बड़ी मोहिनी है। इसको प्रसन्न करना बड़ा कठिन काम है। यह अपना-मंदिर जेलखानों में, तथा इतनी ऊंचाई पर बनाती है कि जहां जाते-जाते आंखों में अंधेरा छा जाता है।

गां० वा, १९०

१५. धीमी स्वतंत्रता के समान कोई चीज नहीं है। स्वाधीनता जन्म के समान है। जबतक हम पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं हो जाते, हम गुलाम हैं। तमाम जन्म एक क्षण में होता है।

सि० गां० १२९

१६. कोई भी आदमी अपनी दुर्बलताओं के कारण के बिना अपनी स्वतंत्रता नहीं खोता।

सि० गां०, १२२

१७. स्वतंत्रता एक राष्ट्र का दूसरे को उपहार कभी नहीं हो सकता। यह वह बहुमूल्य पदार्थ है, जिसको राष्ट्र के अति उत्तम रक्त से खरीदा जाता है। स्वराज्य तो निरंतर परिश्रम और असीम कष्ट-सहन का फल होगा।

सि० गां० १२१

१८. किसी की मेहरबानी मांगना अपनी आजादी बेचना है।

बा० आ०, १५१

१९. दूसरों को गुलाम बनानेवाला खुद गुलाम बन जाता है।

प्रा० प्र०१, २८०

२०. बाहर की दुनिया कहती है, हमने जो आजादी ली है, मिल गई है, वह शराफत से ली है, शराफत से मिली है। तो शराफत से

उसे हमें रखना भी चाहिए। गुंडेबाजी से नहीं। गुंडेबाजी से हम उसे गंवानेवाले हैं।

प्रा० प्र०२, १७७

२१. आजादी का यह अर्थ हो नहीं सकता कि तूफान करें और अगर उनपर डंडा चलाया जाय तो शिकायत करें।

प्रा० प्र०२, १९९

२२. आजादी के माने यह हैं कि हम बिना किसी दबाव के धर्म का पालन करें। धर्म की आजादी मिली है, अधर्म की नहीं। ईश्वर से कोई प्रार्थना थोड़े करता है कि हमको झूठ बोलने दे। अगर हम ऐसा करते हैं तो हम शैतान की बंदगी करते हैं, उसके पंजे में पड़ते हैं और गुलाम बन जाते हैं।

प्रा० प्र०२, २४४

२३. आजादी मिल जाने के बाद, हम सबको और भी मर्यादा के साथ बरतना चाहिए।

प्रा० प्र०२,२५८

२४. आजादी अनमोल बरकत है !

प्रा० प्र०२, २६२

४—स्वराज्य

१. जैसे हर देश खाने-पीने और सांस लेने के योग्य है, वैसे ही प्रत्येक राष्ट्र अपना प्रबंध आप करने के योग्य है, चाहे प्रबंध कितना ही खराब हो।

सर्वो०, ८८

२. स्वराज्य सरकार एक हास्यास्पद चीज बन जायगी, अगर जीवन की हर छोटी बात के नियमन के लिए लोग उसके मुंह की तरफ देखने लगें।

सर्वो०, ८८

३. स्वराज्य का अहिंसक तरीका नया ही तरीका है।

सर्वो०, १७५

४. केवल परिपक्व विचारों के आदमी ही अपने-आप पर शासन करने

के योग्य होते हैं, न कि तेज स्वभाव वाले

हिं० स्व०, २२

५. स्वराज्य का अर्थ देशवासियों में से अत्यंत दलित लोगों की स्वाधीनता है।

रि० अ०, १३

६. स्वराज्य उसके लिए है, जो समझता है कि किसीका दिलाया हुआ स्वराज्य तो पराजय ही है।

गां० सा०, ५८

७. स्वराज्य मृत्यु के भय के त्याग का नाम है।

सि० गां०, १२८

८. स्वराज्य एक पवित्र शब्द है। वह एक वैदिक शब्द है, जिसका अर्थ आत्म-शासन और आत्म-संयम है।

मे० स० भा०, ७

९. स्वराज्य की रक्षा केवल वहीं हो सकती है, जहां देशवासियों की ज्यादा बड़ी संख्या ऐसे आदमियों की हो, जिनके लिए दूसरी सब चीजों से, अपने निजी लाभ से भी, देश की भलाई का ज्यादा महत्व हो।

मे० स० भा०, ९

१०. स्वराज्य का सच्चा अर्थ यही है कि मानव अपनी शासन-सत्ता के अंतर्गत स्वयं सरलता से जीये और अपने आस-पास के लोगों को जिला सके।

अं० भां०, ३

११. अगर हम विदेशी रीति-रिवाज अपनाते हैं तो स्वदेशी राज की बात करना बेकार है।

प्रा० प्र०१, १९७

१२. स्वराज्य हिंदुस्तान का फेफड़ा है। अगर हमें जिंदा रहना है, तो दूसरे की मदद से वह नहीं चलेगा।

प्रा० प्र०१, १९७

१३. स्वराज्य बुजदिल आदमियों के लिए नहीं होता।

प्रा० प्र०१, १९७

१४. हम दुनिया में किसी को दुश्मन बनाना नहीं चाहते और न हम किसी के दुश्मन बनना चाहते हैं, यह मेरी व्याख्या का स्वराज्य है।

प्रा० प्र०१, ४३८

१५. भगवान के दर्शन तो स्वराज्य में ही हैं।

प्रा० प्र०१, ४३८

५—प्रजा-तंत्र

१. केवल अहिंसा-शास्त्र ही किसी देश को शुद्ध प्रजातंत्र की ओर ले जा सकता है।

फ़ा० पै०, ८

२. मेरी कल्पना का प्रजा-तंत्र वह है, जिसमें अत्यंत दुर्बल लोगों को वही अवसर प्राप्त हों जो कि अत्यंत बलवानों को प्राप्त हैं।

फ़ा० पै०, ८६

३. लोक-तंत्र को बलपूर्ण साधनों के द्वारा विकसित नहीं किया जा सकता। लोकतंत्र की भावना को बाहर से लागू नहीं किया जा सकता; इसे तो भीतर से ही आना पड़ता है।

सि० गां०, ४१

४. जनता का बहुत बड़ा समुदाय जो बात चाहता हो, उसे कर देने के लिए जनता के प्रतिनिधियों को किसी भी तरह से डरने की जरूरत नहीं।

अं० भ्रां०, ३६

५. अनुशासन और विवेकयुक्त जन-तंत्र दुनिया की सबसे सुंदर वस्तु है।

मे० स० भा०, १७

६. लोक-तंत्र और हिंसा का मेल नहीं बैठता।

मे० स० भा०, १८

७. जन्मजात लोकतंत्रवादी जन्म से ही अनुशासन पालनेवाला होता है। लोकतंत्र की भावना कुदरती तौर पर उसीमें विकसित होती है, जो सामान्यतः समस्त मानवीय अथवा ईश्वरीय कानूनों को स्वेच्छा से

पालने का आदी हो जाता है ।

मो० मा० ११७

८. लोकतंत्र की भावना कोई यांत्रिक वस्तु नहीं है, जिसका विकास शासन के बाहरी रूपों का अंत करने से हो जाय । उसके लिए हृदय-परिवर्तन आवश्यक होता है ।

मो० मा०, ११७

९. अनुशासन-बद्ध और जाग्रत लोकतंत्र संसार की सुंदर-से-सुंदर वस्तु है । पूर्वाग्रहों से जकड़ा, अज्ञान में फंसा हुआ तथा अंधविश्वासों का शिकार बना हुआ लोकतंत्र अराजकता और अंधा-धुंधी के दलदल में फंस जायगा और खुद ही अपना नाश कर लेगा ।

मो० मा०, ११८

१०. बाहरी नियंत्रणों के तनाव में लोकतंत्र टूट जायगा । वह केवल विश्वास के बल पर ही टिक सकता है ।

मो० मा०, ११८

११. वही मनुष्य सच्चा लोकतंत्रवादी है, जो शुद्ध अहिंसक साधनों द्वारा अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करता है और इसलिए जो अपने देश की, तथा अंत में सारी मानव-जाति की, स्वतंत्रता की भी अहिंसक साधनों से रक्षा करता है ।

मो० मा०, १२०

१२. लोकतंत्र के सिद्धांतों पर चलनेवाले राज्य में लोग भेड़ों की तरह व्यवहार नहीं करते । लोकतंत्र में व्यक्ति के मत और कार्य की स्वतंत्रता की सावधानी से रक्षा की जाती है । इसलिए मेरी यह मान्यता है कि अल्पमत को बहुमत से भिन्न आचरण करने का पूरा अधिकार है ।

मो० मा०, १२१

१३. जो राष्ट्र अमर्यादित त्याग और बलिदान करने की क्षमता रखता है, वही अमर्यादित ऊंचाई तक उठने की क्षमता रखता है । बलिदान जितना अधिक शुद्ध होगा, प्रगति उतनी ही अधिक तेज होगी ।

मो० मा०, १२१

१४. जनतंत्र वह है, जिसमें रास्ता चलनेवाला भी जो बोले, वह सुना जाय।

प्रा० प्र०१, १८

१५. यह कहावत कि 'यथा राजा तथा प्रजा' उतनी सत्य नहीं है, जितनी यह बात कि 'यथा प्रजा तथा राजा।'

प्रा० प्र०१, १४२

१६. प्रजातंत्रात्मक राज में राजा और मेहतर की कीमत एक-सी रहनेवाली है। मनुष्य के नाते दोनों की कीमत एक ही रहेगी, पर दोनों की बुद्धिमत्ता में भेद हो सकता है।

प्रा० प्र०१, १५७-५८

१७. लोकशाही में हर आदमी को समाज की इच्छा यानी राज की इच्छा के मुताबिक चलना होता है और उसी के मुताबिक अपनी इच्छाओं की हद बांधनी होती है। स्टेट लोकशाही के द्वारा और लोकशाही के लिए राज चलाती है। अगर हर आदमी कानून अपने हाथ में ले ले, तो स्टेट नहीं रह जायगी। यह आजादी को मिटा देने का रास्ता है।

प्रा० प्र०१, ३१८-१९

१८. हमारी हुकूमत आज तो ऐसी ही है कि जिसको हम बना सकते हैं, उसको हम मिटा सकते हैं। इसका नाम डेमोक्रेसी है।

प्रा० प्र०१, ३६१

१९. आजादी का मतलब होना चाहिए लोक-राज। लोक-राज का अर्थ है कि हर शख्स को बुद्धि पाने का मौका मिले। बुद्धि का अर्थ केवल जानकारी से अलग है।

प्रा० प्र०२, ८६

२०. सच्चे प्रजातंत्र में हमारे यहां किसानों का राज्य होना चाहिए।

प्रा० प्र०२, १२४

२१. अगर हम हिंदुस्तान में पंचायत राज्य या लोगों का राज्य चाहते हे, तो सब लोगों को उस काम में मदद देनी है। वह कोई हवा में से तो आता नहीं है और न हिमालय से चलकर आता है। वह तो यहां की जनता के द्वारा ही हो सकता है। जनता एक तरह की नींव है, जिसपर हम

एक बहुत ऊंचा मकान बना सकते हैं।

प्रा० प्र०२, २२८

२२. प्रजा-सत्ता बन गई, इसका मतलब यह नहीं है कि राज दिल्ली से चले। अगर वैसी सत्ता बन जाती है तब तो वह प्रजा के मार्फत ही बनेगी और उसमें देहात के लोग रहेंगे।

प्रा० प्र०२ २७३

२३. तलवार के जरिये पंचायत-राज नहीं हो सकता।

प्रा० प्र०२, २७३

६—लोकमत

१. लोकमत में बड़ी प्रचंड शक्ति है। अभी हमारे यहां इस शब्द का अर्थ पूरे जोर से प्रकट नहीं हुआ है, पर अंगरेजी में उस शब्द का अर्थ जोरदार है। अंगरेजी में इसे 'पब्लिक ओपीनियन' कहते हैं और उसके सामने बादशाह भी कुछ नहीं कर सकता।

प्रा० प्र०१, १४३

२. यदि हमारे लोकमत में सच्ची बहादुरी और सच्चाई नहीं आई, तो उससे कुछ बननेवाला नहीं है।

प्रा० प्र०१, १४३

३. अगर लोकमत जाग्रत रहता है तो सबका अच्छा ही होने वाला है।

प्रा० प्र०१, १४४

४. जो जगत है, वह पंच के समान है। इसलिए जो जगत कहता है, वही सही तरीके से ईश्वर का न्याय है।

प्रा० प्र०२, ७६

५. प्रजातंत्र या लोकशाही में एकमात्र ताकत लोकमत की होती है।

मे० स० भा०, २८६

६. लोकमत ही एक ऐसी शक्ति है, जो समाज को शुद्ध और स्वस्थ रख सकती है।

मे० स० भा०, ३२७

७. लोकमत से आगे बढ़कर कानून बनाना प्रायः निरर्थक ही नहीं, उससे भी ज्यादा बुरा सिद्ध होता है।

मे० स० भा०, ३२७

७—समालोचना

१. अगर हम खुद को अपने शत्रु की स्थिति में रखकर उसके दृष्टि-कोण को समझें तो संसार के तीन-चौथाई दुख-दर्द और गलतफहमियां मिट जायं। तब या तो हम अपने शत्रु के साथ जल्दी सहमत हो जायंगे या उसके बारे में उदारतापूर्वक विचार करेंगे।

सर्वो० ११

२. विरोधियों के प्रति शिष्टता और उनका दृष्टिकोण समझने की उत्सुकता अहिंसा का क-ख-ग है।

ऐ० बा०, १३६

३. एक-दूसरे के दोष देखने में किसी का लाभ नहीं है।

श्रं० भां०, ६

४. हमें पहले अपना हृदय टटोलना चाहिए। बाद में दूसरे की आलोचना करनी चाहिए। शायद ही कोई सर्वांगपूर्ण होने का दावा कर सके।

श्रं० भां०, १४

५. कभी-कभी हम अपने विरोधी के द्वारा ही ऊपर चढ़ते हैं।

बि० कौ० आ०, ३५

६. आलोचना करने के अधिकार के लिए हममें स्पष्ट समझ और सहिष्णुता की शक्ति होनी चाहिए।

बा० प० मी०, ५९

७. पवित्रता दूसरों के आक्षेपों से लज्जित नहीं होती, बल्कि विशेष बल प्राप्त करती है।

गां० सा०, १२४

८. जगत की सारी आलोचना को सोने के कांटे से न तौलकर लोहे

या पत्थर तौलने के कांटे का उपयोग करना चाहिए। उसमें मन-आधे-मन का तो हिसाब तक नहीं होता।

बा० प० प्रे०, १८५

९. प्रकृति ने हमें ऐसा बनाया है कि हम अपनी पीठ नहीं देख पाते, दूसरे लोग ही हमारी पीठ को देख सकते हैं। इसलिए वे जो कुछ देखते हैं, उससे लाभ उठाना हमारे लिए बुद्धिमानी की बात होगी।

मो० मा०, ३१

१०. अपनी अल्पता का दर्शन महान बनने का आरंभ है। अलग पड़ा हुआ समुद्र-बिंदु अपने को समुद्र कहकर सूख जायगा। परंतु अपनी बिंदुता को स्वीकार करे, तो वह समुद्र की ओर प्रयाण करेगा और उसमें लीन होकर समुद्र बन जायगा।

बा० प० प्रे०, ४१

११. निंदा करना तो गिरे हुए को लात मारने के बराबर है।

म० डा०१न०, ३१२

१२. अगर किसी ने गंदा काम नहीं किया और दूसरा कोई लांछन लगाता है, तो जी क्यों दुखाया जाय।

प्रा० प्रा०१, १४४

१३. हमें किसीकी बुराई नहीं करनी चाहिए, भला ही देखना चाहिए।

प्रा० प्र०१, १४४

१४. गालियां देना या स्तुति करना तो दुनिया का एक खेल है।

प्रा० प्र०१, १६६

१५. कड़वी-से-कड़वी टीका करनेवाले के पास हमारे विरुद्ध कोई-न-कोई सच्ची काल्पनिक शिकायत रहती है। अगर हम उसके साथ धीरज रखें, जब कभी मौका आवे उसकी भूल उसे बतावें, हमारी गलती हो तो उसे सुधारें, तो हम टीका करनेवाले को भी सुधार सकते हैं। ऐसा करने से हम कभी रास्ता नहीं भूलेंगे।

प्रा० प्र०१, १५२

८—समाजवाद

१. हमारे समाजवाद और साम्यवाद का आधार अहिंसा पर तथा मजदूर और पूंजीपति, जमींदार और किसान सबके प्रेम-पूर्ण सहयोग पर होना चाहिए।

सर्वो०, ११२

२. जैसे व्यक्ति के शरीर के सब अंग बराबर होते हैं वैसे ही समाज-रूपी शरीर के सारे अंग भी बराबर होते हैं। यह समाजवाद है।

मे० स०, ६

३. समाजवाद की जड़ में आर्थिक समानता है। थोड़े लोगों को करोड़ और बाकी सब लोगों को सूखी रोटी भी नहीं, ऐसी भयानक असमानता में राम-राज्य का दर्शन करने की आशा कभी नहीं रखी जा सकती।

मे० स० ३३

४. समाजवाद का अर्थ है सर्वोदय।

मे० स० ५६

९—धर्म-निरपेक्ष राज्य

१. हुकूमत का फर्ज है कि अपने यहां के सब लोगों की, चाहे वे विधर्मी ही हों, रक्षा करें।

प्रा० प्र०१, १८०

२. हिंदुस्तान में एक ही प्रजा रहेगी और वह हिंदुस्तानी प्रजा होगी।

प्रा० प्र०१, १६२

३. कोई किसी धर्म का हो, लेकिन हिंदुस्तान का वफादार है, तो वह हिंदुस्तानी है। उसको यहां रहने का उतना ही हक है, जितना मुझ को है, भले ही उसके जातिवालों की तादाद बहुत छोटी हो। धर्म मुझको यही सिखाता है।

प्रा० प्र०१, २६०

४. हुकूमत तो सब की है—हिंदू, मुसलमान, पारसी सब की।

प्रा० प्र०२, १३३

५. हुकूमत तो सब लोगों के लिए बनाई गई है। अंगरेजी शब्द तो उसके लिए 'सेक्युलर' है, अर्थात वह कोई धार्मिक सरकार नहीं है, या ऐसा कहो कि वह किसी एक धर्म की नहीं है।

प्रा० प्र०२, १३५

६. बेशक राज्य धर्म-निरपेक्ष होना चाहिये। उसमें रहनेवाले हर नागरिक को बिना किसी रुकावट के अपना धर्म मानने का हक होना चाहिए, जबतक वह देश के कानून को मानता हो।

सर्वो०, ६२

१०—शासन और शासक

१. महलों में रहनेवाला आदमी राज्य नहीं चला सकता।

प्रा० प्र०१, ११६

२. हम लोग ऐसे बने हैं कि जो अपने काम की डुग्गी पिटवाता फिरता है और राज्य-कारण में उछालें भरता है, उसको तो हम आसमान पर चढ़ा देते हैं; लेकिन मूक काम करनेवालों को नहीं पूछते।

प्रा० प्र०१, १२४-२५

३. प्रेसीडेंट बहुत पढ़ा-लिखा ही हो और उसे कई भाषाओं का ज्ञान हो, यह कोई ज़रूरी नहीं है।

प्रा० प्र०१, २०१

४. हकीकत में राजा प्रजा का सबसे आला दर्जे का सेवक होता है। सेवक का धर्म है सबकुछ स्वामी को भेंट कर देना और फिर जो कुछ बच जाय, उसे खाकर निर्वाह कर लेना।

प्रा० प्र०१, २०४

५. जो हुकूमत अपना गान करती है, वह चल नहीं सकती।

प्रा० प्र०२, १२३

६. सत्ता सच्ची सेवा में से ही मिलती है। सत्ता पाकर बहुत बार इंसान गिर जाता है। सत्ता पाने के लिए झगड़ा शोभा नहीं देता।

प्रा० प्र०२, २५३

७. हुकूमत तो हम हैं।

प्रा० प्र०२, ३०३

११—अपराध और अपराधी

१. अपराध को सोने की तराजू में नहीं तौला जा सकता।

प्रा० प्र०१, ३१६

२. किसी ने अगर खून किया है, चोरी की है या डाकू बना है या कानून की पुस्तक में जितने गुनाह लिखे हैं, उनमें से कोई एक किया है, तो मैं तो इन सबको एक किस्म की व्याधि मानता हूं। वह एक मर्ज़ है। कोई गुनाह करने की खातिर गुनाह थोड़े ही करता है।

प्रा० प्र०१, ४६१

३. अपराध में दीनता होती है।

आ० क०, १४२

४. मनुष्य और उसका काम, ये दो भिन्न वस्तुएं हैं। अच्छे काम के प्रति आदर और बुरे काम के प्रति तिरस्कार होना ही चाहिए। भले-बुरे काम करनेवालों के प्रति सदा आदर अथवा दया रहनी चाहिए।

आ० क०, २३७

५. कोई मनुष्य इतना बुरा नहीं होता कि कभी सुधर ही न सके।

सर्वो०, १०८

६. गुंडे आकाश से नहीं टपक पड़ते और न वे भूतों की तरह जमीन से निकल आते हैं। वे समाज की कुव्यवस्था की ही उपज हैं और इसलिए उनके अस्तित्व के लिए समाज जिम्मेदार है।

सर्वो०, १२२

७. चोर या अपराधी के प्रति दुर्भाव रखने या उसे सजा दिलवाने की कोशिश करने के बजाय हमें उसके हृदय के भीतर प्रवेश करने का प्रयत्न करना चाहिए। जिस कारण से वह अपराध करने लगा हो, उसे समझना चाहिए और उसका इलाज करने का प्रयत्न करना चाहिए।

सर्वो०, १३१

८. अपराधी को दी जानेवाली सजा के पीछे आखिर तो उसे सुधारने का ही हेतु होता है ।

य० अ०, १३

९. मनुष्य अपराधी ठहरा कि फिर समाज ने तो उसे खो ही दिया समझिये ।

य० अ०, १८

१०. अपराध दूसरे रोगों के समान एक रोग है और वह प्रचलित सामाजिक व्यवस्था की उपज है । इसलिए वध-समेत समस्त अपराधों का एक रोग के समान इलाज होगा ।

फ़ा० पै०, २७

११. चोर या अपराधी तुम्हारे से भिन्न प्राणी नहीं है । निस्संदेह यदि तुम अपने भीतर खोज-प्रकाश डालो और अपनी आत्माओं को सूक्ष्म रूप से देखो तो तुम पाओगे कि तुम्हारे में केवल अंशों का अंतर है ।

फ़ा० पै०, २८

१२. कोई आदमी अपराध इसलिए नहीं करता कि ऐसा करने में उसे मजा आता है । अपराध उसके रोगी दिमाग की निशानी है ।

दि० डा०, ११७

१३. साधारण अपराधी राज्य के कानूनों का, वे अच्छे हों या बुरे, भंग ही नहीं करता, बल्कि उस भंग के परिणामों से बचना भी चाहता है ।

म० डा०१, ३६१

१४. 'अपराध' शब्द को ही हमें अपने शब्द-कोष से निकाल देना चाहिए, वरना हम सभी अपराधी हैं ।

म० डा०२, २३५

१५. जो सरकार अपराध और सजा में विश्वास करते हुए भी अपराधी को सजा नहीं देती, वह सरकार हुकूमत कहलाने लायक ही नहीं रहती ।

बि० कौ० आ०, ५१

१२—न्याय

१. श्रेष्ठ न्याय तो यह है कि विपक्ष ने हमारी बात का जो अर्थ माना, वही सच माना जाय। हमारे मन में जो है, वह खोटा अथवा अधूरा है। ऐसा ही दूसरा उत्तम न्याय यह है कि जहां दो अर्थ हो सकते हों, वहां दुर्बल पक्ष जो अर्थ करे, वही सच माना जाना चाहिए।

आ० क०, ५०

२. वकील का कर्तव्य दोनों पक्षों के बीच की खाई को पाटना है।

आ० क०, ११६

३. प्रतिपक्षी को न्याय देकर हम जल्दी न्याय पा जाते हैं।

आ० क०, १५८

४. सच्चा अर्थ-शास्त्र न्याय का अर्थशास्त्र है। लोग जितना न्याय करना और सदाचारी बनना सीखेंगे, उतने ही सुखी होंगे।

सर्वो०, ३८

५. कानूनी सिद्धांत असल में नैतिक सिद्धांत ही हैं।

मे० स० भा०, ११

६. कानून से किसी मनुष्य को बदला नहीं जा सकता, समझाने से ही बदला जा सकता है।

बि० कौ० आ०, १७५

७. नियम की आत्मा की रक्षा के लिए नियम के देह का, वाह्य स्वरूप का, त्याग करना पड़ता है।

बा० प० प्रे०, १६५

८. इंसाफ से बाहर कुछ नहीं होना चाहिए।

प्रा० प्र०१, १४६

९. युग-युग में नीति बदलती रहती है। जिसमें फर्क नहीं हो सकते, ऐसे कानून बहुत कम होते हैं।

प्रा० प्र०१, २६८

१०. जो आदमी कानून को अपने हाथों में लेता है, वह गुनहगार

बनता है ।

प्रा० प्र०१, २६८

११. जो न्याय चाहते हैं, उन्हें न्याय करना भी होगा। उन्हें बेगुनाह और सच्चा होना चाहिए।

प्रा० प्र०१, ३१७

१२. सच्चा तरीका दोस्ती का तो यह है कि हम हमेशा इंसाफ पर रहें और शरीफ बने रहें । इस तरह करने से जंगली और दीवाना भी आखिर में सुधर जाता है ।

प्रा० प्र०१, ३६४

१३. न्याय हुकूमत के हाथों में रहने दें, अपने हाथ में न ले लें। वह वहशियाना काम होगा ।

प्रा० प्र०२, ३३४

१३—जेल

१. लज्जा जेल जाने में नहीं, वल्कि चोरी करने में है।

आ० क०, ३२२

२. जेल जाना पड़े तो उसे प्रायश्चित समझिए ।

आ० क०, ३२२

३. जहां लोग जेल इत्यादि के विषय में निर्भय बन जाते हैं, वहाँ राजदंड लोगों को दबाने के बदले उनमें शूरवीरता उत्पन्न करता है।

आ० क०, ३८०

४. यदि मैं यह कहूं कि जेलें अच्छी या बुरी व्यवस्थावाली पशुशालाएं हैं, तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं है ।

य० अ०, ११

५. सारी दुनिया में जेल ही एक ऐसी सार्वजनिक संस्था है, जिसकी तरफ लोग सबसे अधिक लापरवाही दिखाते हैं ।

य० अ०, ११

६. मेरी निश्चित राय है कि जेलों के प्रबंध में यदि मनुष्यत्व का तत्व दाखिल किया जाय और जेलों के प्रबंध के साथ जनता का संबंध

कायम किया जाय तो ऐसे अपराध जरूर रोके जा सकते हैं।

श्र० श्र०, १३

७. सजाएं भुगतकर कैदियों की पशुता उल्टी बढ़ती है।

य० श्र०, १३

८. सहानुभूति और समभाव से इलाज किया जाय तो जेल और अस्पताल दोनों कम हो जायं।

य० श्र०, ३७

९. प्रत्येक बीमार और प्रत्येक क़ैदी अस्पताल और जेलों से निकले, तब मानसिक और शारीरिक आरोग्य के नियमों का प्रचारक बनकर ही निकलना चाहिए।

य० श्र०, ३७

१०. अभी तो कैदखाने लफंगों के लिए आरामघर और मामूली सीधे कैदियों के लिए जुल्मखाने हैं।

य० श्र०, ३६

११. हमारी जेलों में ऐसे अनेक मनुष्य हैं जो बाहर रहनेवालों से बढ़कर हैं।

य० श्र०, ५१

१२. जेल के प्रबंध में मनुष्यता का बिल्कुल नहीं तो बहुत-कुछ अभाव है।

य० श्र०, ७४

१३. कुशलता से चलाई हुई पद्धति पर अमल करने से जेल का प्रबंध अवश्य स्वावलंबी हो सकता है।

य० श्र०, १५

१४. एक कैदी है तो उसने खसूसन गुनाह किया है, और जो बाहर सफ़ेद कपड़े पहनकर बैठे हैं, वे गुनहगार नहीं हैं, ऐसा मैं नहीं मानता।

प्रा० प्र०१, ४६१

१५. अब चूंकि हुकूमत की बागडोर हमारे हाथ में आगई है तो हमारी जेल एक जेल न रहकर, अस्पताल बननी चाहिए।

प्रा० प्र०१, ४६१

१४—बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक

१. जहां पर अल्पमत-वाले थोड़े-से आदमियों का रक्षण सरकार नहीं कर सकती, वहां पर उस सरकार को बने रहने का कोई हक नहीं रहता।

प्रा० प्र०१, १४७

२. जहां पर बहुमतवाले अल्पमतवालों को मार डालें, वह तो ज़ालिम हुकूमत कहलायगी; उसे स्वराज्य नहीं कहा जा सकता।

प्रा० प्र०१, १४७

३. संख्या-बल से मगरूरी आती है और मगरूरी से हमारा नाश हो जाता है।

प्रा० प्र०१, २१२

४. कोई अपने को अल्प-संख्यक न माने। सब एक हैं।

प्रा० प्र०१, २१७

५. अकलियत (अल्पसंख्यक) के लिए सम्मान रखना अक्सरियत (बहुसंख्यक) का भूषण है। उसका तिरस्कार करने से अक्सरियत पर दुनिया हंसेगी।

प्रा० प्र०१, ३३६

६. बहुमत के लिए अल्पमत से डरना, चाहे वह कितना ही ताकतवर क्यों न हो, बुजदिली की पक्की निशानी है।

प्रा० प्र०१, ४४२

७. अगर हम अपने पड़ोसियों का स्व-मान नहीं रखते, चाहे वे गिनती में कितने ही थोड़े हों, तो हम खुद स्व-मान रखने का दावा नहीं कर सकते।

प्रा० प्र०१, ४४३

८. अकलियत को, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, अपनी इज्जत और इंसान को जो भी प्रिय और निकट लगता है, वह सब-कुछ बचाने के लिए डर रखने का कभी कारण नहीं रहा।

प्रा० प्र०२, २३०

१०. अल्प-संख्यकों का विलाप एक झूठा अभियोग है ।

ड्रि० इ०, ५८

११. अन्तःकरण के मामलों में बहुसंख्या के नियम को कोई स्थान नहीं है ।

सि० गां०, ११६

१२. अत्यंत श्रेष्ठ और अत्यंत ठोस काम अल्पसंख्यकता के जंगल में किया गया था ।

सि० गां०, २४५

१३. हमें अल्पसंख्यकों को अपने पक्ष में धीरज के साथ, समझा-बुझाकर और दलील करके ही लाने की कोशिश करनी चाहिए ।

मे० स० भा०, २३

१४. मेल और समझौता तो तभी हो सकता है जब कि ज्यादा बलवान पक्ष दूसरे पक्ष के जवाब की राह देखे बिना सही दिशा में बढ़ना शुरू कर दे ।

मे० स० भा०, २६२

१५. अगर अल्पमत के अधिकारों का आदर करना हो तो बहुमत को अल्पमत वालों की राय का और कार्य का आदर करना चाहिए ।

मो० मा०, १२०

१६. जिन बातों का संबंध अंतरात्मा के साथ होता है, उनमें बहुमत के कानून के लिए कोई स्थान नहीं होता ।

मो० मा०, १२०

१७. बहुमत के शासन का उपयोग संकुचित है, अर्थात मनुष्य को तफसील की बातों में बहुमत के सामने झुकना चाहिए । लेकिन बहुमत के चाहे-जैसे निर्णयों के अनुकूल बनने का अर्थ गुलामी होगा ।

मो० मा०, १२०

१५—भारत

१. भारत का भविष्य पश्चिम के अहिंसक मार्ग पर निर्भर नहीं करता, जिसपर चलकर पश्चिम स्वयं थका हुआ दिखाई देता है । भारत का भविष्य ऐसे शांति के मार्ग पर निर्भर करता है जो सादे और पवित्र

ईश्वर-परायण जीवन का परिणाम है ।

मो० मा०, ६०

२. भारत का मिशन—जीवन-कार्य—दूसरे देशों से भिन्न है। भारत में दुनिया से धार्मिक प्रतिष्ठा मांगने की क्षमता है। इस देश ने स्वेच्छा से आत्मशुद्धि के लिए जो प्रयत्न किया है, उसकी मिसाल संसार में कहीं नहीं मिलेगी ।

मो० मा०, ६०

३. भारत भोग-भूमि नहीं है, वह मूलतः कर्मभूमि है ।

मो० मा०, ६१

४. मैं चाहता हूं कि भारत इस बात को समझ ले कि उसके पास एक ऐसी आत्मा है, जिसका नाश नहीं हो सकता; जो हर प्रकार की शारीरिक कमज़ोरी पर विजय प्राप्त कर सकती है तथा जो सारे संसार के भौतिक संगठन का विरोध कर सकती है ।

मो० मा०, ६१

५. अगर भारत सत्य और अहिंसा के ज़रिये लक्ष्य सिद्ध कर ले, तो वह विश्व-शांति की स्थापना में बहुत बड़ी सहायता करेगा, जिसके लिए आज दुनिया के सारे राष्ट्र तरस रहे हैं। उस स्थिति में भारत उस सहायता का थोड़ा बदला भी चुका सकेगा, जो दुनिया के राष्ट्र स्वेच्छा से उसे देते रहे हैं ।

मो० मा०, ६१

६. भारत की स्वतंत्रता संसार के शांति और युद्ध से संबंधित दृष्टिकोण में जड़मूल से परिवर्तन करेगी।

मो० मा०, १८

७. भारत के स्वतंत्र होने पर भी सेना की जरूरत तो रहेगी ही। मेरी अहिंसा में मैं इतनी शक्ति नहीं पाता, जिसमें लोग सेना की अनावश्यकता की बात मान लें; और सेना होगी तो सैनिक शिक्षण भी होगा ही।

बा० प० प्रे०, २३६

८. आज़ाद हिंदुस्तान दुनिया को हिंसा का एक नया पाठ नहीं

पढ़ायगा। वह पहले ही बुरी तरह बेज़ार है।

प्रा० प्र०१, ८६

९. अगर आज़ाद हिंदुस्तान में सभी अपने धर्म का पालन करें, तो सारा हिंदुस्तान खुश हो सकता है।

प्रा० प्र०१, ११६

१०. हम तो हिंदुस्तान को समुंदर ही रखें, जिसमें सारी गंदगी बह जाय।

प्रा० प्र०१, ३२१

११. जो हिंदुस्तान बिना तलवार उठाये आजाद हुआ, उसमें इतनी ताकत होनी चाहिए कि बिना तलवार के वह उसे कायम भी रख सके।

प्रा० प्र० २, १६८

१२. हिंदुस्तान का फौजीकरण होगा तो वह बरबाद होगा और दुनिया भी बरबाद होगी।

प्रा० प्र०२, १६८

खंड ७ : अर्थशास्त्र

१—अर्थशास्त्र

१. जो अर्थशास्त्र धन की पूजा करना सिखाता है, और कमजोरों को हानि पहुंचाकर सबलों को दौलत जमा करने देता है, वह झूठा है और भयानक अर्थशास्त्र है। वह मृत्यु का दूत है। इसके विपरीत सच्चा अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय की हिमायत करता है।

सर्वो०, ३९

२. जो अर्थशास्त्र किसी व्यक्ति अथवा राष्ट्र के नैतिक कल्याण को हानि पहुंचाता है, वह अनैतिक है और इसलिए पापपूर्ण है।

मो० मा०, ७३

३. जो अर्थशास्त्र नैतिकता की और मानव-भावनाओं की उपेक्षा करता है, वह मोम के उन पुतलों की तरह है, जो जीवित-जैसे दिखाई देने पर भी जीवन-धारी मानवों की तरह प्राणवान नहीं होते।

मो० मा०, ७३

४. अर्थशास्त्र के क्षेत्र में अहिंसा के कानून को ले जाने का अर्थ है उस क्षेत्र में नैतिक मूल्यों को दाखिल करना। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का नियमन करने में इन भौतिक मूल्यों का ध्यान रखना जरूरी है।

मो० मा०, ७३

५. सच्चा अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय की हिमायत करता है। वह समान भाव से सबकी भलाई का, जिनमें कमजोर भी शामिल हैं, प्रयत्न करता है, और सभ्य तथा सुंदर जीवन के लिए अनिवार्य है।

मे० स०, ३८

६. देश की आर्थिक स्थिति और शिक्षा—दोनों विभाग सगे भाई

जैसे ही हैं। एक प्रश्न हल करेंगे, तो दूसरा अपने-आप हल हो जायगा।

ग्रं० भा०, ३३

२—आर्थिक समानता

१. आर्थिक समानता का सच्चा अर्थ है जगत के सब मनुष्यों के पास एक-सी संपत्ति का होना, यानी सब के पास इतनी संपत्ति होना, जिससे वे अपनी कुदरती आवश्यकताएं पूरी कर सकें।

सर्वो०, ३९

२. मैं अहिंसा के द्वारा, घृणा के विरुद्ध प्रेम की शक्ति का उपयोग करके लोगों को अपने विचार का बनाकर आर्थिक समता संपादन करूंगा।

सर्वो०, १८२

३. आर्थिक समानता अहिंसक आजादी की मास्टर-चाबी है।

रच० का०, २०

४. आर्थिक समानता के लिए काम करने का अर्थ पूंजी और श्रम के बीच अनादि संघर्ष को समाप्त करना है।

रच० का०, २०

५. अहिंसक शासन-प्रणाली तबतक असंभव बात है, जबतक कि धनवानों और करोड़ों निर्धनों के बीच चौड़ी खाई दृढ़ है।

रच० का०, २१

६. एक बैरिस्टर को जितना पैसा मिलता है, उतना ही एक भंगी को मिलना चाहिए।

प्रा० प्र० १, २८३

३—गांव और किसान

१. यदि मांग हो तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी अत्यंत अधिक मांगों की पूर्ति गांवों से हो सकती है।

रच० का०, १५

२. बुद्धि तथा श्रम के विच्छेद का फल गांव की अपराध-पूर्ण उपेक्षा है।

रच० का०, १५

३. किसान या काश्तकार का स्थान पहला है, चाहे वह भूमिहीन मजदूर हो, चाहे मेहनत-मजदूरी करनेवाला भूस्वामी। खेती किसान पर ही निर्भर है, इसलिए न्याय की दृष्टि से जमीन का मालिक वही है, या होना चाहिए, न कि गैरहाजिर जमींदार।

सर्वो०, १४७

४. स्वराज्य एक शक्तिशाली भवन है। अस्सी करोड़ हाथों को इसे बनाने के लिए काम करना है। किसान इनमें सबसे बड़ा भाग है।

रच० का०, २२

५. किसानों को सत्तात्मक राजनीति के लिए काम में नहीं लाना चाहिए।

रच० का०, २२

६. जो दो मुट्ठी खाता है, उसे चार मुट्ठी पैदा करना चाहिए।

सर्वो०, १५०

७. सारासार का विचार करने पर इतना तो पता चलता है कि किसानों पर सारी दुनिया का आधार है।

गां० सा०, ५६

८. किसान समझें कि अनाज बोना है, तो अपने ही पेट के लिए नहीं, सब लोगों के लिए।

प्रा० प्र०२, १७४

४—गो-पालन

१. गो-रक्षा मेरे लिए मनुष्य-जाति के विकास में एक सबसे अद्भुत चमत्कारपूर्ण घटना है। यह मानव को अपनी स्वाभाविक मर्यादा से बाहर ले जाती है।

सर्वो०, ७६

२. गाय को ही देवता क्यों माना गया, यह मेरे लिए स्पष्ट है। भारत में गाय मनुष्य का उत्तम साथी है। वह कामधेनु है। वह न केवल दूध देती है, बल्कि खेती भी उसीके कारण संभव है। गाय मूर्तिमंत करुणामयी कविता है। इस नम्र और निरीह पशु की आंखों से करुणा टपकती है। भारत के करोड़ों लोगों की वह माता है। गो-रक्षा का अर्थ

है भगवान की समस्त मूक सृष्टि की रक्षा । प्राचीन ऋषियों ने, भले वे कोई भी हों, गाय से इसका प्रारंभ किया । निम्न श्रेणी के प्राणियों की पुकार और भी प्रबल है क्योंकि वे मूक हैं ।

सर्वो०, ७१

३. जो हिंदू गाय की रक्षा करता है, उसे हरएक पशु की रक्षा करनी चाहिए । परंतु सब बातों का विचार करते हुए हम सिर्फ इसलिए उसकी गो-रक्षा में दोष न निकालें कि वह दूसरे जानवरों को नहीं बचा पाता ।

सर्वो०, ७७

४. आजकल तो गो-सेवा करने से ही मनुष्य के सिवा दूसरे सब प्राणियों की सेवा हो जाती है ।

स० ई०, ७३

५. रुपया देकर गाय को छुड़वाने में उसकी रक्षा नहीं है, वह कसाई को धोखा सिखाने का रास्ता है ।

गां० सा०, ५८

६. हिंदुस्तान के पशु-धन को संभालने व बढ़ाने का काम और गाय और उसकी संतान के साथ उचित बर्ताव करने का काम सियासी आजादी लेने के काम से कहीं ज्यादा कठिन है ।

प्रा० प्र०२, १००

७. गो-सेवा के बारे में अपने दिल की बात कहूं, तो आप रोने लग जायंगे, और मैं रोने लग जाऊं—इतना दर्द मेरे दिल में भरा हुआ है ।

गां० वा०, २६८

५—श्रम

१. मनुष्य-मात्र के लिए शारीरिक श्रम अनिवार्य है ।

य० मं०, ७७

२. रोटी के लिए प्रत्येक मनुष्य को मजदूरी करनी चाहिए । शरीर से मेहनत करनी चाहिए । यह ईश्वरीय नियम है ।

य० मं०, ७८

३. जो मजदूरी नहीं करता, उसे खाने का भी क्या अधिकार है ?

य० मं०, ७९

४. जिसे अहिंसा का पालन करना है, सत्य की आराधना करनी है, ब्रह्मचर्य को स्वाभाविक बनाना है, उसके लिए तो श्रम रामबाण का काम देता है ।

य० मं०, ८२

५. जिनके हृदय में ईश्वर हर समय बसा हुआ है, उनके लिए श्रम ही प्रार्थना है । उनका जीवन सतत पूजा या प्रार्थना ही है ।

स० ई०, ४७

६. केवल मानसिक अर्थात बौद्धिक श्रम आत्मा के लिए है और वह खुद ही अपना पुरस्कार है । उसका मुआवजा कभी नहीं मांगना चाहिए । आदर्श राज्य में डाक्टर, वकील आदि अपने लिए काम न करके केवल समाज के लिए करेंगे ।

स० ई०, १२५

७. काम पर जितना जोर दिया जाय, उतना हमेशा अच्छा है ।

स० ई०, १२६

८. क्षण-भर के विचार से प्रकट हो जायगा कि श्रमिक के पास वह पूंजी है, जो पूंजीपति के पास कभी नहीं हो सकती ।

सर्वो०, ५४

९. अगर पूंजी ताकत है तो श्रम भी ताकत है । दोनों ही ताकतों का विनाश या रचना के लिए उपयोग किया जा सकता है । दोनों एक-दूसरे पर निर्भर हैं ।

सर्वो०, ५५

१०. वास्तव में श्रमिक जो पैदा करता है, उसका वही मालिक है । अगर मेहनत या श्रम करनेवाले बुद्धिपूर्वक एक हो जायं, तो उनकी ताकत का कोई मुकाबला नहीं कर सकता ।

सर्वो०, १११

११. श्रम पूंजी से कहीं श्रेष्ठ है । मैं श्रम और पूंजी का विवाह करा देना चाहता । वे दोनों मिलकर आश्चर्यजनक काम कर

सकते हैं ।

सर्वो० ११४

१२. पूजी को मजदूरी का सेवक होना चाहिए, न कि स्वामी। मजदूरों को अपने कर्तव्य का भान कराना चाहिए, क्योंकि उनका पालन करने से अपने-आप अधिकार मिल जाते हैं ।

सर्वो०, १४८

१३. मैं इससे अच्छी ईश्वर-पूजा की कल्पना नहीं कर सकता कि उसके नाम पर गरीबों के लिए मैं भी उसी तरह श्रम करूं जैसे वे करते हैं ।

सर्वो०, १६२

१४. जी-तोड़ काम करना ही आलस्य से दूर रहना है ।

य० अ०, ६

१५. मशीन आधुनिक सभ्यता का मुख्य प्रतीक है । यह एक बड़े पाप का प्रतिनिधित्व करती है ।

हिं० स्व०, ९४

१६. श्रम ही धन है ।

खा०, ६

१७. सारी बुराई का कारण, उसकी जड़, बेकारी है ।

खा०, ३२

१८. ईश्वर ने मनुष्य को पसीने की कमाई खाने के लिए बनाया है ।

खा०, ३२

१९. एक संस्कार-युक्त मानव-परिवार में श्रम का अद्वितीय स्थान है ।

फ़ा० पै०, १०५

२०. शरीर-श्रम करके श्रमजीवी बनना धार्मिक और नैतिक जीवन का मुख्य साधन है ।

गां० सा०, ८१

२१. काम सब कठिनाइयों को हल कर देता

गां० सा०, ३९

२२. जिन हाथों में घट्ठे न पड़े हों, जिनमें कभी छाले ही न पड़े हों, वे हाथ किस काम के !

बा० प० प्रे०, २३७

२३. प्रफुल्ल-चित्त से किया हुआ काम बढ़ता है और फलदायी सिद्ध होता है ।

बा० प० प्रे०, ८७

२४. जो आदमी सब लोगों के सामान्य कल्याण के लिए परिश्रम करता है, वह जरूर समाज की ही सेवा करता है और उसकी आवश्यकताएं पूरी होनी ही चाहिए ।

मे० स० भा०, ६३

२५. शरीर-श्रम के नियम का स्वेच्छा पूर्वक पालन करने से संतोष और स्वास्थ्य मिलता है ।

मे० स० भा०, ६४

२६. भगवान के नाम पर किया गया और उसे समर्पित किया गया कोई भी काम छोटा नहीं है ।

मे० स० भा०, ६७

२७. जो आदमी अपनी जीविका ईमानदारी से कमाना चाहता है, वह किसी भी श्रम को छोटा, यानी अपनी प्रतिष्ठा को घटानेवाला, नहीं मानेगा । महत्त्व की बात यह है कि भगवान ने हमें जो हाथ-पांव दिये हैं हम उनका उपयोग करने के लिए तैयार रहें ।

मे० स० भा०, १६३

२८. जो कुछ करें, सुव्यवस्थित करें या न करें । इसका प्रत्यक्ष दर्शन नित्य होता है ।

बा० आ०, २४७

२९. भगवान ने मृत्यु को बनाया है, इसलिए प्रत्येक मनुष्य का यह धर्म है कि वह काम किये बिना खाना न खाय ।

ध० च०, १२७

३०. प्रत्येक सच्चा कार्य मनुष्य को अमर बनाता है । मनुष्य के मर जाने के बाद उसका काम रुक जाता है, यह कहना गलत है ।

ध० च०, १३२

३१. जो लोग अपने उद्धार के लिए स्वयं सचाई से मेहनत करते हैं, उन्हें ईश्वर अवश्य सहायता देता है ।

ए० च०, १७३

३२. अगर दुखी लोग अपना दुख मिटाना चाहते हैं, दुख से सुख निकालना चाहते हैं , तो उन्हें काम करना ही चाहिए । दुखी को यह हक नहीं कि वह काम न करे और मौज करे ।

श्रं० भ्हां०, १२५

३३. पोषण के लिए जितना चाहिए उससे ज्यादा जो खाता है, वह चोरी करता है, क्योंकि इंसान गुजारे के लायक श्रम भी मुश्किल से ही करता है ।

स० ई०, ५०

३४. इंसान को गुजारे से अधिक लेने का हक नहीं है । और जो मेहनत करते हैं, उन सबको उतना ही लेने का अधिकार है, जितने से शरीर कायम रहे ।

स० ई०, ५०

३५. विचार पूर्वक किया हुआ श्रम उच्च-से-उच्च प्रकार की समाज-सेवा है ।

शा० श्र०, २९

३६. अगर हरएक आदमी अपने पसीने की कमाई पर रहे, तो यह दुनिया स्वर्ग बन जाय ।

शा० श्र०, ३०

३७. बूते से बाहर मेहनत नहीं करनी चाहिए ।

बा० प० म०, ५९

६—मजदूर

१. जिस क्षण मजदूर अपना गौरव पहचान लेंगे, उसी क्षण पैसे को अपना उचित स्थान मिल जायगा, अर्थात वह मजदूरों के लिए धरोहर बन जायगा, क्योंकि श्रम पैसे से बड़ा है ।

सर्वो०, ११४

२. मजदूरों को राजनीतिज्ञों के हाथों में राजनैतिक शतरंज का मुहरा नहीं बनना चाहिए। उन्हें केवल अपने ही बल के आधार पर उस शतरंज पर अपना प्रभुत्व कायम करना चाहिए।

सर्वो०, ११५

३. अगर हमें करोड़ों श्रमिकों के प्रति न्याय करना है, तो हमें उनका हक देना ही चाहिए।

खा०, १४७

४. किसी को अपने पूरे समय के काम का पूरा वेतन मिल जाता है तो उसे उसी समय में अन्यत्र किये हुए काम के किसी मुआवजे की आशा नहीं रखनी चाहिए।

ऐ० बा०, १४६

५. हमारी तमाम मुसीबतें हमारी अकुशलता के कारण हैं। कुशलता आजाय तो अभी जो चीज़ हमें कष्टदायक-सी लगती है, वह आनंददायी मालूम होने लगेगी।

म० डा०१, १४०

६. मजदूर का कौशल ही उसकी सच्ची पूंजी है।

ह०, १७

७. मजदूर के लिए यह मानना सबसे बड़ा वहम है कि वह मालिकों के सामने लाचार और असहाय है।

ह०, १८

८. कोई काम करना हो तो उसके बारे में हमें पूरा ज्ञान होना चाहिए।

ब० च०, ६६

९. जो मजदूरों को योग्य मेहनताना नहीं देते और उनके परिश्रम का शोषण करते हैं, उनसे वस्तुएं खरीदना या उन वस्तुओं का उपयोग करना पापपूर्ण है।

मे० स० भा०, ७६

१०. काम करनेवाला सीधा अपनी व्यावहारिक कठिनाई पर जा पहुंचता है और उसे स्पष्ट दिखा देता है।

गां० ना० सं०, २१

११. दुर्भाग्यवश हमारा मन पूंजी की मोहिनी से मुग्ध हो गया है, और हम यह मानने लगे हैं कि दुनिया में पूंजी ही सबकुछ है; लेकिन यदि हम एक क्षण के लिए भी गहरा विचार करें तो हमें पता चल जायगा कि मजदूरों के पास जो पूंजी है, वह पूंजीपतियों के पास कभी हो ही नहीं सकती ।

ह०, ७३

१२. मजदूरों को अपने बीच सांप्रदायिकता को कोई जगह नहीं देनी चाहिए ।

प्रा० प्र०१, ३२०

७—पूंजी और पूंजीपति

१. मुनाफे के लिए मुनाफा नहीं किया जा सकता ।

२. सच्चा बनिया वह है जो सच्ची तौल तौलता है ।

प्रा० प्र०१, ११५

३. क्या धनिक लोग इतने कठोर और नास्तिक बन जायं कि ईश्वर को भी भूल जायं और अपने धन को ही परमेश्वर मानकर बैठ जायं ?

प्रा० प्र०२, २३

४. अगर अमीर गरीबों को घृणा से देखेंगे तो वह धर्म नहीं, अधर्म हो जायगा ।

प्रा० प्र०२, २३

५. पैसे से किसी की कीमत नहीं होती ।

प्रा० प्र०२, ३३१

६. करोड़पति भी काम न करे और खावे तो वह निकम्मा है, पृथ्वी पर भार है । जिस आदमी के घर पैसा भी है, वह भी मेहनत करके खाये, तब बनता है ।

प्रा० प्र०२, ३५५

८—यंत्र

१. यंत्रों का उतना उपयोग जायज है, जो सबकी भलाई के लिए हो।

सर्वो०, ४६

२. मैं तमाम नाशकारी यंत्रों का कट्टर विरोधी हूं।

सर्वो०, ४६

३. मुझे आपत्ति स्वयं मशीनों पर नहीं, बल्कि उनके लिए पागलपन पर है।

सर्वो०, ४६

४. वैज्ञानिक सत्यों और आविष्कारों को निरे लोभ के साधन नहीं रहना चाहिए।

सर्वो०, ५०

५. मेरा उद्देश्य यंत्रों का सर्वथा नाश नहीं, वरन उनकी सीमा बांधना है।

सर्वो०, ५०

६. जो यंत्र हमारा स्वामी बन जाय, उसका मैं सख्त विरोधी हूं।

सर्वो०, ५१

७. मशीन एक शरीर के समान है। वह तभी तथा उसी हद तक लाभदायक होती है, जबतक कि वह आत्मा के विकास में सहायक होती है।

हिं० स्व०, ६६

८. अगर भारत यंत्रों का गुलाम बन जाता है तो मैं कहूंगा कि भगवान जगत को भारत से बचाये।

खा०, १८

९. श्रम का विकेंद्रीकरण जितना अधिक होगा, औजार उतने ही अधिक सस्ते तथा सादे होंगे।

खा०, १६

१०. यंत्र का अच्छा उपयोग यही होगा कि वह मनुष्य के श्रम में

मदद करे और उसे आसान बनाये।

मो० मा०, ७८

९—हड़ताल

१. न्याय-प्राप्ति के लिए हड़ताल करना मजदूरों का जन्म-सिद्ध अधिकार है, परंतु ज्योंही पूंजीपति पंच का सिद्धांत मान लें, हड़ताल को अपराध समझना चाहिए।

ह०, १५

२. हमारी सहानुभूतिपूर्ण हड़तालों का उद्देश्य भी आत्मशुद्धि, अर्थात असहयोग, ही होना चाहिए।

ह०, १०

३. शांतिपूर्ण हड़ताल उन्हीं लोगों तक सीमित रहनी चाहिए, जिन्हें वह कष्ट हो, जिसे दूर कराना है।

ह०, ११

४. नाजायज़ हड़ताल को न तो कामयाबी हासिल होनी चाहिए और न किसी हालत में आम जनता की हमदर्दी मिलनी चाहिए।

मे० स० भा०, ४१-४२

५. हर हड़ताल या अनशन उचित नहीं होता।

अ० झां०, ५१

६. सत्याग्रही हड़ताल या और किसी प्रकार का सत्याग्रह तभी कर सकता है, जब इंसाफ पाने के सब मामूली दरवाजे बंद हो जाते हैं और इंसाफ़ के बदले आप-खुदी चलती है।

बा० प० स०, ३५४

७. हड़ताल का भी एक शास्त्र होता है। यों ही हड़ताल करने से कोई लाभ नहीं।

प्रा० प्र०१, २८१

१०—स्वदेशी

१. जैसे हम बेहतर आब-हवा वाले देश के लिए अपने देश को छोड़ नहीं देते, बल्कि अपने ही जलवायु को सुधारने की कोशिश करते हैं, ठीक उसी तरह बेहतर या अधिक सस्ती विदेशी चीजों के खातिर हम स्वदेशी

को छोड़ नहीं सकते ।

खा०, ५७

२. प्रत्येक देश की प्रगति के नियमों का तकाजा है कि वहां के रहने-वाले अपने यह ं की ही पैदावार और माल को ज्यादा अपनायें ।

खा०, ५७

३. स्वदेशी का पुजारी अपने निकट के पड़ोसियों की सेवा में अपने को समर्पण करना अपना पहला धर्म समझेगा ।

खा०, ५७

४. स्वदेशी-धर्म के पालन से कभी किसी को हानि नहीं हो सकती; और यदि होती है तो मान्ना चाहिए कि मैं स्वधर्म से नहीं, बल्कि अहंकार से प्रेरित हूं ।

खा०, ५६

५. स्वदेशी में स्वार्थ की कोई गुंजाइश नहीं और अगर उसमें स्वार्थ है तो वह इतने उच्च प्रकार का है कि वह उच्चतम परोपकार से भिन्न नहीं है ।

खा०, ५६

६. अपने विशुद्ध हृदय 'में स्वदेशी-धर्म का पालन चरम कोटि की विश्व-सेवा है ।

खा०, ५६

७. स्वदेशी का सच्चा भक्त विदेशियों के लिए अपने मन में कभी दुर्भाव नहीं रखेगा ।

खा०, ६०

८. स्वदेशीवाद द्वेष का रास्ता नहीं है, वह निःस्वार्थ सेवा का सिद्धांत है और उसकी जड़ विशुद्ध अहिंसा, अर्थात प्रेम, में है ।

खा०, ६१

९. स्वदेशी वह है, जो आत्मा को भाता है ।

प्रा० प्र०१, १८४

११—चरखा और खादी

१. मैंने तो चरखे को दरिद्र भारत की गरीबी मिटानेवाले के रूप

में इतना अधिक मान लिया है कि उसकी मुझपर अद्‌भुत मोहिनी छा गई है।

य० अ०, ७६

२. चरखा स्वयं एक कीमती मशीन है और मैंने अपने नम्र ढंग से, भारत की विशेष परिस्थिति के अनुसार, उसमें सुधार करने का प्रयत्न किया है।

सर्वो०, ४६

३. चरखे का संदेश उसकी परिधि से कहीं ज्यादा व्यापक है। उसका संदेश सादगी, मानव-सेवा, अहिंसामय जीवन तथा गरीब और अमीर, पूंजी और श्रम, राजा और किसान के बीच अकाट्य संबंध स्थापित करना है।

सर्वो०, १६०

४. लाखों लोगों के लिए एकमात्र सार्वत्रिक उद्योग कताई ही है, और कोई नहीं।

खा०, १३

५. चरखा व्यापारिक युद्ध की नहीं, व्यापारिक शांति की निशानी है। उसका संदेश संसार के राष्ट्रों के लिए दुर्भाव का नहीं, वरन सद्‌भाव और स्वावलंबन का है।

खा०, १७

६. भारत और संसार की रक्षा चरखे में ही निहित है।

खा०, १८

७. चरखा तो लंगड़े की लाठी है—सहारा है। निर्धन स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करनेवाला किला है।

गां० वा०, १६७

८. खादी मानवीय मूल्यों की प्रतीक है, जबकि मिल का कपड़ा केवल भौतिक मूल्य प्रकट करता है।

खा०, ७८

९. खादी मजदूरों की सेवा करती है, मिल का कपड़ा उनका शोषण करता है।

खा०, ८२

१०. खादी ऐसा ग्रामोपयोगी उद्योग है, जैसा और कोई उद्योग न तो है, न हो सकता है।

खा०, ६०

११. खादी की जड़ सत्य और अहिंसा में है।

खा०, १२२

१२. चरखे में नीतिशास्त्र भरा है, अर्थशास्त्र भरा है और अहिंसा भरी है।

प्रा० प्र०२, २०२

१३. चरखा तो ग्राम-उद्योग का मध्य-विंदु है। अगर सात लाख गांवों में चरखा न चले तो अन्य गृह-उद्योग भी नहीं चल सकते। चरखा तो सूरज है और दूसरे जो उद्योग हैं वे ग्रह हैं, जो सूरज के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। अगर सूरज डूब जाय तो दूसरे ग्रह चल नहीं सकते, क्योंकि वे सब सूरज पर ही आश्रित हैं।

प्रा० प्र०२, २२७

१२—दरिद्र-नारायण

१. गरीबों के लिए रोटी ही अध्यात्म है। हां, आप उनके पास रोटी लेकर जाइये, तो वे आपको ही अपना ईश्वर समझने लगेंगे।

स० ई०, २५

२. मैं उस ईश्वर की, जो सत्य है या उस सत्य की जो ईश्वर है, इन लाखों लोगों (गरीबों) की सेवा के द्वारा ही पूजा करता हूं।

स० ई०, २६

३. भूखे मरनेवाले इंसान को सबसे पहले पेट की सूझती है। वह रोटी के टुकड़े के लिए अपनी आजादी और सबकुछ बेच देगा।

सर्वो०, १६३

४. भूख की पीड़ा से व्यथित और पेट भरने के सिवा और कोई इच्छा न रखनेवाले मनुष्य के लिए उसका पेट ही ईश्वर है। उसे जो रोटी देता है, वही उसका मालिक है। उसके द्वारा वह ईश्वर के दर्शन कर सकता है।

खा०, १३४

५. जहां गरीबों के लिए शुद्ध और सक्रिय प्रेम है, वहां ईश्वर भी है।

खा०, १३४

६. लोक-सत्ता के इस युग में जबकि अमीर और गरीब, ऊंच और नीच का भेद मिटाया जा रहा है, धनवानों का यह काम है कि वे अपने ऐश-आराम में संयम रखकर, गरीबों को संतोप का जीवन बिताने का अवसर दें।

स्त्रि० स०, ६९

७. जिनकी वृत्ति गरीबी की है, उन्हीं को स्वर्ग का राज्य मिलता है।

ऐ० बा०, ७१

८. निर्धनों का कोई वर्ग नहीं होता। जाति तथा धर्म की अपेक्षा के बिना वे अपने-आप ही एक पद-दलित वर्ग बनाते हैं। उनपर लादा हुआ धर्म नीच निर्धनता है।

ड्रिं० ड्र०, ५६

९. मनुष्य-जाति ईश्वर को, जो वैसे ही नामहीन है और मनुष्य की बुद्धि की पहुंच से परे है, जिन अनंत नामों से पहचानती है, उनमें से एक नाम दरिद्रनारायण है। उसका अर्थ है गरीबों का या गरीबों के हृदय में प्रकट होनेवाला ईश्वर।

मे० स० भा०, ५६

१०. गरीबी में धर्म का दर्शन करनेवाले और मिलने पर भी धन का त्याग करनेवाले लोग दुनिया में इने-गिने ही पाये जाते हैं। असल में धर्म के रूप में स्वीकार की गई गरीबी ही सच्ची संपत्ति है।

मे० स० भा०, ६२

११. मैं भगवान की इससे अच्छी पूजा की कल्पना नहीं कर सकता कि उसके नाम पर मैं गरीबों के लिए गरीबों की ही तरह परिश्रम करूं।

मे० स० भा०, १२२

१३—ट्रस्टीशिप (संरक्षकता)

१. अहिंसा में विश्वास रखनेवाला होने के कारण मेरा ट्रस्टीशिप

(संरक्षकता) में विश्वास है ।

खा०, ३०२

२. जब एक आदमी के पास अपने अनुरूप भाग से अधिक हो, तो वह परमात्मा की संतान के लिए उस भाग का ट्रस्टी बन जाता है ।

फ़ा० पै०, ६७

३. ट्रस्टी के पास करोड़ों रुपयों के रहते हुए भी उनमें की एक भी पाई अपनी नहीं होती ।

आ० क०, २२८

४. आर्थिक समानता की जड़ में धनिक का ट्रस्टीपन निहित है । इस आदर्श के अनुसार धनिक को अपने पड़ोसी से एक कौड़ी भी ज्यादा रखने का अधिकार नहीं है ।

मे० स०, १३४

५. संरक्षकता की योजना में जनता को केवल पूंजीपतियों के धन का ही उपयोग करने को नहीं मिलता, बल्कि उनकी बुद्धि, योग्यता और कार्य-कुशलता का भी उपयोग करने को मिलता है ।

टु० न्यू० हो० ९१

६. मालिक ट्रस्टी बने, इसका अर्थ यह है कि अपनी कमाई का अमुक भाग रखकर बाकी सब गरीबों को, अर्थात राज्य को अथवा ऐसी ही लोकोपयोगी संस्था को दे दें ।

बा० प० प्रे०, २४८

७. मालिक अपनी संपत्ति का दुरुपयोग भी कर सकता है; मगर ट्रस्टी या रक्षक को तो बहुत ही सावधानी रखनी चाहिए । सौंपी हुई संपत्ति का उसे अच्छे-से-अच्छा उपयोग करना है ।

म० डा० २, १७४

८. ट्रस्ट का अर्थ जिम्मेदारी है और मुझे तो यह पसंद है कि मनुष्य अपनी जायदाद का ट्रस्टी बन जाय । जो ट्रस्टी बन जाता है वह मालिक नहीं कहा जाता । उसे तो रक्षक की हैसियत से, संपत्ति का जो कमीशन मिले उसीसे गुजर करनी चाहिए । ट्रस्ट का यही अर्थ है । जो ट्रस्टी रक्षक

होकर भक्षक बन जाता है, उसकी बात यह नहीं है।

म० डा०२, २०३

९. जो भी संपत्ति है वह ईश्वर की, खुदा की है। वह सर्व-शक्ति-मान ईश्वर से मनुष्य को मिली है। आदमी के पास जो कुछ है, वह उसकी निजी संपत्ति है। किसी भी व्यक्ति के पास यदि उसकी अपनी जरूरत से ज्यादा जायदाद हो तो वह भगवान की, दुखी और गरीब संतान की, सेवा में उसका उपयोग करने के लिए, उस जायदाद का ट्रस्टी है।

ए० च० ११६

१०. धनवान लोग चाहे करोड़ों रुपये कमायें (बेशक केवल ईमानदारी से), लेकिन उनका उद्देश्य वह सारा पैसा सबके कल्याण में समर्पित कर देने का होना चाहिए।

से० [illegible] (१-३-४२) ६३

११. संरक्षक का जनता के सिवा दूसरा कोई उत्तराधिकारी नहीं होता। अहिंसा पर आधारित राज्य में संरक्षकों का कमीशन नियंत्रित और मर्यादित होगा। राजाओं और जमीदारों का दरजा दूसरे धनवानों-जैसा ही होगा।

ह० से०, (१२-४-४२) ११६

१२. मनुष्यों का भी यह सिद्धांत होना चाहिए कि वे उतना ही अपने पास रखें, जिससे आज का काम चल जाय, कल के लिए वे चीजें इकट्ठी करके न रखें।

ह० से०, (२३-२ ४७) ३१

१३. अहिंसक मार्ग यह है कि जितनी उचित मानी जा सके अपनी उतनी आवश्यकताएं पूरी करने के बाद जो पैसा बाकी बचे, उ[illegible] वह प्रजा की ओर से ट्रस्टी बन जाय। अगर वह प्रामाणिकता से संरक्षक बनगा तो जो पैसा पैदा करेगा, उसका सद्व्यय भी करेगा। जब मनुष्य अपने-आपको समाज का सेवक मानेगा, समाज की खातिर धन कमायगा और समाज के कल्याण के लिए उसे खर्च करेगा, तब उसकी कमाई

में शुद्धता आयगी।

मे० स०, ३५

१४. संरक्षक वह है जो अपने ट्रस्ट के कर्तव्यों को ईमानदारी से और श्रेष्ठतम हितों में पूरा करता है।

अं० मां० ३२२

१४—आजीविका और बेरोजगारी

१. जिन धंधों की आदमी को अपने जीवन के लिए जरूरत है, उन धंधों में ऊंच-नीच का कोई भेद होता ही नहीं।

ह० २१

२. अहिंसक धंधा वह धंधा है, जो बुनियादी तौर पर हिंसा से मुक्त हो, और जिसमें दूसरों का शोषण या ईर्ष्या नहीं हो।

मे० स०, ३९

३. जबतक एक भी सशक्त आदमी ऐसा हो, जिसे काम न मिलता हो या भोजन न मिलता हो, तबतक हमें आराम करने या भर-पेट भोजन करने में शर्म महसूस होनी चाहिए।

मे० स० भा०, ५१

४. जो ईमानदारी से धंधा करते है, वे भी देश की सेवा करते हैं। सेवा का दावा करनेवाले लोग भार-स्वरूप हो सकते हैं और धंधा करके कमानेवाले लोग शुद्ध सेवक हो सकते हैं।

बा० प० प्रे०, २२९

५. ईमानदारी के साथ अपनी रोज़ी कमाने की इच्छा रखनेवाले के लिए कोई भी काम नीच नहीं है।

शा० अ०, २६

६. अगर आदमी हर तरह की मेहनत-मजदूरी करने को तैयार रहे, तो ईमानदारी से रोटी कमाने का ज़रिया तो मिल ही जाता है।

प्रा० प्र०, २५३

खण्ड ८ : शरीर और स्वास्थ्य

१—शरीर

१. देह केवल परमार्थ के लिए मिली है।

य॰ मं॰, १२४

२. शरीर को एक अमानत समझकर यथासंभव उसकी रक्षा करना रक्षक का धर्म है।

बा॰ प॰ ज॰, ८३

३. शरीर और मन के बीच ऐसा निकट संबंध है कि एक की शुद्धता के साथ दूसरे का संबंध ज्यादातर जुड़ा होता है।

बा॰ प॰ ज॰, २३१

४. शरीर-संबंधी नियमों को हम कब तोड़ते हैं, इसका हमें पता नहीं चलता। और जो सिद्धांत इंसान के बनाये कानून के बारे में है, वही कुदरत के कानून के बारे में भी है कि अज्ञान कोई बचाव नहीं है।

म॰ डा॰१, ३१५

५. शरीर अथवा जड़-तत्व का भी उपयोग तो है ही। उसीके द्वारा आत्मा की अभिव्यक्ति हो सकती है।

म॰ डा॰१न॰, ३२२

६. ईश्वरीय वरदान, अर्थात शरीर, की अवहेलना करने से ईश्वर नाराज हुए बिना नहीं रहेगा।

ग्रं॰ भा॰, १

२—स्वास्थ्य

१. कितने ही काम होने पर भी जैसे हम खाने का समय निकाले बिना नहीं रहते, वैसे ही व्यायाम का समय भी हमें निकालना चाहिए।

आ॰ क॰, २०३

२. मनुष्य को स्वस्थ या अस्वस्थ करने में मन का हिस्सा कौन कम होता है !

आ० क०, ४२४

३. प्रकृति का नियम स्वास्थ्य है, बीमारी नहीं।

स० ई०, १३८

४. किसी भी अस्वस्थ जाति के लिए स्वराज्य लेना असंभव है।

सर्वो०, १५५

५. बीमारी का अच्छे-से-अच्छा उपयोग यह है कि भगवान पर आस्था बढ़ाना और स्वभाव काबू में रखना।

बा० प० ज०, २४१

६. सोना-बैठना, खाना-पीना सब नियमित हों, तो बीमार पड़ने की नौबत ही न आये।

ए० च०, १५७

७. स्वास्थ्य की बात को भी व्यापार की बात-जैसा समझना आवश्यक है।

गां० छ०, १४६

३—आहार

१. जैसा आहार, वैसा उद्गार—मनुष्य जैसा खाता है, वैसा बनता है।

आ० क, २३४

२. मनुष्य बालक के रूप में माता का जो दूध पीता है, उसके सिवा उसे दूसरे दूध की आवश्यकता नहीं है। हरे और सूखे वन-पक्व फलों के अतिरिक्त मनुष्य का और कोई आहार नहीं है। बादाम आदि चीजों में से और अंगूर आदि फलों में से उसे शरीर और बुद्धि के लिए आवश्यक पूरा पोषण मिल जाता है।

आ० क०, २३४

३. जो मनुष्य ईश्वर से डरकर चलना चाहता है, जो ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन करने की इच्छा रखता है, ऐसे साधक और मुमुक्षु के लिए अपने आहार का चुनाव—त्याग और स्वीकार—उतना ही आवश्यक है, जितना

कि विचार और वाणी का चुनाव—त्याग और स्वीकार—आवश्यक है।

आ० क०, २३५

४. मौज-मजे के लिए गुड़ की एक डली भी न मांगो, न लो; परंतु औषधि के तौर पर महंगे-से-महंगे अंगूर भी मिल सकें तो प्राप्त करने में कोई बुराई नहीं दिखाई देती।

बा० प० ज०, ८३

५. जो कुछ तुम खाओ, औषधि समझकर खाओ, स्वाद के लिए नहीं। औषधि में जो स्वाद निकलता है, वही सच्चा स्वाद और पोषण है।

बा० प० ज०, २४३

६. सारे धर्म का निचोड़ भोजन में ही मान बैठना, जैसा भारत में अक्सर किया जाता है, उतना ही गलत है, जितना भोजन-संबंधी सारे संयम की उपेक्षा करना और मनमाना खाना-पीना है।

सर्वो०, १८

७. यह बात बिना किसी अतिशयोक्ति के भय के कही जा सकती है कि ऐसे देश में मिठाइयां तथा दूसरे स्वादिष्ट भोजन खाना डकैती के समान है, जिसमें करोड़ों आदमी साधारण पूरा भोजन भी नहीं प्राप्त करते।

शा० नै० आ०, १०

८. आहार जितना तामस होगा, शरीर भी उतना ही तामस होगा।

मे० स० भा०, १६७

९. कम खाने के कारण जितने लोग बीमार या कमजोर रहते हैं, उनसे अधिक लोग ज्यादा या गलत भोजन के कारण रहते हैं। अगर हम उचित भोजन चुन लें, तो यह देखकर आश्चर्य होता है कि कितनी थोड़ी-सी मात्रा काफी हो जाती है।

बा० प० मी०, २६३

४—शुद्धता और स्वच्छता

१. शुद्ध बनने का अर्थ है मन से, वचन से और काया से निर्विकार बनना, राग-द्वेष आदि से रहित होना।

आ० क०, ४३३

२. जहां भीतरी और बाहरी, दोनों तरह की संपूर्ण शुद्धता होती है, वहां बीमारी असंभव हो जाती है।

सर्वो० १७२

३. जबतक मेरे देशवासी सफाई नहीं सीखेंगे, तबतक उनकी प्रगति नहीं होगी।

ऐ० वा०, ८

४. एक सुव्यवस्थित समाज के नागरिक स्वास्थ्य और स्वच्छता के नियम जानते और पालते हैं।

रच० का०, १८

५. यह कितनी गलत बात है कि हम मैले रहें और दूसरों को साफ रहने की सलाह दें।

बा० आ०, १७१

६. पूरी सफाई रखने में गरीबी कभी बाधक नहीं होती।

द० च०, १२६-२७

७. सफाई का काम खुद करना चाहिए। काम करने में कोई शर्म नहीं है।

प्रा० प्र०२, २३५

५—नींद

१. निर्दोष नींद लेने के लिए जाग्रत अवस्था में हमारे आचार-विचार निर्दोष होने चाहिए। निद्रावस्था जाग्रत अवस्था को जांचने का दर्पण है।

बा० प० प्रे०, १७

२. नींद तो पूरी लेनी ही चाहिए। पूरी नींद लेने पर उत्साह बढ़ेगा।

बा० प० प्रे० २१-२२

३. मनुष्य को खाने की अपेक्षा नींद की ज्यादा जरूरत होती है। खाने का उपवास फायदा करता है, लेकिन नींद का उपवास शरीर को घिस डालता है। उससे सिर घूमता है और मनुष्य अस्वस्थ हो जाता है।

बा० प० प्रे०, ३५

४. शरीर को जरूरत हो उतनी ही नींद, उतनी ही खुराक वगैरा, ली जाय ।

ए० च०, ४८

६—मदिरा-पान और दुर्व्यसन

१. नैतिक दुराचारों का विचार करते समय खर्च का प्रश्न सामने लाना कोई शोभा नहीं है ।

य० अ०, १५

२. राज्य अपनी प्रजा के दुर्व्यसनों के लिए इंतज़ाम नहीं करता ।

सर्वो०, १७३

३. शराबी पत्नी, माता और बहन का भेद भूल जाता है और ऐसे गुनाह कर डालता है, जिनपर वह अपनी शांत अवस्था में लज्जा अनुभव करता है ।

सर्वो०, १७३

४. शराब और नशीले द्रव्य, ये शैतान के दो हाथ हैं, जिनके प्रहारों से वह अपने असहाय गुलामों को बेभान और विमूढ़ बना डालता है ।

सर्वो०, १७४

५. जिन लोगों को नशे की चीजें खाने और पीने की लत पड़ गई है, उनका नैतिक स्वास्थ्य पूरा बरबाद हो जाता है ।

स्त्रि० स०, ४५

६. स्त्री के सिवा पत्नियों में अपने पतियों की लत छुड़ाने की शक्ति और कर्तव्य की भावना और कौन जाग्रत कर सकता है !

स्त्रि० स०, ४८

७. मैं मदिरापान को चोरी और शायद वेश्यागमन से भी अधिक निंदनीय समझता हूं । क्या वह इन दोनों की जननी नहीं है !

ड्रिं० ड्र०, ३

८. मदिरा-पान तथा मादक वस्तुएं उनका पतन करती हैं, जिनको इनकी लत है, और उनका भी जो इनका व्यापार करते हैं ।

ड्रिं० ड्र०, ११

९. भारत के लिए अछूतपन के बाद अत्यंत शोचनीय वस्तु मदिरा

का अभिशाप ही है। पूर्ण शराबबंदी से कम कोई बात लोगों को इस अभिशाप से नहीं बचा सकती।

हिं० इ०, २३

११. जो राष्ट्र मदिरा-पान की आदत का शिकार है, उसके सामने विनाश के सिवा और कोई बात नहीं है।

हिं० इ०, २७

१२. शराब-बंदी की समस्त कल्पना दंड-विषयक नहीं, बल्कि शिक्षात्मक है।

हिं० इ०, ४७

१३. यदि हम मदिरापान और मादक पदार्थों की आदतों के शिकार बने रहे तो हमारी स्वतंत्रता गुलामों की स्वतंत्रता होगी।

हिं० इ०, ४६

१४. शराबबंदी मिल-मालिकों को प्रत्यक्ष सहायता देती है। शराबबंदी से होने वाली कर की हानि को वे निस्संदेह पूरा कर सकते हैं।

हिं० इ०, ५०

१५. शराबबंदी पहले और प्रधान रूप से एक नैतिक कर्तव्य है।

हिं० इ०, ६१

१६. शराब पीने से शरीर और आत्मा की बेहद दुर्दशा होती है।

अं० भा०, १०

१७. प्रजा को संस्कारी बनाने में कदाचित सरकार को कुछ घाटा भी उठाना पड़े, तो भी मैं मानता हूं कि आजादी के इस युग में जन-तांत्रिक सरकार को उतना सहन कर लेना चाहिए।

अं० भा०, ११

१८. मदिरा-पान की तरह धूम्र-पान को भी मैं भयंकर वस्तु मानता हूं। धूम्रपान मेरी दृष्टि में एक दुर्व्यसन है। वह मनुष्य की अंतरात्मा, को जड़ बना देता है और अक्सर मदिरा-पान से भी ज्यादा बुरा होता है, क्योंकि वह अदृष्ट रूप में काम करता है।

मो० मा०, ६१

१९. शराब जहर से भी ज्यादा बुरी है। जहर से शरीर ही मरता

है, शराब से तो आत्मा सो जाती है। खुद अपने ऊपर काबू पाने का गुण ही मिट जाता है।

प्रा० प्र०२, २५६

२०. शराब छोड़ देने से काम करनेवालों का शारीरिक बल और नैतिक बल दोनों बहुत बढ़ जाते हैं, और उनकी कमाने की ताकत भी बढ़ जाती है।

प्रा० प्र०२, २५६

खंड ९ : सत्याग्रह

१—सत्याग्रह

१. अन्याय के विरुद्ध सत्याग्रह सर्वोपरि शस्त्र है ।

आ० क०, ३७८

२. सत्याग्रह की लड़ाई पैसे से नहीं चल सकती । उसे पैसे की कम-से-कम आवश्यकता रहती है ।

आ० क०, ३७८

३. यदि सत्याग्रही अविनयी बनता है तो वह दूध में जहर मिलने के समान है ।

आ० क०, ३७८

४. विनय सत्याग्रही का कठिन-से-कठिन अंश है ।

आ० क०, ३४

५. सत्याग्रह का शुद्ध अंत तभी माना जाता है जब जनता में आरंभ की अपेक्षा अंत में अधिक तेज और शक्ति पाई जाय ।

आ० क०, ३८१

६. सत्याग्रह आत्म-शुद्धि की लड़ाई है । वह धार्मिक युद्ध है । धर्म-कार्य का आरंभ शुद्धि से करना ठीक मालूम होता है । उस दिन सब उपवास करें और काम-धंधा बंद रखें ।

आ० क०, ३९८

७. सत्याग्रह में विरोधी को हानि पहुंचाने की हमने जरा भी कल्पना नहीं की है । सत्याग्रह का नियम यह है कि स्वयं कष्ट उठाकर विरोधी पर विजय प्राप्त की जाय ।

सर्वो०, ८६

८. क्रोध या द्वेष-रहित कष्ट-सहन के सूर्योदय के सामने कठोर-से-

कठोर हृदय और घोर-से-घोर अज्ञान भी विलीन हो जायगा ।

सर्वो०, ८६

९. सक्रिय अहिंसा का अर्थ ज्ञानपूर्वक कष्ट-सहन है । इसका मतलब यह नहीं कि दुराचारी की मरजी के सामने चुपचाप गर्दन झुका दी जाय ; बल्कि इसका मतलब यह है कि आत्मा की मरजी के विरुद्ध अपनी आत्मा की सारी शक्ति को लगा दिया जाय ।

सर्वो०, ६६

१०. सत्याग्रही का मार्ग साफ है। उसे सब प्रकार की विरोधी धाराओं के बीच खड़ा रहना चाहिए । न उसे अंधी कट्टरता के प्रति अधीर होना चाहिए और न दवे हुए लोगों के अविश्वास पर चिढ़ना चाहिए । उसका कष्ट-सहन कट्टर-से कट्टर धर्मांध के कठोर-से-कठोर हृदय को भी पिघला देगा ।

सर्वो०, ६६-६७

११. बल शारीरिक क्षमता से नहीं आता ; वह अजेय संकल्प-शक्ति से आता है ।

सर्वो०, ६८

[illegible] सत्याग्रही का उद्देश्य अन्याय करनेवाले को दबाना नहीं होता, बल्कि उसका हृदय-परिवर्तन करना होता है ।

सर्वो०, ६८

१३. सत्याग्रही भय को सदा के लिए तिलांजलि दे देता है ।

सर्वो०, १००

१४. सत्याग्रही अधिकारियों को परेशान करने के लिए जेल नहीं जाता, बल्कि अपनी निर्दोषता का प्रत्यक्ष प्रमाण देकर उनका हृदय-परिवर्तन करने के लिए जाता है ।

सर्वो०, १३७

१५. सत्याग्रही के नाते जेल के तमाम कष्ट और कोड़े खाना आदि की हद तक दूसरे अन्याय भी आनंद से सहन करने को तैयार रहना हमारा धर्म है ।

य० अ०, २८

१६. सत्याग्रह में पाखंड के लिए कोई गुंजाइश नहीं।

य० अ०, ३२

१७. सत्याग्रह में कैदियों का यह धर्म है कि वह जेल के तमाम उचित नियमों का पालन करें और मिला हुआ काम तो जरूर करें। असल में सत्याग्रही के जेल जाने के बाद उसका नियम भंग करने का काम समाप्त हो जाता है। कोई असामान्य कारण होने पर ही वह फिर शुरू किया जा सकता है।

य० अ०, ६१

१८. सत्याग्रह एक कठोर पदार्थ से बना हुआ है। इसमें न कोई बात अलग रखी हुई है और न गुप्त।

हिं० स्व०, १८

१९. सत्याग्रह व्यक्तिगत कष्ट-सहन के द्वारा अधिकार-प्राप्ति का एक तरीका है। यह शस्त्रों के द्वारा मुकाबला करने का उलटा है।

हिं० स्व०, ७९

२०. सत्याग्रह अर्थात आत्मशक्ति अद्वितीय है। यह शस्त्र-शक्ति से बढ़िया है। फिर इसे निर्बलों का हथियार कैसे समझा जा सकता है !

हिं० स्व०, ८१

२१. सत्याग्रह सब धारों वाली तलवार है। इसका किसी तरह भी प्रयोग किया जा सकता है। जो इसका प्रयोग करता है और जिसके विरुद्ध इसका प्रयोग किया जाता है, यह दोनों का मंगल करता है। खून की एक बूंद बहाये बिना यह दूरगामी परिणाम पैदा करता है।

हिं० स्व०, ८२

२२. जबतक शरीर अनुशासित न हो, तबतक सत्याग्रही बनना कठिन है।

हिं० स्व०, ८४

२३. बड़े अनुभव के बाद मुझे यह मालूम होता है कि जो देश-सेवा के लिए सत्याग्रही बनना चाहते हैं, उन्हें पूर्ण शील का पालन करना, निर्धनता को स्वीकार करना, सत्य का पालन करना और निर्भयता को पैदा करना

पड़ता है ।

हिं० स्व०, ८४

२४. धन की लालसा और सत्याग्रह साथ-साथ नहीं चल सकते ।

हिं० स्व०, ८१

२५. सत्याग्रह का रहस्य गलती करनेवाले को गलती करने की तरफ आकृष्ट करने में नहीं होता ।

ग्ली० बा० फी०, १६

२६. सत्याग्रही सदा बुराई को भलाई से, क्रोध को प्रेम से, झूठ को सच से और हिंसा को अहिंसा से जीतने की कोशिश करेगा । दुनिया को बुराई से पाक करने का और कोई उपाय नहीं है ।

स्त्रि० स०, ५४

२७. सत्याग्रही का सबसे जोरदार हथियार जागा हुआ और समझदार लोकमत है ।

स्त्रि० स०, ५५

२८. सत्याग्रही अपना शरीर अच्छा ही रखता है ।

बा० प० मी०, १२६

२९. सत्याग्रह लोकमत को शिक्षा देने की एक ऐसी प्रक्रिया है, जो समाज के समस्त तत्वों को प्रभावित करके अंत में अजेय बन जाती है ।

हरि० (३१-३-४३), ६४

३०. सत्ता लेने के लिए सत्याग्रह हो ही नहीं सकता । सत्ता हाथ में लेकर उसका त्याग करने में सत्याग्रह हो सकता है ताकि वह सत्ता शुद्ध रूप में कायम रहे ।

म० डा०२, ३४३

३१. सत्याग्रह का उद्देश्य लोगों को साहसी और स्वतंत्र बनाना है ।

म० डा०१न०, ३५

३२. चुपचाप मार सहन करना तो सत्याग्रही का मंत्र है, परंतु वह दुख-निवारण की खातिर है ।

म० डा०१न०, ४००

३३. जिस समय सत्याग्रह के दुराग्रह बन जाने की संभावना हो, उस

समय सत्याग्रह बंद कर देने में सच्चा सत्याग्रह चल पड़ता है। सत्याग्रह ऐसी सूक्ष्म वस्तु है कि बार-बार संशोधन और अनुभव करते-करते ही कुछ अंशों में उसका ज्ञान होता है।

म० डा०१ न०, ४१०

३४. सत्याग्रही होना तलवार की धार पर चलने के बराबर है।

म० डा०१ न०, ४११

३५. अन्याय के विरुद्ध न्याय करने का लोगों के पास सत्याग्रह का अंतिम उपाय न हो, तब तो उनका नाश ही हो जाय। अधिक-से-अधिक निश्चित और ज्यादा-से-ज्यादा सुरक्षित ढंग का उपाय सविनय प्रतिकार है।

म० डा०१ न०, ४४८

३६. सत्याग्रह की लड़ाई चरित्र-रूपी पूंजी के बिना असंभव है।

सि० गां०, २३५

३७. सत्याग्रह ऐसा कानून है जो सर्वत्र लागू किया जा सकता है। परिवार से आरंभ करके दूसरे किसी भी क्षेत्र तक उसके उपयोग का विस्तार किया जा सकता है।

मे० स०, ४७

३८. सत्याग्रह से जो कुछ भी पाने-जैसा है वह सब पाया जा सकता है। सत्याग्रह बड़े-से-बड़ा साधन है, हथियार है। मेरी राय में समाजवाद तक पहुंचने का इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

मे० स०, ५२

३९. सत्याग्रह का अर्थ ही यह है कि सत्याग्रही सारे संसार को प्रेम से अपने वश में कर सकता है।

बि० कौ० आ०, १४३

४०. सत्याग्रह का रहस्य ही यह है कि सत्याग्रही समूची दुनिया का मत अपनी ओर कर लेता है।

प्रा० प्र०१, ४६

४१. दुर्बलों के साथ अहिंसा का कभी मेल बैठता ही नहीं। अतः उसे अहिंसा के बजाय निष्क्रय प्रतिरोध करना चाहिए।

प्रा० प्र०१, २१६

४२. हमको कुछ मिल जाय, इस उद्देश्य से जो सत्याग्रह करते हैं, वह सत्याग्रह नहीं हो सकता। वह तो असत्य का आग्रह होगा।

प्रा० प्र०१, ३७४

४३. सत्याग्रह के लिए दो चीजें अनिवार्य हैं। एक तो यह कि जिस चीज के लिए लड़ते हैं वह सचमुच सत्य है; और दूसरे यह कि उसका आग्रह रखने में अहिंसा का ही उपयोग हो सकता है।

प्रा० प्र०१, ३७५

४४. जो आदमी एक असत्य चीज म गता है और पीछे कहता है कि अहिंसा से कर लेगा, वह कर नहीं सकता है।

प्रा० प्र०१, ३७५

४५. यह सत्याग्रह में बिल्कुल सही है कि चाहे जान चली जाय, पैसा चला जाय, लेकिन हारना नहीं। उसमें सत्य आ जाता है। असत्य काम करने से उसमें असत्य आ जाता है।

प्रा० प्र०१, ४३२

४६. आजकल हथियारबंद या दूसरी तरह के किसी भी विरोध को सत्याग्रह का नाम देना एक फैशन-सा हो गया है। इससे समाज का नुकसान होता है। अगर आप लोग सत्याग्रह के पूरे अर्थ समझ लें और जान लें कि सत्य और प्रेम के रूप में जीता-जागता भगवान सत्याग्रह के साथ लगा रहता है, तो आपको यह मानने में कोई हिचकिचाहट नहीं होगी कि सत्याग्रह पर कोई विजय नहीं पा सकता।

प्रा० प्र०२, ८२-८३

२—असहयोग

१. असहयोग आत्मा की पीड़ा को प्रकट करने का अत्यंत शक्तिशाली साधन है और एक बुरे राज्य के जारी रहने का जोरदार विरोध है।

सर्वो०, १३५

२. बुराई से असहयोग करना भलाई से सहयोग करने कि बराबर ही मनुष्य का फर्ज है।

य० अ०, १९

३. हिंसा-वृत्ति से किया गया असहयोग अंत में दुनिया में बुराई को

घटाने के बजाय बढ़ाने का ही हथियार बन जाता है।

य० अ०, १६

४. असहयोग का बल तो कोई शिकायत न करके जेल जाने में है।

य० अ०, २६

५. अनर्थ के काम का कोई लाभ न उठावे, यही अहिंसक युद्ध का राजमार्ग है। इसी का नाम असहयोग है।

प्रा० प्र०१, १७८

३—सविनय कानून-भंग

१. लोग सविनय कानून भंग करने योग्य बनें, इसके पहले उन्हें उसके गंभीर रहस्य का ज्ञान चाहिए। जो कानूनों को रोज जानबूझकर भंग करते हों, वे अचानक सविनय कानून भंग को कैसे समझ सकते है!

आ० क०, ४०७

२. आज्ञा-भंग सविनय होने के लिए सर्वथा अहिंसा होनी चाहिए। क्योंकि उसके पीछे मूल सिद्धांत यह है कि कष्ट-सहन करने से, अर्थात प्रेम से, विरोधी को जीता जाय।

सर्वो०, १३५

३. जबतक यह विश्वास कायम है कि आदमी को अन्याय पूर्ण कानूनों को पालना चाहिए, तबतक उनकी दासता कायम रहेगी।

हिं० स्व०, ८१

४. सामूहिक या व्यक्तिगत सविनय कानून-भंग रचनात्मक कोशिश का सहायक और सशस्त्र विद्रोह का विरोधी है। सविनय कानून-भंग के लिए ट्रेनिंग भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी कि सशस्त्र विद्रोह के लिए है।

रच० का०, ५

५. सविनय कानून-भंग को स्वातंत्र्य-जैसे आम काम के लिए प्रयोग में कभी लाया नहीं जा सकता।

रच० का०, २८

६. सविनय कानून-भंग लड़नेवालों के लिए एक प्रोत्साहन और

विरोधी के लिए एक चुनौती है।

रच० का०, २१

७. व्यक्तिगत सविनय भंग में हरएक आदमी को व्यक्तिगत ढंग से सविनय कानून-भंग करने का अधिकार रहता है। हरएक आदमी अपना नेता बन जाता है और अपनी जिम्मेदारी पर काम करता है। वही अपना सेनापति और वही अपना सिपाही होता है। वह सब-कुछ जान-बूझकर ईश्वर के हाथों में सौंप देता है।

म० डा० [illegible]

८. व्यक्तिगत सविनय भंग करने के लिए भले ही दो-तीन आदमी ही निकलें, एक आदमी भी निकले, तो वह भी अग्नि को प्रज्ज्वलित रखने के लिए काफी है।

म० डा० ३, ३१३

९. एक आदमी की सरदारी में सौ आदमी इकट्ठे होकर भी व्यक्तिगत सविनय भंग कर सकते हैं। व्यक्तिगत सविनय भंग में किसी भी मनुष्य की शक्ति या उत्साह को रोका नहीं जा सकता।

म० डा० ३, ३१५

१०. व्यक्तिगत सविनय भंग की खूबी तो इसमें है कि उसमें हार जैसी चीज़ ही नहीं रहती। कोई भी दुनियावी ताकत कितनी ही बलवान क्यों न हो, वह व्यक्तिगत सविनय भंग करनेवाले को हरा नहीं सकती।

म० डा० ३, ३२०

११. सत्याग्रह में व्यक्तिगत सविनय भंग का शस्त्र अमोघ और अजेय है।

म० डा० ३, ३२१

४—बहिष्कार

१. सामाजिक बहिष्कार का उद्देश्य बहिष्कृत आदमी को चोट पहुंचाना हरगिज न होना चाहिए। सामाजिक बहिष्कार का अर्थ इतना ही है कि कसूरवार आदमी के साथ समाज पूरी तरह असहयोग करदे। न इससे ज्यादा कुछ किया जाय और न कम।

स्त्रि० स०, ५५

२. जो आदमी जानबूझकर समाज की परवाह नहीं करता, उसे कोई हक नहीं कि समाज उसकी सेवा करे ।

स्त्रि० स०, ५५

३. समाज का यह कर्तव्य है कि जो लोग समाज-बंधन तोड़ें, उनके साथ निर्दयता का बर्ताव न किया जाय । बहिष्कार आदि भी अहिंसक होने चाहिए ।

स्त्रि० स०, ५६

४. दुर्भाव अथवा द्वेष-भाव से मैं एक भी विदेशी वस्तु के बहिष्कार का समर्थन नहीं करूंगा ।

खा०, ५५

५—धरना

१. धरने में दबाव हरगिज न डालना चाहिए, बल्कि समझा-बुझाकर दिल बदलना चाहिए ।

स्त्रि० स० ४४

२. जहां कहीं स्त्रियों ने धरने का काम अपने हाथ में ले लिया है, वहां अगर पुरुष दखल देंगे, तो वे आंदोलन को नुक्सान पहुंचायंगे ।

स्त्रि० स०, ४८

३. जब एक नागरिक को राज्य के द्वारा सहायता न की जाय, तब धरना देना उसका वह कर्तव्य है, जिसे उसे पूरा करना चाहिए ।

ड्रिं० डू०, ६८

४. पुलिस का पहरा यदि धरना नहीं है तो क्या है ?

ड्रिं० डू०, ६८

५. जब एक धरना देनेवाला अपने किसी निर्बल भाई को मदिरा-पान की बुराई के विरुद्ध चेतावनी देता है, तो वह लज्जा अर्थात प्रेम का प्रभाव काम में लाता है ।

ड्रिं० डू०, ६९

६. धरना शराब के व्यापारी या शराबी के विरुद्ध बिना हिंसा या दुर्भावना के प्रयोग में लाया जाय, तो वह एक नैतिक कर्तव्य है ।

ड्रिं० डू०, ७०

७. धरना काल के समान प्राचीन है। इसको कानूनी रूप देने की आवश्यकता नहीं है।

ह्रिं० ड्र०, ७३

८. धरना एक सुधारक का ऐसा अधिकार है, जिसे वह अपने प्रयोजन को छोड़े बिना नहीं छोड़ सकता।

ड्रिं० ड्र०, ७३

९. शांति-पूर्ण धरना एक ऐसे आचरण के विरुद्ध कल्याणकारी चेतावनी है, जिसे एक सुधारक बुरा समझता है। जब यह इससे आगे चला जाता है और हिंसापूर्ण बन जाता है, तब कानून बीच में आ जाता है और आदमी की मानव-स्वाधीनता में विघ्न डालने से रोकता है।

ड्रिं० ड्र० ७४

१०. शिक्षात्मक पद्धति का धरना स्थायी बन गया है, क्योंकि उसने अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी है।

ड्रिं० ड्र०, ७४

६—उपवास

१. मैला मन उपवास से शुद्ध नहीं होता।

आ० क०, २८

२. आसपास महामारी की हवा हो, तब पेट जितना हलका रहे उतना ही अच्छा है।

आ० क०, २५४

३. उपवास आदि से मुझपर तो आरोग्य और विषय-नियमन की दृष्टि से बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। फिर भी मैं यह जानता हूं कि उपवास आदि से सबपर इस तरह का प्रभाव पड़ेगा ही, ऐसा कोई अनिवार्य नियम नहीं है।

आ० क०, २११

४. संयमी के मार्ग में उपवास आदि एक साधन के रूप में है, किंतु ये ही सबकुछ नहीं है। यदि शरीर के उपवास के साथ मन का उपवास न हो तो उसकी परिणति दंभ में होती है और वह हानिकारक सिद्ध

होती है ।

आ० क०, २९१

५. लंबे उपवास करनेवाले को खोई हुई ताकत झट प्राप्त करने या बहुत खाने का लोभ कभी न करना चाहिए ।

आ० क०, ३०२

६. सच्चा उपवास शरीर, मन और आत्मा की शुद्धि करता है । वह इंद्रियों का दमन करता है और उस हद तक आत्मा को मुक्त करता है ।

स० ई०, ४८

७. सच्चा उपवास वह है, जिसके साथ शुद्ध विचारों को ग्रहण करने की तैयारी हो, और शैतान के सारे प्रलोभनों का विरोध करने का संकल्प हो ।

स० ई०, ४९

८. संपूर्ण उपवास पूरी तरह और अक्षरशः आत्म-त्याग है । वह सच्ची-से-सच्ची प्रार्थना है ।

स० ई०, ५०

९. अन्न और जल का भी त्याग केवल समर्पण का प्रारंभ है, अल्पतम भाग है ।

स० ई०, ५०

१०. आमरण अनशन सत्याग्रह के कार्य-क्रम का अभिन्न अंग है और खास परिस्थितियों में वही सत्याग्रह के शस्त्रागार का सबसे बड़ा और रामबाण शस्त्र है । लेकिन अच्छी तरह तालीम पाये बिना हर कोई ऐसा अनशन करने के योग्य नहीं होता ।

सर्वो०, १०२

११. उपवास से प्रार्थना की वृत्ति तेजी से जाग्रत होती है; अर्थात उपवास एक आध्यात्मिक कर्म है और इसलिए उसका रुख ईश्वर के प्रति होता है ।

सर्वो०, १०३

१२. जबतक अपने पक्ष के बिल्कुल स्पष्ट औचित्य के बारे में अत्यंत जबरदस्त आधार न हो, तबतक उपवास करना गलत है ।

य० अ०, २६

१३. जिस अवस्था में खाना और जीना निर्लज्जतापूर्ण हो जाता है, उसी अवस्था में सत्याग्रही उपवास करता है, और तभी वह उचित माना जाता है ।

य० श्र०, ३१

१४. उपवास के बिना प्रार्थना नहीं होती और जो उपवास प्रार्थना का पूर्ण भाग नहीं है, वह केवल काया-क्लेश है, वह किसीका हित नहीं करता ।

ग्ली० बा० फी०, ६

१५. ठीक परिस्थितियों में उपवास करना श्रेष्ठता के समान अपील है ।

फ़ा० पै०, २३

१७. जो आदमी फल की आशा में उपवास करता है, वह प्रायः असफल होता है । और यदि वह प्रकट रूप से असफल नही भी होता, तो वह उस आतरिक आनंद को खो देता है, जो कि सच्चे उपवास में होता है ।

फ़ा० पै०, २४

१७. बार-बार होने वाले उपवास यांत्रिक क्रिया-जैसे हो जाते हैं । उनके पीछे पूर्ण विचार नहीं होता । इसलिए हर उपवास के चारों तरफ जाग्रति की जरूरत रहती है ।

स० ई०, १४

१८. उपवास का अर्थ है अपनी या दूसरे की आत्मा की शुद्धि के लिए किया हुआ सभी इंद्रियों का दमन । अकेला भोजन छोड़ना उपवास नहीं माना जाता और बीमारी के इलाज के लिए किया हुआ आहार-त्याग तो उपवास में गिना ही नहीं जा सकता ।

स० ई०, १४

१९. अनशन का अधिकार सभी को नहीं होता और अधिकार के बिना जो करते हैं, उनका तप अशास्त्रीय, अर्थात आसुरी है, इसलिए उनके पल्ले निरे कष्ट के सिवा और कुछ पड़ता ही नहीं ।

म० डा०२, २१

२०. तुच्छ हेतु से जो उपवास किया जाता है उससे किसी का भी भला नहीं होता। उसका उपवास करनेवाले के शरीर को कष्ट होने के सिवा और कोई असर नहीं होता।

म० डा०३, १७

२१. अनशन का हेतु केवल निर्णय बदलवाना नहीं, आपको उसे बदलवाने के प्रयत्न में से जो जागृति और शुद्धि पैदा होनी चाहिए, उसे पैदा करना है।

म० डा०२, ५१

२२. शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्म-पालन की तरह है।

अं० झां०, ८३

२३. नपी-तुली खुराक और उपवास की उपयोगिता भी सीमित है। उनसे सदैव इच्छित फल प्राप्त नही हाता है।

गां० छ०, १३२

२४. उपवास से लगाकर जितने संयमों की कल्पना की जा सकती हो, वे सब ईश्वर की कृपा के बिना बेकार हैं।

स० ई०, ४४

२५. उपवास में भी नम्रता और सद्भाव है। लोग अपने खुद के प्रति अधीर हों, दूसरे के प्रति नहीं।

म० डा०२, २२६

२६. उपवास यदि ईश्वर-प्रेरित हो, तो वह लाखों आदमियों के हृदय हिला देगा। ऐसा नहीं होगा तो वह बेकार हो जायगा।

म० डा०२, २४६

२७. उपवास एक खास तरह का उपाय है। जबतक भीतर से साफतौर पर आवाज न आये, तबतक किसी को उपवास न करना चाहिए। इसलिए अनुकरण करके तो उपवास हो ही नहीं सकता।

म० डा०२, २५४

२८. उपवास किसी को भी अपने अंतःकरण के विरुद्ध कुछ भी करने को मजबूर नहीं करता।

म० डा०२, २७५

२९. जीने के लिए खाना जितना जरूरी है, उतना ही उपवास भी जरूरी है। प्रार्थना का यह एक आवश्यक अंग है। हम जीवित रहकर जितनी सेवा करते हैं, उतनी ही मरकर भी कर सकते हैं। मगर उपवास करने का अधिकार थोड़ों को होता है।

म० डा०२, ३१३

३०. मनुष्य निराशा से भी उपवास करने का विचार करता है, यह तो स्पष्ट आत्मघात कहा जायगा।

म० डा०२, ३१३

३१. फाके का भी एक शास्त्र होता है। बगैर तरीके के फाका करने में धर्म नहीं होता। अगर कोई कहे कि—जबतक ईश्वर मेरे सामने नहीं आयगा, तबतक मैं भूखों मरूंगा—तो वह मर भले ही जाय, पर ईश्वर उसे नहीं दीखेगा।

प्रा० प्र०१, १७१

३२. ऐसा मौका भी आता है जब अहिंसा का पुजारी समाज के किसी अन्याय के सामने विरोध प्रकट करने के लिए उपवास करने पर मजबूर हो जाता है। वह ऐसा तभी करता है, जब अहिंसा के पुजारी की हैसियत से उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नहीं रह जाता।

प्रा० प्र०२, २८९

३३. उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरों की तलवार की जगह लेता है।

प्रा० प्र०२, २९०

खंड १० : शांति और सर्वोदय

१—युद्ध और शांति

१. एक भावी योद्धा के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना और निर्धनता से, बतौर अपने भाग्य के, संतुष्ट होना चाहिए।

हिं० स्व०, ८६

२. समस्त संसार में युद्ध के लिए शहरी आदमी ही जिम्मेदार हैं, न कि ग्रामीण।

ग्ली० बा० फ़ी०, १७

३. सेना का भार इतना कुचल देनेवाला और अनुत्पादक है कि वह देश के सारे धन का सफाया कर देता है।

खा०, १६७

४. युद्ध में फंसी हुई दुनिया शांति के अमृत की प्यासी है।

स्त्रि० स० ३५

५. निर्भीकताहीन किसी भी योद्धा की कल्पना नहीं की जा सकती।

फ़ा० पै०, १८

६. अणुबम ने उन श्रेष्ठतम भावनाओं को मार दिया है, जिन्होंने मानव-जाति को युगों से जीवित रखा है।

फ़ा० पै०, ८३

७. प्राचीन काल के योद्धाओं के युद्ध-नियम हितकर थे।

फ़ा० पै०, ८५

८. युद्ध-शास्त्र शुद्ध तथा स्पष्ट डिक्टेटरी की ओर ले जाता है।

फ़ा० पै०, ८६

९. हमारी सबकी शांति का सच्चा आधार तो अपने खुद के

ऊपर ही है।

बा० प०, प्रे० २६

१०. सर्वनाश का जो खतरा दुनिया के सिर पर झूल रहा है, उससे बचने का इसके सिवा दूसरा कोई मार्ग नहीं है कि अहिंसा की पद्धति को उसमें समाये हुए सारे भव्य अर्थों के साथ साहस पूर्वक और बिना किसी शर्त के स्वीकार कर लिया जाय।

मो० मा० ६२

११. अगर हथियारों के लिए आज की पागलभरी दौड़, स्पर्धा, जारी रही, तो निश्चित रूप से उसका परिणाम ऐसे मानव-संहार में आयगा, जैसा संसार के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ। अगर कोई विजेता बचा रहा तो जिस राष्ट्र की विजय होगी, उसके लिए वह विजय ही जीवित मृत्यु-जैसी बन जायगी।

मो० मा० ६२

१२. हथियारों का सच्चा त्याग तबतक संभव नहीं हो सकता जबतक दुनिया के राष्ट्र एक-दूसरे का शोषण बंद नहीं करते।

मो० मा०, ६३

१३. कोई-न-कोई दिन ऐसा जरूर आयगा, जब जगत शांति की खोज करता-करता भारत में आयगा और भारत तथा सारा एशिया समस्त संसार की ज्योति बनेगा।

बि० कौ० आ०, १३२

१४. शांति से जो काम होता है वह झगड़ा-फसाद करने या गुस्से से नहीं होता।

बि० कौ० आ०, १३२

१५. किसी भी धर्म का उद्धार करना हो, उसे ऊंचा उठाना हो, तो विश्वव्यापी प्रेम ही उसका एकमात्र मार्ग है।

बि० कौ० आ०, १५४

१६. अपवाद-स्वरूप परिस्थिति में एक अनिवार्य बुराई के रूप में युद्ध का आश्रय लेना पड़ता है।

म० डा० १ न०, ६

१७. जो योद्धा लोग बाकायदा लड़ते हैं, उसमें भी विनाश ही होता है, हाथ कुछ भी नहीं आता ।

प्रा० प्र०१, ३०

१८. बचाव के लिए तलवार पकड़ने की बात की जाती है, पर आजतक मुझे दुनिया में एक भी आदमी ऐसा नहीं मिला है, जिसने बचाव से आगे बढ़कर प्रहार न किया हो। बचाव के पेट में ही वह पड़ा है ।

प्रा० प्र०१, १५६

१९. शांति बाहर की किसी चीज से, जैसे दौलत से, महलों से, नहीं मिलती । शांति अपने अंदर की चीज है । सब धर्मों ने इस सचाई का ऐलान किया है कि जब आदमी को इस तरह की शांति मिल जाती है तो उसकी आंखों, उसके शब्दों और उसके कामों, सबसे वह शांति टपकने लगती है । इस तरह का आदमी झोंपड़ी में रहकर भी संतुष्ट रहता है और कल की चिंता नहीं करता ।

प्रा० प्र०२, २६१

२०. सिपाही तो वह है, जो सूखी रोटी और नमक मिलता है, उसको खाकर पेट भर लेता है और अपने धर्म का पालन करता है।

प्रा० प्र०१, ३६६-६७

२१. भले आदमियों पर दुनिया चलती है, न कि हथियार रखनेवालों पर ।

प्रा० प्र०२ १६

२२. पवित्रता सबसे बड़ा हथियार होता है ।

प्रा० प्र०२, ३१

२—विश्व-बंधुत्व

१. जिस क्षण हम मनुष्य-मनुष्य के बीच सच्ची और सजीव समानता फिर से स्थापित कर लेंगे, उसी क्षण मनुष्य और सारी सृष्टि के बीच समानता स्थापित कर सकेंगे ।

सर्वो०, ७९

२. शुद्ध होने पर व्यक्ति परिवार के लिए, परिवार गांव के लिए,

गांव जिले के लिए, जिला प्रांत के लिए, प्रांत राष्ट्र के लिए और राष्ट्र सारे संसार के लिए अपने को कुर्बान करता है।

सर्वो०, ९३

३. जिंदा रहने का अधिकार भी हमें तभी मिलता है, जब हम संसार की नागरिकता का कर्तव्य-पालन करते हैं।

ऐ० बा०, १०६

४. एक अहिंसक आदमी के लिए समस्त विश्व एक कुटुंब है।

फ़ा० पै०, ३८

५. जबतक जीव-मात्र के साथ एकता महसूस न हो, तबतक प्रार्थना, उपवास, जप-तप सब थोथी बातें हैं।

म० डा०१, ३४०

६. सजातीय और विजातीय की भावनाएं हमारे मन की तरंगें हैं। वास्तव में हम सब एक परिवार ही हैं।

आ० क०, २३१

७. कूप-मंडूक बनना छोड़ो तो हिंदुस्तान एक कुटुंब बन जाता है। अगर सब बंधन गायब हो जाते हैं तो सारा संसार एक कुटुंब बन जाता है। इन बंधनों को पार न करने का मतलब यह है कि हम उन सद्-भावनाओं की ओर से, जो मनुष्य को मनुष्य बनाती हैं, कठोर बन जाते हैं।

प्रा० प्र०२, ६१

३—सर्वोदय

१. अहिंसा का पुजारी अधिक-से-अधिक लोगों की अधिक-से-अधिक भलाई के उपयोगितावादी सूत्र को स्वीकार नहीं कर सकता। वह सब की अधिक-से-अधिक भलाई का प्रयत्न करेगा और इस आदर्श की सिद्धि के प्रयत्न में प्राण भी दे देगा।

स० ई०, १२८

२. स्थायी शांति की संभावना में विश्वास न रखना मानव-स्वभाव की ईश्वरोन्मुखता पर अविश्वास करना है।

स० ई०, १३३

३. वह देश सबसे ज्यादा समृद्ध है, जो अधिक-से-अधिक संख्या में सज्जन और सुखी मानवों का भरण-पोषण करता है ।

सर्वो०, ३७

४. वकालत का पेशा करने का यह मतलब नहीं होना चाहिए कि एक देहाती बढ़ई की मजदूरी से ज्यादा लिया जाय ।

सर्वो०, ४१

५. जीवन की आवश्यक वस्तुएं आपको भी वैसे ही उपलब्ध होनी चाहिए, जैसे राजाओं और धनिकों को ।

सर्वो०, ४१

६. अगर भारत को स्वाधीनता का ऐसा आदर्श जीवन व्यतीत करना है जिससे संसार ईर्ष्या करे, तो तमाम भंगियों, डाक्टरों, वकीलों, शिक्षकों, व्यापारियों और दूसरे लोगों को दिन-भर के प्रामाणिक काम की एक-सी मजदूरी मिलेगी ।

सर्वो०, ४१

७. मरी कल्पना की ग्रामीण अर्थ-रचना शोषण का सर्वथा त्याग करती है और शोषण हिंसा का सार है ।

सर्वो०, ४२

८. अहिंसक धंधा वह धंधा है, जो बुनियादी तौर पर हिंसा से मुक्त हो और जिसमें दूसरों का शोषण या ईर्ष्या न हो ।

सर्वो०, ४३

९. दस्तकारियों में शोषण और गुलामी की गुंजाइश नहीं होती ।

सर्वो०, ४४

१०. मैं भी समय और श्रम बचाना चाहता हूं, मगर मानव-समाज के एक अंश के लिए नहीं, बल्कि सबके लिए ।

सर्वो०, ४६

११. व्यक्ति का खयाल सबसे ज्यादा रखा जाना चाहिए और प्रामाणिक मानव-दया का विचार, न कि लोभ, उसका हेतु होना चाहिए । लोभ के स्थान पर प्रेम को बैठा दीजिए, फिर सब ठीक हो जायगा ।

सर्वो०, ५१

१२. देहात का पुनरुद्धार तभी संभव है, जब उनका आगे शोषण न किया जाय ।

सर्वो०, ५२

१३. सारे समाज की भलाई के लिए सामाजिक संयम को खुशी से मानना व्यक्ति और समाज, जिसका वह सदस्य है, दोनों को समृद्ध करता है ।

सर्वो०, ६५

१४. यह नहीं होना चाहिए कि मुट्ठी-भर अमीर लोग तो रत्न-जटित महलों में रहें और करोड़ों लोग वायु और प्रकाशहीन गंदे झोंपड़ों में रहें ।

सर्वो०, ८४

१५. आर्थिक समानता का यह अर्थ कभी नहीं मान लेना चाहिए कि सबके पास सांसारिक संपत्ति समान मात्रा में होगी । परंतु इसका मतलब यह जरूर है कि हरएक के पास रहने को उपयुक्त घर होगा, खाने को काफी और संतुलित आहार होगा और तन ढकने को पर्याप्त वस्त्र होगा ।

सर्वो०, १५६

१६. मैं धन का सूत्रीकरण कुछ के हाथों में नहीं, बल्कि सबके हाथों में चाहता हूं ।

हिं० स्व०, ८

१७. सबके कल्याण की सद्भावना में अपना कल्याण तो आ ही जाता है ।

बि० कौ० आ०, १०३

१८. धनवान लोग चाहे करोड़ों रुपये कमायें (बेशक ईमानदारी से ही), लेकिन उनका उद्देश्य सारा पैसा सबके कल्याण में समर्पित कर देने का होना चाहिए ।

मं० स० भा०, २८

खंड ११ : विविध

१—इच्छा-स्वातंत्र्य

१. हमें जो इच्छा-स्वातंत्र्य प्राप्त है, वह खचाखच भरे जहाज के मुसाफिरों के इच्छा-स्वातंत्र्य से भी कम है।

स० ई०, २४

२—ध्यान

१. यदि ध्यान की जरूरत हो तो वह अपने अंतर में से पाना होगा।

आ० क०, २०६

३—आशा-निराशा

१. आशा अमर है। उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती।

बा० आ०, १४

२. निराशा केवल अपनी कल्पना में बसती है।

बा० प० ज०, २३६

४—सहृदयता

१. सहृदयता की उपेक्षा करना यह भूल जाना है कि मनुष्य में भावना है।

खा०, १४०

५—निष्कपटता

१. मनुष्य कब आत्म-वंचना करता है और कब दंभी बनता है यह वह स्वयं नहीं जानता। आत्म-वंचना में दंभ से भी ज्यादा बड़ा खतरा है।

म० डा० २, ४६

२. बदमाश आदमी दुनिया को लंबे समय तक धोखा दे सकता है। दंभी मनुष्य तो उससे भी ज्यादा धोखा दे सकता है।

म० डा० ३, ३६

६—निःस्वार्थता

१. निःस्वार्थ व्यवहार से अत्यंत कारगर नतीजा निकलेगा।

सर्वो०, ३४

२. स्वार्थ का त्याग करने का अर्थ है अहंता, मेरापन छोड़ना।

ए० च०, १५

३. जिस मनुष्य की स्वार्थ-त्याग की इच्छा अपनी जाति से आगे नहीं बढ़ती, वह अपने-आपको और अपनी जाति को स्वार्थी बना देता है।

ए० च०, १७९

७—संतति-निरोध

१. मैं लोगों को नपुंसक या वंध्या बनाने का कानून लागू करना अमानुषिक मानता हूं। परंतु जीर्ण रोगोंवाले व्यक्तियों के बारे में वे रजामंद हों तो उन्हें वैसा करना वांछनीय ही होगा।

सर्वो० ७५

२. संतति-निरोध की आवश्यकता के बारे में दो रायें नहीं हो सकतीं। परंतु उसके लिए प्राचीन काल से ब्रह्मचर्य या संयम ही एकमात्र उपाय चला आया है।

स० ई०, ११९

८—तलाक

१. मैं स्वयं तो अगर तलाक के सिवा दूसरा कोई उपाय न हो तो उसे बिना किसी संकोच के स्वीकार कर लूंगा, मगर अपनी नैतिक उन्नति में बाधा नहीं पड़ने दूंगा, बशर्ते कि मैं केवल नैतिक कारणों से ही संयम रखना चाहूं।

सर्वो०, ७४

२. अगर पुरुष को विवाह-विच्छेद का अधिकार हो तो स्त्री को भी होना चाहिए। लेकिन सामान्यतः मैं इस प्रथा का विरोधी हूं। प्रेम की गांठ अविभाज्य होनी चाहिए।

बा० प० प्रे०, ३७

९—दहेज

१. जो युवक शादी के लिए दहेज की शर्त रखता है, वह अपनी तालीम को और अपने देश को बदनाम करता है।

स्त्रि० स०, ६६

२. यह हमारी बदकिस्मती है कि किसी लड़की से शादी करने की कीमत ऐंठने की नीचता को निश्चित अयोग्यता नहीं समझा जाता।

स्त्रि० स०, ७०

३. विवाह, रुपये के खातिर मां-बाप का किया हुआ सौदा नहीं होना चाहिए।

स्त्रि० स०, ७०

१०—परदा

१. परदा वहम ही नहीं है, उसमें मुझे पाप की बू आती है।

बा० प० ज०, १०२

२. परदे की जो मूल भावना है, वह संयम की है। यह संयम-रूपी परदा ही सच्चा परदा है।

ए० च०, ११७

३. इस जमाने में बाहरी परदा किसी भी काम का नहीं, दिल में परदा रखो, लाज-मर्यादा रखो और मन को संयत रखो, यही इस परदे का मतलब है।

बि० कौ० आ०, ३७६

११—विधवा और वैधव्य

१. सच्ची हिंदू विधवा एक रत्न होती है। वह हिंदू धर्म की मानव-समाज को एक देन है।

स्त्रि० स०, ६२

२. उस ब्रह्मचर्य से कोई लाभ-पुण्य नहीं होता, जो ऊपर से लादा जाता है। उससे तो अक्सर गुप्त पाप होता है और जिस समाज में इस तरह का पाप होता है, उसका सदाचार नष्ट हो जाता है।

स्त्रि० स० ६६

४. स्वेच्छापूर्वक विधवा रहना हिंदू धर्म की अमूल्य देन है, जबरन

विधवा रखना पाप है ।

स्त्रि० स०, ६६

१२—गुरु

१. गुरु-पद संपूर्ण ज्ञानी को ही दिया जा सकता है ।

आ० क०, ७१

२. अच्छी बात सीखने में हजारों क्या, लाखों गुरु हम क्यों न बनायं ? और एक छोटा बच्चा हो तो उससे भी सीखें । अच्छी बात किसी से सीखने में शर्म काहे की !

प० च०, १४

१३—प्रांतीयता

१. सब प्रांतों के लोग भारत में हैं और भारत सब का है । शर्त एक ही है कि कोई दूसरे प्रांतों में जाकर इसलिए नहीं बस सकता कि उसका शोषण करे, उसपर शासन करे या उसके हितों को किसी प्रकार हानि पहुंचाये ।

सर्वो०, ६०

२. जाति और प्रांत की दोहरी दीवार तो टूटनी ही चाहिए ।

स्त्रि० स०, ७२

३. मेरी कल्पना के सूबे की हद सारे हिंदुस्तान की हदों तक फैली हुई होगी, ताकि अंत में उसकी हद सारे विश्व की हदों तक फैल जाय, वरना वह खत्म हो जायगा ।

मे० स० भा०, २८८

१४—पंच और पंचायत

१. पंच भी परमेश्वर है ।

आ० क०, १८९

२. अगर पंचायत का काम नहीं किया तो मैं कहूंगा कि पंचायत का नाम किया । आपकी पंचायत सच्चे माने में पंचायत नहीं है । पहले हिंदुस्तान में सच्ची पंचायत थी ।

प्रा० प्र०२, २४४

१५—राम-राज्य

१. रा. .. । में राजा और रंक दोनों के अधिकारों की समान रूप से रक्षा की जायगी।

सर्वो०, १११

२. रामराज्य अवश्य काल्पनिक है, परंतु वैसा ही कुछ-न-कुछ तो पहले था ही, यह भी हम सिद्ध कर सकते हैं। वैसे असत्य और दरिद्रता का पूरा-पूरा लोप बिल्कुल तो न पहले किसी समय हुआ और न भविष्य में कभी होना संभव है।

बा० प० प्रे०, २३३

१६—उद्योगवाद

१. दरिद्रता का नाश होना ही चाहिए, परंतु औद्योगीकरण इसका सही इलाज नहीं है।

सर्वो०, ४८

२. बड़े पैमाने पर माल तैयार करने का पागलपन ही आज के विश्व-संकट के लिए जिम्मेदार है।

सर्वो०, ५३

३. मुझे विशेषाधिकार और एकाधिकार से घृणा है। मेरे लिए वह चीज निषिद्ध है, जिसमें सबका हिस्सा न हो।

सर्वो०, ५४

४. एक कारखाना कुछ सौ लोगों को काम देता है और हजारों को बेकार बनाता है।

खा०, ३१

५. प्रत्येक देश को अपने उद्योगों की रक्षा करने का अधिकार है और वह उसका धर्म है।

बा० प० प्रे०, १३०

१७—कर

१. समस्त करों को स्वस्थ होने के लिए कर-दाताओं के पास आवश्यक सेवाओं के दस गुने रूप में वापस आना चाहिए।

हिं० इ०, ३३

२. मादक पदार्थों के कर जनता से उनके अपने नैतिक, मानसिक तथा शारीरिक भ्रष्टाचार के लिए रुपया दिलवाते हैं ।

हिं० इं०, ३३

३. यदि प्रजा महसूल देती है तो वह इसलिए नहीं कि राजा का पेट भरना है; बल्कि इसलिए कि उसके बिना राजतंत्र चल नहीं सकता ।

प्रा० प्र०१, २०४

१८—नियंत्रण (कंट्रोल)

१. कंट्रोल रखना गुनाह है । कंट्रोल का तरीका लड़ाई के दिनों में अच्छा रहा होगा । एक फौजी देश के लिए वह आज भी अच्छा हो सकता है । मगर हिंदुस्तान के लिए वह नुकसानदेह है ।

प्रा० प्र०२, ८०-८१

२. जो अंकुश से बरी हो जाते हैं वे अपने पर अंकुश रखकर दूसरों को खुश करें ।

प्रा० प्र०२, १७३

३. अंकुश उठाने से अगर लोग नफा कमाने में सफल हो सकें तो अंकुश उठाने का हेतु निष्फल हो जायगा ।

प्रा० प्र०२, १८४-८५

४. ऊपर से लादा हुआ अंकुश हमेशा बुरा होता है ।

प्रा० प्र०२, १८३

१९—आवश्यकताएं

१. जीवन की आवश्यकताओं को पाने का हरएक आदमी को समान अधिकार है ।

मे० स० भा०, ६२

२. बगैर जरूरत के हाजत बढ़ाना पाप-सा लगता है ।

बा० आ०, २६६

२०—शोषण

१. एक राष्ट्र का दूसरे के द्वारा शोषण हमेशा जारी नहीं रह सकता ।

खा०, २५

२. शोषण हिंसा का सार है।

फ्रा० पी०, १०७

२१—रोग और रोगी

१. हर रोग कुदरत के किसी अज्ञात कानून-भंग का ही परिणाम है। कुदरत के कानूनों को जानने की कोशिश करें और उनपर चलने की शक्ति के लिए प्रार्थना करें। इसलिए रोग के समय हृदय से प्रार्थना करना काम भी है और दवा भी है।

बा० प० मी०, ५९

२. तमाम शारीरिक रोगों का आधार हमारी मानसिक स्थिति है।

बि० कौ० आ०, ३९-४०

३. बीमारों की सेवा करने-जैसा उत्तम मार्ग और क्या हो सकता है! उसमें धर्म का बहुत बड़ी हद तक समावेश हो जाता है।

गां० सा०, ९०

२२—वेश्या-वृत्ति

१. मुझे यह मंजूर है कि पुरुष-जाति का नाश हो जाय, मगर यह मंजूर नहीं कि भगवान की पवित्रतम् सृष्टि को अपनी वासना का शिकार बनाकर हम पशुओं से भी गये-बीते बन जायं।

स्त्रि० स०, १०६

२. चोर संपत्ति को चोरी करते हैं, ये वेश्याएं सदाचार को हरती हैं।

स्त्रि० स०, ११२

संदर्भ ग्रंथ-सूची

इस संग्रह के विचार जिन रचनाओं से लिये गए हैं, उनका उल्लेख यथास्थान संकेत में किया गया है। उन संकेत-ग्रंथों के पूरे नाम निम्न हैं :

आत्म-कथा	आ० क०
यरवदा के अनुभव	य० अ०
यरवदा-मंदिर से	य० मं०
शाकाहार का नैतिक आधार	शा० नै० आ०
सत्य ही ईश्वर है	स० ई०
सर्वोदय	सर्वो०
दी ग्लीनिंग्स एट बापूज़ फ़ीट	ग्ली० बा० फ़ी०
प्रार्थना-प्रवचन, भाग १	प्रा० प्र०१
प्रार्थना-प्रवचन, भाग २	प्रा० प्र०२
रिमूवल ऑफ अनटचेबिलिटी	रि० अ०
रचनात्मक कार्यक्रम	रच० का०
ड्रिंक्स, ड्रग्स, गैंबलिंग	ड्रि० ड्र०
फ़ार पैसिफिस्ट	फ़ा० पै०
हिंद-स्वराज	हिं० स्व०
खादी	खा०
स्त्रियों की समस्याएं	स्त्रि० स०
ऐसे थे बापू	ऐ० बा०
बापू के पत्र बजाज-परिवार के नाम	बा० प० ब०
मेरे सपनों का भारत	मे० स० भा०
गांधी-वाणी	गां० वा०
बापू के आशीर्वाद	बा० आ०
बापू के पत्र प्रेमाबहन के नाम	बा० प० प्रे०
संरक्षकता के सिद्धान्त	सं० सि०

गांधीजी की छत्रछाया में	गां० छ०
गांधी-नास्तिक-संवाद	गां० ना० सं०
कुछ पुरानी चिट्ठियां	कु० पु० चि०
एकला चलो रे	ए० च०
बापू के पत्र मीरा के नाम	बा० प० मी०
अंतिम झांकियां	अं० झां०
बापू के पत्र मणिबहन पटेल के नाम	बा० प० म०
बापू के पत्र सरदार वल्लभभाई पटेल के नाम	बा० प० स०
महादेवभाई की डायरी, भाग १	म० डा०१
महादेवभाई की डायरी, भाग २	म० डा०२
महादेवभाई की डायरी, भाग ३	म० डा०३
महादेवभाई की डायरी, भाग१ नई	म० डा० १न०
बिहार की कौमी आग में	बि० कौ० आ०
सत्याग्रह-आश्रम का इतिहास	स० आ० इ०
हमारे गांव का पुनर्निर्माण	गां० का पुन०
विद्यार्थियों से	वि०
मोहन-माला	मो० मा०
मेरा समाजवाद	मे० स०
साम्यवाद और समाजवाद	सा० स०
शरीर-श्रम	श० श्र०
हड़तालें	ह०
सिलेक्शंस फ्रॉम गांधी	सि० गां०
गांधी की साधना	गां० सा०
मंगल-प्रभात	मं० प्र०
दिल्ली-डायरी	दि० डा०
टू वर्ड्स न्यू होराइजन	टू० न्यू० हो०
विद गांधी इन सीलोन	वि० गां० सी०
हरिजन-सेवक	ह० से०
हरिजन	हरि०